श्रीः

श्रीकरपात्रस्वामि-विरचिता

श्रीविद्या-वरिवस्या

सम्पादकः

दत्तात्रेयानन्दनाथः

(सीताराम-कविराजः)

श्रीविद्यासाधनापीठम्

वाराणसी

"श्री"

श्रीविद्या-वरिवस्या का संशोधित परिवर्धित नवीन संस्करण, पूजापद्धति का हिन्दी रूपान्तर भी

श्रीविद्यासाधना के अन्तर्गत श्रीयन्त्र अर्चन पद्धति के समग्र विधिविधानों का इसमें समावेश है।

आन्हिक प्रकरण में प्रातः स्मरण से तान्त्रिकी सन्ध्यापर्यन्तविधि का अधिकारी भेद से वर्णन है।

सपर्याप्रकरण में यागमण्डप प्रवेश से भूतशुद्धि, मातृकादि विभिन्न न्यास, पात्रासादन, इष्ट देवता का पूजन, आवरणार्चन, स्तुति, जप, होम, उद्वासन पर्यन्त शास्त्रानुमोदित परम्परा प्राप्त विधानों का उल्लेख है, इनका पृथक् रूप में भी हिन्दी भाषा में सार लिखा गया है। परिशिष्ट में बालात्रिपुरासुन्दरी वरिवस्या, आद्य शङ्कराचार्य कृत मानसपूजा स्तोत्र, महागणपति मन्त्र जप विधि, योग पीठन्यास, खड्ग-माला, वाञ्छाकल्पलता, संक्षेपार्चन, साधक की विभिन्न अवस्था में इति कर्तव्यता एवं साधना में अन्य अपेक्षित नियम और क्रियाओं का भी समावेश है।

पूर्व प्रकाशन की अशुद्धियों का संशोधन करके वर्तमान प्रकाशन का सावधानता से मुद्रण हुआ है। हमारी यही भावना है कि पीठ द्वारा प्रकाशित साहित्य दीक्षित साधकों के ही हस्तगत हो, अतः इसका व्ययमात्र मूल्य ही निर्धारित किया गया है।

॥ श्रीः ॥

श्रीकरपात्रस्वामि-विरचिता

श्रीविद्या-वरिवस्या

बालात्रिपुरसुन्दरीपूजाविधानैः

हिन्दीभाषा-पूजासारैश्च

समन्विता

सम्पादकः

दत्तात्रेयानन्दनाथः

(सीताराम कविराजः)

श्रीविद्यासाधनापीठम्

वाराणसी

प्रकाशकः
श्रीविद्यासाधनापीठम्
काशी मुमुक्षु-भवन
असी, वाराणसी (यू० पी०) २२१००४

पुस्तकप्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा विद्याभवन
पो० ब० नं ११६९
चौक, वाराणसी (यू० पी०)

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी (यू० पी०)

संशोधितं एवं परिवर्धितं
द्वितीय-संस्करणं ११००
महाशिवरात्रि
वि० सं० २०४८
मूल्यं ४०-०० चत्वारिंशत् रूप्यकाणि

मुद्रक
तारा प्रिंटिंग वर्क्स
वाराणसी

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापां ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥
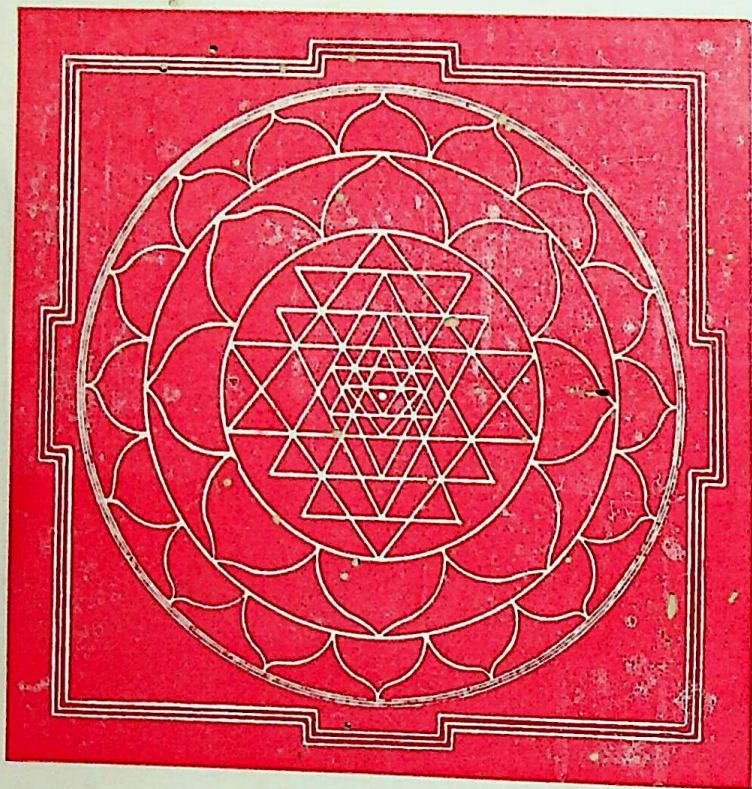
श्रीयन्त्रम्

॥ श्रीः ॥

भूमिका

श्रीविद्या-वरिवस्या ब्रह्मलीन स्वामी श्रीहरिहरानन्द सरस्वती दीक्षा-नाम (षोडशानन्दनाथ) श्रीकरपात्रीजी महाराज द्वारा अपने ही ग्रन्थ—श्रीविद्यारत्नाकर का संक्षिप्त रूप है, इसे आवश्यक टिप्पणीयों के समेत पुनः कुछ संशोधित परिवर्धित करके समादरणीय पं० श्रीसीताराम कविराज (दत्तात्रेयानन्दनाथ) ने सम्पादित कर प्रकाशित किया। पुनः इस में पूजा विधि समझाते हुए परिशिष्ट में शास्त्रान्तर से श्रीबाला-वरिवस्या भी जोड़ कर सामान्य उपासकों को दृष्टि में रख और अधिक उपयोगी बनाने पर बल दिया हैं। प्रस्तुत संस्करण श्रीविद्योपासना के प्रचार प्रसार, इस के द्वारा जगत्कल्याण में बहुत उपकारक होगा।

श्रीविद्या क्रम अत्यन्त गूढ़ और अत्यन्त सरल दोनों है। गूढ़ इस अर्थ में है कि विना अच्छे गुरु की दीक्षा और उसका उपदेश प्राप्त किये यह बोधगम्य नहीं, केवल शुष्क कर्मकाण्ड मात्र रह जाता है। और सहज इस अर्थ में इस उपासना का अभ्यास होने पर धीरे-धीरे साधक सहज निर्मत्सर, निर्वैर और आनन्द को प्राप्त कर लेता है। इसी जीवन में सहज सुख अनुभव करने लगती है। जब उसका मन्त्र चैतन्य हो जाता है और श्वास प्रश्वास के नार स्पन्द के परिस्फुरण से मिल जाते हैं।

लोगों के मन में, यहाँ तक कि बड़े-बड़े तन्त्र शास्त्र के विद्वानों के

मन में बाह्य पूजा की सार्थकता के प्रति सन्देह है, पर सृष्टि तो जितनी सूक्ष्म है, उतनी स्थूल है। षड्विंशती तत्त्व में पञ्च महाभूत पञ्च-ज्ञानेन्द्रिय, पञ्च कर्मेन्द्रिय, पञ्च तन्मात्रा भी है, प्रकृति अहंकार बुद्धि मन भी है। माया, कला, अविद्या, राग, काल, नियती भी है और शिव शक्ति सदाशिव ईश्वर शुद्ध विद्या भी है।

अतः समष्टि को ध्यान में रखकर, अधिकारी भेद को ध्यान में रखकर बाह्य पूजा से प्रारम्भ सर्वथा वांछनीय है, उत्तरोत्तर सूक्ष्मतर भूमिका में प्रवेश होता है तो साधना सायास नहीं होती। जगज्जननी की उपासना में क्लेश हो यह श्रीमाता को कैसे वांछनीय होगा। अपने दैनिक जीवन क्रम को! कैसे प्रत्यूषकाल से लेकर प्रत्यूषकाल पर्यन्त व्यक्ति बनाये कि सब कर्म, सब व्यापार, सब ज्ञान, सब इच्छाएँ सर्वमयी देवता को अर्पित हो जाँय, इसी के लिए श्रीविद्या की उपासना का मुख्यतः-विधान है। सीमित कामनाओं की पूर्ति भी होगी, पर उससे बन्धन ही बढ़ेगा। भाव तो पूजा का यही सर्वश्रेष्ठ है कि यह पृथ्वी गन्ध रूप में, जल पाद्य रूप में, आकाश पुष्प रूप में, वायु धूप में, अग्नि दीप में और जीवन मात्र में सन्निविष्टचित्त अमृत नैवेद्य रूप में और सकल उपचार सम्भार, सकल दृश्यादृश्य जगत् मात्र की वासना ताम्बूल रूप में सर्वमयी-सर्वभूतेश्वरी, सर्वशक्तिमयी, सर्वानन्दमयी, सर्वचिन्मयी को अर्पित हो, इस अर्पण के अलावा भी कोई सुख है? क्या सभी सुख इस सुख के आगे तुच्छ नहीं हैं? क्योंकि समस्त ऐन्द्रिय सुखों का राग, समस्त ऐन्द्रिय सुखों की वासना, समस्त अन्तःकरण की इच्छा और ज्ञान-वृत्तियाँ, समस्त कर्मेन्द्रियों के व्यापार पूजा के सार्थक प्रयोग के द्वारा

उस परा देवता को भेंट कर दिया जाय। सब चिन्मय आनन्दमय और सब असत् होते हुए भी सत् सन्मय हो जांय।

इसी अभिलाषों के अभिलाष की पूर्ति ही श्रीविद्योपासना का परम अर्थ है। प्रातःकाल कुण्डलिनी को जगाने और सात चक्रों में अधिष्ठित देवताओं को दिन भर ली जाने वाली इक्कीस हजार छः सौ सांसे अर्पित की जाती है, ताकि श्वास प्रश्वास देवमय हो जाय। इसके बाद श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी का अन्तर्याग किया जाता है। समस्त चक्रों में अधिष्ठित शक्तियों के समेत श्रीदेवी के विविध रूपों का स्मरण किया जाता है। इसके बाद रश्मिमाला मन्त्र स्मरण और प्रातः स्तव पाठ प्रत्येक कर्म का अर्पण और भूमि वन्दन होता है।

अनन्तर स्नानादि करके श्रीगुरुत्रयी का अर्चन करके और गणपति का ध्यान जप करके पूजा प्रारम्भ होती है। श्रीगुरुत्रयी और गणपति के ध्यान के दो प्रयोजन हैं, श्रीगुरु परम्परा ही सेतु है, व्यष्टि एवं समष्टि के बीच पूर्ण साधना का स्मरण और उनके प्रति प्रणिपात के विना साधना अहंकार से ग्रस्त हो जाती है और विफल हो जाती है। इसी प्रकार गणपति का पूजन समष्टि चेतना के पुंज का पूजन है। सामान्य में अधिष्ठित विशेष का पूजन है। इसके बाद देह शुद्धि और भूत शुद्धि के द्वारा अपने स्थूल शरीर को सूक्ष्म में और सूक्ष्म शरीर को शिव शक्तिमय शाम्भव शरीर में रूपान्तरित करने की भावना की जाती है। इस शरीर में दिव्य प्राण का आधान हो जाने पर दूसरे न्यास होते हैं। न्यास वाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों होते हैं। और इनका प्रयोजन वर्णमातृकाओं की शक्तियों का अपने में आधान है, एक प्रकार से सृष्टि

के बीज का अपने में आधान है। समस्त चक्रों में अधिष्ठित समस्त शक्तियों का जागरण है, और निखिल विश्व की स्फुरता का अपने भीतर सम्भरण है। न्यास विधि के बाद ही पञ्चोपचार, षोडशोपचार और चतुःषष्ट्युपचार पूजन का विधान है। पूजन के बाद जिस मन्त्र में दीक्षित हो, उसका जप करना है। पुस्तक में पूजन के विस्तृत क्रम भी दिये गये हैं, संक्षिप्त भी। जैसी सुविधा हो और जैसा समय हो, वैसी पूजा करे। पूजा का शास्त्र विकल्प देता है, और विकल्प का निर्णय व्यक्ति के ऊपर इसलिए नहीं छोड़ता कि शास्त्र शिथिलता की अनुमति नहीं देता है, शास्त्र निरन्तर विधि की शुद्धता (अर्थात् व्यक्ति की भीतरी तैयारी से की गई साधना-पद्धति) पर बल देता है। यह विना अभ्यास की निरन्तरता से नहीं आती।

श्रीविद्या की साधना इसलिए मैंने पहले कहा सुगम और अगम् दोनों हैं। अभ्यास से वह सुगम हो जाती है, विना उसके कुछ सूना-सूना लगता है और प्रवेश करते समय बड़ी कठिन, बड़ी अगम और बड़ी बोझिल जान पड़ती है।

इस पुस्तक की माँग उत्तरोत्तर बढ़ रही है। यही प्रमाण है इस उपासना में लोग अधिकाधिक प्रवृत्त हो रहे हैं। दक्षिण भारत में वहाँ के शङ्कराचार्यों की निरन्तर प्रेरणा से श्रीविद्या का अधिक प्रचार है।

उत्तर भारत में ज्योतिष्पीठ के बहुत दिनों तक प्रसुप्त रहने के कारण इस विद्या का श्रीकाली क्रम तो था किन्तु श्रीविद्याक्रम लुप्तप्राय रहा। ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी करपात्रीजी के अनुग्रह से उत्तर भारत में काशी

में भास्करराय के बाद पुनः प्रवर्त्तन हुआ। आदरणीय कविराज जी उनके प्रिय शिष्य तो हैं, उनके उत्तम उत्तराधिकारी भी हैं। महाराजजी ने इन्हें इस श्रीविद्याक्रम के प्रचार-प्रसार के लिए प्रेरित किया, उसी का फल यह पुस्तक है।

मैं तो कोई अधिकारी हूँ नहीं, मेरा चंचु प्रवेश भी नहीं है। पर श्रीमाँ चाहती होंगी, तभी कुछ शब्द लिखने के लिए आदरणीय कविराजजी ने कहा। वस्तुतः इस क्रम को साधना द्वारा ही जाना जा सकता है। शब्द तो केवल उस साधना सोपान की ईंटे हैं। सोपान बनाना तो साधक का ही, और योग्य गुरु से दीक्षित साधक का काम है। यह उल्लेखनीय है कि इस साधना में आवश्यक है कि स्थूल पञ्चमकारों का उपयोग न करें, वे स्त्री जाति को आदर से देखें, किसी स्त्री का निरादर न करें, जीवन में सर्वभूत मैत्री स्थापित करते रहें। तभी साधना का साफल्य मिलेगा। इतिशम्।

माघ शु० १५/२०४८
वाराणसी

डॉ० विद्यानिवास मिश्र
कुलपति
सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय
वाराणसी

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना

श्रीशिवा-शिव-सामरस्यस्वरूपिणी श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी श्रीललिताम्बिका के परम अनुग्रह से यह **श्रीविद्यावरिवस्या** का संशोधित एवं परिवर्धित नवीन प्रकाशन श्रीविद्या साधकों के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है। साधकों के सौकर्य के लिए परिशिष्ट में कई अन्य अपेक्षित विषयों की भी योजना की गयी है। इससे इसका आकार वृहत् हो गया है।

वर्तमान में बालात्रिपुरसुन्दरी की उपासना के लिए कोई प्रामाणिक पूजापद्धति उपलब्ध नहीं है, अतः श्रीविद्यार्णव, ज्ञानार्णव, श्रीप्रपञ्चसार आदि तन्त्रग्रन्थों के अनुसार न्यासविधान यन्त्रार्चन आदि अपेक्षित विधि-विधानों का समावेश करके परिशिष्ट में **बालात्रिपुरसुन्दरीवरिवस्या** का संयोजन किया गया है। यह बाला-उपासकों के लिए अपेक्षित था।

बालात्रिपुरसुन्दरी-मानस-पूजास्तोत्रम्—यह श्रीमज्जगद्गुरु आद्य शङ्कराचार्य विरचित सिद्ध स्तोत्र है, इसके पाठ मात्र से पूजाफल प्राप्त होता है, एवं वाञ्छित कामनाओं की पूर्ति होती है। इसके पद्य बहुत ललित है अतः पूजा में विभिन्न उपचारों के समर्पण के समय उच्चारण करने से भावाभिव्यक्ति होती है।

योगपीठ-न्यास—यह उपासकों के लिए परमावश्यक है, यह बाला-त्रिपुरसुन्दरी आदि देवताओं के यन्त्रों में पीठपूजा में प्रयुक्त होता है।

इसका न्यास करने से देह भगवती के विराजमान होने का पीठ बन जाता है, अतः प्रारम्भ में साधकों के लिए इसका न्यास आवश्यक है।

महागणपति-मन्त्रजपविधि—प्रत्यूह निवारण के लिए गणपति आराधना परमावश्यक है, इससे अनेक प्रकार के विघ्नों का निवारण होता है। और मन्त्रजप विधि के साथ एकविंशति नामार्चन भी दिया गया है, इससे आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, और साधना निर्विघ्न होती रहती है।

त्रैपुर-सिद्धान्त—त्रिपुरोपासना के मौलिक दार्शनिक सिद्धान्तों का दीक्षा के समय उपदेश किया जाता है, उन सिद्धान्तों पर ही यह उपासना आधारित है। इससे मूल तत्वों का ज्ञान होने से लक्ष्य प्राप्ति में मार्ग भ्रम नहीं होता। एतदर्थ उन सिद्धान्तों का सार दे दिया है। इनका मनन करना चाहिए।

साधक धर्म—इस उपासना में जिन विशेष नियमों का पालन करना आवश्यक है उनका भी दिग्दर्शन कराया गया है।

मन्त्रस्नान ध्यानस्नान—रुग्णावस्था या आपत्काल में जल स्नान करने में असमर्थ होने पर उक्त स्नान करने पर पवित्र हो जाता है, और देव कार्य कर सकता है।

आतुर सूतक—आदि अवस्था में पूजा की इति कर्तव्यता का भी निर्देश किया गया है, जिससे दीक्षित साधक अपने नित्यकर्म का निर्वाह कर सके।

प्राणायाम और मातृका न्यास एवं इष्ट मन्त्र के ऋषि देवता छन्द षडङ्ग न्यास के विना पूजा-जप निष्फल होते हैं, इसके लिए प्रामाणिक वचन उद्धृत किये गये हैं, एवं न्यासों के फल का भी वर्णन किया है, साधना में आवश्यक कर्तव्य पालन से अनुभूतियों के द्वारा कर्म में तत्परता होती है।

पूजाविधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखने का भी प्रयास किया गया है। पात्रासादन और आवरणार्चन पूजा के दो विशेष अङ्ग है। शास्त्रीय विधि से पात्रों के प्रमाण और उनके स्थापन करने की प्रक्रिया का विधान सुगम रूप में वर्णन किया है, इसको यथावत् समझने पर पात्रासादन करने में कठिनाई नहीं होगी।

इस प्रकार श्रीचक्राधिष्ठात्री श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी की उपासना के लिए जो अपेक्षित था, वह यथा सम्भव सभी विधि विधानों का संयोजन करके इसे सर्वाङ्गपूर्ण पूजापद्धति बनाने का प्रयास किया है।

यह तो विदित ही है कि उत्तर भारत में श्रीविद्या उपासना का प्रचार-प्रसार अल्पतम रहा है, इसी कारण इसके जिज्ञासुओं को बड़ी कठिनाई होती रही, श्रीस्वामीजी महाराज ने लोककल्याण के लिए इसकी उपयोगिता को दृष्टिगत करके यथा विधि इस उपासना में प्रवृत्त होकर 'श्रीविद्यारत्नाकर' का प्रणयन किया। यह श्रीविद्या साधकों के जिज्ञासित साहित्य का पूरक ग्रन्थ माना गया, एवं अपने अतुलनीय गुणगणों से अतिशीघ्र ही लोकप्रिय बन गया। इसी कारण इसका प्रथम संस्करण स्वल्पावधि में ही समाप्ति हो गया। मेरे सावकाश न होने से द्वितीय संस्करण में विलम्ब हुआ, इसकी प्राप्ति के लिए साधकों की अधीरता को देखते हुए श्रीस्वामीजी महाराज का आदेश हुआ कि पूर्ण-

ग्रन्थ प्रकाशित करना सम्भव न हो तो केवल श्रीक्रम ही प्रकाशित हो। उनकी आज्ञा शिरोधार्य करके इस **श्रीविद्या-वरिवस्या** का शीघ्रता में सम्पादन प्रकाशन हुआ। इसके प्रकाशित होने पर भी श्रीविद्यारत्नाकर की उपादेयता कम नहीं हुई किन्तु अधिक हुई, अतः इसका संशोधित परिवर्धित द्वितीय संस्करण प्रकाशित किया गया। इधर श्रीविद्यावरिवस्या की प्राप्ति के लिए अनेक पत्र आने लगे, परन्तु मैंने इस पर विशेष ध्यान नहीं दिया क्योंकि 'श्रीविद्यारत्नाकर' से साधकों की आवश्यकता की पूर्ति हो रही थी, दूसरी बात यह थी कि श्रीविद्यावरिवस्या के प्रथम प्रकाशन में मुद्रण की अशुद्धियाँ अधिक हो गयी थी। और शीघ्रता के कारण कुछ अपेक्षित अंश भी छूट गये थे। पूजा विधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखने का भी आग्रह था। इस प्रकार इसको अधिक उपयोगी बनाना समय सापेक्ष था। परन्तु श्रीक्रम मात्र होने से पूजा के लिए यह अधिक उपयोगी सिद्ध हुई, इससे इसकी माँग अधिक हुई, इसका लाभ उठाने के लिए कोई व्यापारी इसे आफसेट में छपाकर बिक्री करने लगा। **'अर्थी दोषान्न पश्यति'** अर्थ ही जिनके प्रधान होता है वह दोषों को नहीं देखता है। अस्तु, श्रीस्वामीजी महाराज के आदेशानुसार निस्वार्थ भाव से श्रीविद्यासाधना के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी साहित्य प्रकाशन एवं श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन करना ही हमारा एकमात्र लक्ष्य है, अतः प्रथम प्रकाशन में रह गयी अशुद्धियों का संशोधन एवं अपेक्षित परिवर्धन करके पूर्वापेक्षा अधिक उपादेय बनाने का यथा सम्भव प्रयास किया गया है, अतः यह श्रीविद्या साधना जगत् में अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

इस प्रकार श्रीगुरुचरणों के अनुग्रह से ही यह सब कुछ सम्पन्न हुआ है उनके द्वारा प्राप्त ज्ञान का ही यत् किञ्चित् उल्लेख किया गया है, स्वयं का लेश मात्र भी कर्तृत्व नहीं है।

अतः 'यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम्' के भाव से उनके भावलभ्य चरणों में श्रद्धासुमनाञ्जलि समर्पित है।

डा० श्रीविद्यानिवासजी मिश्र 'कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय' के भावमय भूमिका लिखने से इस प्रकाशन की विशेष उपयोगिता सिद्ध हुई है, अतः उनके आध्यात्मिक उत्कर्ष की श्रीपराम्बा से प्रार्थना करते है। डा० रुद्रदेवजी त्रिपाठी वरिष्ठ श्रीविद्योपासक हैं, एवं ग्रन्थों के सम्पादन और प्रकाशन की कला में कुशल है, इन्होंने पूर्व प्रकाशित श्रीविद्यावरिवस्या के आद्योपान्त सूक्ष्म अवलोकन द्वारा आवश्यक संशोधन करके ग्रन्थ को अनाविल किया, एवं पूजा विधि का हिन्दी भाषा में सारांश लिखाने का भी श्रेय इन्हीं को है, अतः इनको शतशः साधुवाद से सभाजित करना अपना कर्तव्य समझता हूँ। इस प्रसंग में अपेक्षित सहयोग देने के लिये सरस्वतीभवन के पुस्तकाध्यक्ष डा० श्रीविजयनारायणजी मिश्र के लिये मंगल कामना करते हैं।

शेष में तारा मुद्रण यन्त्रालय के संचालक—श्री रमाशंकर एवं रवि प्रकाश पण्डया को साधुवाद देता हूँ, जिनके सौजन्य से इसका मुद्रण सम्पन्न हुआ। इति शम्

महाशिवरात्रि
वि० सं० २०४८
वाराणसी।

श्रीगुरुचरणसरोजरेणु
दत्तात्रेयानन्दनाथ
(सीताराम कविराज)

सम्पादकीयम्

[प्रथम-संस्करणस्य]

अयि श्रीपराम्बापादारविन्दपरिचर्यालालसमानसाः! सहृदय-साधकवरेण्याः! "श्रीविद्यावरिवस्या" नामकमिदं पुस्तकं श्रीसुन्दरीसेवन-तत्पराणां श्रीमतां सेवासु समुपाहृत्य पुनरप्यनिर्वचनीये कस्मिंश्चिदा-नन्दाम्बुधौ निमग्नं मे मनः। इतः पञ्चवर्षपूर्वं श्रीगुरुचरणैः प्रणीतं "श्रीविद्यारत्नाकर"—नामकं ग्रन्थरत्नं प्रकाशितमासीत्, तद् ग्रन्थरत्नं श्रीविद्योपासकधौरेयैर्महता समादरेण संगृहीतं, यतो हि स्वल्पीयसा-कालेनैव तत् सावशेषतामभजत्। इत आद्विवर्षं तत्प्राप्त्यर्थं बहूनि पत्राणि सोत्कण्ठं लिखितान्यनवरतं प्राप्यन्ते, किन्तु झटित्येव तस्य विस्तृतग्रन्थ-स्य प्रकाशनासम्भवात् श्रीगुरुचरणैः समादिष्टोऽहं तच्चरणानुग्रहेणैव श्रीविद्योपासकानां पुरतः "श्रीविद्यावरिवस्या"—नामकं श्रीक्रीमात्रं प्रापितवानस्मि।

पुस्तकेऽस्मिन् श्रीक्रमोपासकानां कृते प्रातःकालाद् रात्रिपर्यन्तं क्रिय-माणं कर्म एवमन्यानि समपेक्षितानि नैमित्तिकादीनि यानि कानिचित् कर्माणि तानि सङ्गृह्य प्रकाशितानि, तेन श्रीक्रमस्य साङ्गता समजनि। मन्ये तेन श्रीक्रमोपासकानां साङ्गोपाङ्गपूजाजपहोमादिक्रियाकलापेषु नान्यत् समपेक्षितं स्यात्। मुख्यानपरिहाय कृताकृतानपि यथावकाशं संयोज्य श्रीक्रमोपासकस्य सौकर्यार्थं सम्पूर्णं यथा स्यात्तथा सङ्कलय्य

सविस्तरं प्रस्फुटं प्रणीतवद्भिः श्रीगुरुचरणैः सुमहदुपकृतं श्रीविद्योपासक-समाजस्येति सुदृढं प्रतिभाति ।

"श्रीविद्यारत्नाकरस्य" सम्पादकीये प्राक्कथने श्रीविद्यासम्बद्धानां मन्त्रयन्त्रादीनां सम्बन्धे यथाज्ञानं किमपि प्रतिपादितम् । इदानीम् श्रीचक्रपूजाविषये कामपि सापेक्षतामनुभवामि ।

नृदेहप्राप्तेः परमो लाभ आत्मज्ञानम् । निखिलजीवानां परमकल्याणाय वात्सल्यभावापन्नानां श्रुतीनां परमतात्पर्यं 'जीवब्रह्मणोरभेदः' । विविधवादजालजटिलेषु न्यायमीमांसादिदर्शनशास्त्रेषु निपुणतमैः विद्वद्भिरपि मतान्तरनिरसनपूर्वकं तदेव साधितं श्रुतीनां परमतात्पर्यम् । तत् सिद्ध्यर्थं वेदान्तसिद्धान्तेनाष्टाङ्गयोगादिमार्गेण च यतमानानां सिद्धिङ्गतानां वा मध्ये कोऽप्यस्ति यो हि निर्व्याजं ब्रूयादधिगतं मया श्रुतीनां परमतात्पर्यम् ? अस्ति चेत् कोऽपि वेदान्तादिपरमदुरूहमार्गेण जन्मान्तरीयसंस्कारवशेन वा सिद्धिङ्गतः, स कथमन्यान् साधारणजनान् सारल्येनानुभावयितुं समर्थः । परञ्च मुक्तकण्ठमिदमनुघोषयतां नास्माकं हृदि तनीयानपि सङ्कोचो यत् सुमहदुपकृतं श्रीचक्रपूजापद्धतिमाविष्कृतवता परमकारुणिकेन भगवता परशुरामेण मन्दशेमुषीनां जनानाम् । यतो हि अमुना साधनपथेनाचिरेणैव कालेन श्रुतीनां परमतात्पर्यं स्वयमनुभवितुमन्यान् सारल्येनानुभावयितुञ्च शक्यते, नैवात्र कथमपि विचिकित्साऽवसरः ।

सर्वाषामेव साधनसरणीनां मूलं 'मनोनिग्रहः' । क्वचिदस्य प्राधान्येन व्यपदेशः क्वचिच्च गौणरूपेण । वस्तुतस्तु मनोनिग्रहमन्तरा संसाधिते वरीयसि साधनोपायेऽपि सिद्धिः सुदूरङ्गतैव प्रतीयते ।

"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः"

अतः श्रीसदाशिवप्रोक्तागमसिद्धान्तेन सम्पद्यमाना साधनसरणिस्तु साकल्येन मनोनिग्रहात्मिकेति निश्चप्रचं सिद्ध्यति बहुभिः प्रमाणकदम्बकैः ।

य आशु हृदयग्रन्थिं निर्जिहीर्षुः परात्मनः ।
विधिनोपचरेद् देवं तन्त्रोक्तेन च केशवम् ॥
(श्री० भा० ११-३-४७)

ततोऽपि पराम्बापरमनिर्बन्धेन गोप्यातिगोप्यतरायाः श्रीचक्रोपासन-पद्धतेस्तु सकलोऽपि कर्मकलापः मनोनिग्रहहेतुभूत इति नाविदितं तत्र श्रीविद्योपासनतत्पराणां साधकपुङ्गवानाम् ।

उपासनविधौ श्रीविद्यायास्त्रयो भेदाः सन्ति, स्थूलोपास्तिः, सूक्ष्मोपास्ति, परोपास्तिरिति । तत्र स्थूलोपास्तिः श्रीचक्रार्चनम्, तस्मिन् विधिविहितैर्विविधविधानैर्निबद्धं मनो निमेषमात्रमपि नावकाशं लभते, मनागपि नान्यत्र कुत्रापि गन्तुं शक्नोति दृढतरैर्बन्धनैः बद्धमत्तमातङ्गवत् । यथा हि पूजारम्भकाले सामान्यार्घविशेषार्घादिपात्राणां स्थापनावसरे प्रथमं मण्डलनिर्माणं तत आधारस्थापनं तस्मिन् वह्निमण्डलभावनं दशवह्निकलानाञ्च पूजनं, पुनः पात्रनिधानं पात्रे च सूर्यमण्डलभावनं, द्वादशसूर्यकलानां पूजनं, तदनन्तरं जलादिपूरणं, जले च सोममण्डलभावनं; षोडशसोमकलानाञ्च तत्र पूजनं, ततो मूलमन्त्रेण षडङ्गपूजनमेवं सामान्यार्घपात्रस्थापनविधिः, ततोऽप्यधिकं विशेषार्घपात्रस्थापनविधौ क्रियाकलापः । तदनन्तरमन्तर्यागस्ततो बहिर्यागश्चः, **"अन्तर्यागं विधायादौ बहिर्यागं समाचरेत्"** इति विधानेन स्वात्मस्थां स्वेष्टदेवतां प्रवहन्नासापुटेन स्वपूज्ये श्रीचक्रे संयोज्यावाहनादिविविधमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं चतुःषष्ट्युपचा-

र्चनम्, तत्तदुपचारभावनया वा पुष्पाक्षतनिक्षेपणं, ततो श्रीचक्रस्थानां नवावरणेषु शतशोऽप्यधिकशक्तीनां मध्ये प्रत्येकैकस्याः प्रत्येकैकेन मन्त्रेण पुष्पाक्षतनिक्षेपणेन पूजनं विशेषार्घ्यविन्दुना तर्पणम्, प्रत्येकैकावरणपूजनान्ते चक्रेश्वरीदेवतामुद्रा-सिद्धिपूजनं पुष्पाञ्जलिदानं, सामान्यार्घ्योदकेन पूजासमर्पणम्। एवंविधे परस्पराभिक्लृप्तकर्मकलापे कथं मनो मनागपि निस्सरेत्? यदि निस्सरेत्तदा विधीयमानकर्मणः प्रसङ्गच्युतिः, एवं तत्तद्देवताकस्य समुच्चारितमन्त्रस्य च व्यतिक्रमः सम्भवेत्।

"यस्मान्नऋते किञ्चन कर्म क्रियते तन्मे"—

इति श्रुतेरनुसारं मनोयोगं विना किमपि कर्म कर्त्तुं न शक्यते। अतः एवं विविधविधानैर्निगृहीतं मनः शनैः शनैः शैथिल्यमेकाग्रताञ्च भजते। तदेव मननशक्तिरूपं स्वात्मसाक्षात्कारे मुख्यो हेतुः।

दानं स्वधर्मो नियमो यमश्च श्रुतञ्च कर्माणि च सद्व्रतानि।
सर्वे मनोनिग्रहलक्षणान्ताः परो हि योगो मनसः समाधिः॥

श्री० भा० ११।२३-४६

पूजनादौ नानाविधिन्यासविधानमपरिहार्यत्वेनानुष्ठेयमस्ति।

"देवो भूत्वा यजेद्देवान् नादेवो देवमर्चयेत्" इति सिद्धान्तेन नानाविधमन्त्रन्यासेन मन्त्रात्मको देवतात्मकश्च विग्रहः सम्पद्यते। तत्र महाषोढान्यासफलश्रुतौ स्पष्टं समुदीरितम्। "एवं न्यासे कृते देवि साक्षात् परशिवो भवेत्, मन्त्री चाऽत्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः।" एवं समासादितदेवतात्मकविग्रहो सम्पादितपात्रासादनो विविधमन्त्रेणाभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतहविश्चिदग्नौ कुण्डलिनीमुखे जुहोति, एवं परमामृतेन

तृप्ता सा पराशक्तिः सुषुम्नामार्गेण षट्चक्राणि भित्त्वा सहस्रारे शिवेन सह युज्यते, एष एव परः समाधियोगः। पुनः ब्रह्मरन्ध्रात् हृदयं नीत्वा पञ्चोपचाराधिष्ठात्रीभिः साक्षाद्देवताभिः पञ्चोपचारेण पूजिता परदेवता नासारन्ध्रेण बहिः श्रीचक्रे संयोज्य पूज्यते, तथा पूजनान्ते तत्वशोधनविधौ त्रयाणामाणव-मायिक-कार्मिकाविद्यामलानां शुद्ध्यर्थं स्थूलसूक्ष्मकारण-देहानां शोधनं विधीयते। एवं विधिना सम्पादिता ब्राह्मीतनुः, ब्रह्म-सम्मिलनाय योग्या भवति।

"महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः"

हृदयप्रदेशान्नासारन्ध्रेणानीता श्रीचक्रे संयोज्य पूजिता स्वात्मदेवता पुनर्निर्वाणमुद्रया हृदि संस्थाप्य स्वात्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेदेष विसर्जने विधिः। एवमादावन्ते च पूजाव्यपदेशेन निरन्तरं निदिध्यासितोऽयं क्रियाकलापः किंस्विदस्ति स्वात्मलाभोदन्यो संभारः? किम्वा न प्रभवति श्रुतीनां परमतात्पर्यं जीवब्रह्मणोरभेदभावने? अपितु नास्त्यन्यः कोऽपि सरलः सिद्धश्चोपायः पन्थानमेनं परिहाय।

यथा चिक्रीडिषोर्बालकस्य क्रीडनकैरेव वर्णमालाक्षराणां बोधः सम्पाद्यते साम्प्रतिकैः शिक्षकैस्तद्वदेव भगवता परशुरामेण परमंकारुणिकेन चञ्चलचेतसां जीवानां परमकल्याणाय पूजाव्यपदेशेनात्मज्ञानोपायः प्रकटितोऽनुमोदिश्च भगवत्पादैः स्वयमाचरणेन प्रचारणैश्च।

अनेनैव साधनपथेन बहवः बभूवुः सिद्धिङ्गताः, पूर्णमनोरथाश्च, सन्ति साम्प्रतंमपि स्वसम्प्रदायपुरस्सरं श्रीचक्रसमाराधनबद्धादराः स्वकृतिभिः जनानां मनांसि समाह्लादयन्तः समेषां शुभानि सम्पादयन्तश्च जीवन्मुक्ता विचरन्त्यधुनापि महीतलेऽनेकशः साधकपुङ्गवाः। अतो मुहुर्मुहुर्व्याहरतां

नास्माकं हृदि सन्देहलेशोऽपि यदेनां श्रीचक्रसमाराधनसरणिं विहाय नास्त्यन्यः कोऽपि सरलः सिद्धश्चोपायश्चतुर्विधपुरुषार्थसाधनाय ।

अत एव बाल्यकालादेव कृच्छ्रतपोभिरधिगतपरमार्थतत्त्वैरपि श्रीमदनन्तश्रीविभूषितैः प्रातस्स्मरणीयचरणैः "श्रीहरिहरानन्दसरस्वती" ति सन्यासदीक्षानाम्ना, "षोडशानन्दनाथे" ति तन्त्रदीक्षा-नाम्ना "करपात्रस्वामी"ति लोकप्रसिद्धनाम्ना प्रसिद्धैः श्रीगुरुचरणैर्लोककल्याणाय यथाविधिः श्रीविद्यादीक्षामवाप्य श्रीचक्रसमाराधनेन विदितवेदितव्यैः श्रीमहाराजैः प्रणीतं "श्रीविद्यावरिवस्या" नामकं पुस्तकमिदं साङ्गं श्रीक्रमं साधकसमाजस्य परमोपकाराय भविष्यति ।

परञ्चदेमत्रावश्यमवधेयम्-यदस्यां साधनायां "श्रीगुरुः सर्वकारणभूताशक्ति" तेनैव सर्वं सम्पद्यतेऽतः सर्वात्मना श्रीगुरुं भजेत ।

"यतो गुरुः शिवः साक्षात् तं स्तुवन् प्रणमन् भजेत्
यथा देवे तथा मन्त्रे यथा मन्त्रे तथा गुरौ ।
यथा गुरौ तथा स्वात्मन्येवं भक्तिक्रमः प्रिये ॥
गुरुं न मर्त्यं बुध्येत यदि बुध्येत तस्य तु ।
न कदाचित् भवेत् सिद्धिर्मन्त्रैर्वा देवतार्चनैः ॥"

एवं तन्त्रशास्त्रेषु गुरुमहत्वप्रतिपादकानि बहूनि वाक्यानि समुपलभ्यन्ते । गुरुमुखैकमात्रसमधिगम्येयं श्रीविद्या । जन्मजन्मान्तरीयपुण्यपुञ्जोदयेन सद्गुरोः सकाशात् कदाचित् केनचित् कथञ्चित् समधिगता सम्यक्तया यद्यस्याः साधनसरणिस्तदा सुसम्पन्नं तस्य सर्वं, कृतकृत्यं तस्य जीवितं, नान्यत् किञ्चिदपेक्षितं स्यादिस्याः प्राप्त्यनन्तरं, तस्य चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यन्ति, स शिवयोगीति गीयते ।

पुस्तकस्य सम्पादने श्रीगुरुचरणानामनुग्रह एव परमो हेतुः। तदर्थं त्विदमेव वक्तुं समर्थोऽहं श्रीमद्भागवतीयेन पद्येन —

तुष्यन्त्वदभ्रमकरुणाः स्वकृतेन नित्यं
को नाम तत्प्रतिकरोति विनोदपात्रम्।

प्राक् संशोधनेन साहाय्यमाचरितवतां डा० श्रीरुद्रदेव-त्रिपाठिमहाभागानां नामाविस्मरणीयमेव। एवं मुद्रापणे च सहयोगं वितन्वन्तो ब्रह्मदत्तत्रिवेदिमहोदयाः साधुवादार्हाः। तथा मुद्रापणायाऽर्थंव्यवस्थां विदधानः श्रीरामप्रसादसराफमहाभागोऽपि नूनं श्रीपराम्बाप्रीतिभाग्, एवं श्रीगुरुचरणानां सकलकर्मकलापे प्रयतमानः श्रीबाबूलालगनेड़ीवालामहाशयोऽपि तेषां कृपाकटाक्षेण स्नपितः।

अत्र शीशकाक्षरयोजनवैकल्येनास्मदीयमनुष्यस्वभावसुलभदोषेण वा मुद्रापणे यद्यधिरूढाः काश्चनाशुद्धयस्ताः संशोध्य बोधयन्तु सहृदयसाधकवरेण्या येन पुनः प्रकाशनावसरे संशोधयामः।

अशरणशरण्यायाः करुणावरुणालयायाः वाञ्छासमधिकफलं दातुं नित्यनिर्भरायाः श्रीपरम्बायाश्चिन्तनञ्चार्चनं सकलैहिकामुष्मिकं फलं प्रददातीति साधकसमाजं मुहुर्मुहुः सम्बोधयति —

श्रीगुरुचरणसरोजरेणुः
श्रीसीतारामकविराजः
"श्रीविद्याभास्कर"
(दीक्षानाम-दत्तात्रेयानन्दनाथः)
७२, बड़तल्ला स्ट्रीट
कलकत्ता

'पूजा विधि' का हिन्दी सारांश

प्रातः स्मरण-विधि—

सूर्योदय से पूर्व उषा काल या ब्राह्म-मुहूर्त में उठकर निद्रा-स्थान से बाहर आकर पैर तथा मुख प्रक्षालन कर आचमन करें एवं यथा संभव रात्रि-वस्त्रों को उतार कर शुद्ध वस्त्र धारण करें। तदनन्तर पवित्र स्थान में आसन पर बैठ कर मस्तक में सहस्रार पर श्वेतवर्ण स्वगुरु का ध्यान करके पद्धति में लिखित गुरु-स्तोत्र तथा गुरु-पादुका-पञ्चक का यथा शक्ति पाठ करें। तत्पश्चात् गुरुचरणों से निकली हुई अमृत-धारा से अपने समस्त शरीर के सेचन की भावना करके अपने इष्ट मन्त्र का १० बार स्मरण करें। (यह लघु-प्रातः स्मरण है।) किन्तु 'गुरु-पादुका-मन्त्र' प्राप्त अधिकारी पादुका-मन्त्र जप करते हुए श्रीगुरु, परमगुरु एवं परमेष्ठी गुरु को पादुका-पूजन पूर्वक प्रणाम करें।

यहीं विशेष अधिकारी स्वगुरु से कुण्डलिनी-जागरण की क्रिया जान कर पद्धति में बताये अनुसार कुण्डलिनी-मन्त्र का विनियोग, षडङ्ग-न्यास, ध्यान और स्तुति-पाठ कर सहस्रार में पहुँची हुई कुण्डलिनी की रश्मियों से समस्त पाप के दहन की भावना करे और कुण्डलिनी-मन्त्र का यथावकाश स्मरण करें।

अजपा-जप समर्पण-विधि—

दिन और रात्रि के २४ घण्टों में २१६०० श्वास-प्रश्वास द्वारा 'हंसः सोहम्' मन्त्र का जप होता है। यह जप सात चक्रों में स्थित देवताओं के लिये विभक्त करके समर्पित किया जाता

है। इस विधि को पद्धति के अनुसार गुरुमुख से जानकर सम्पन्न करें। इसके पश्चात् अधिकारानुसार अन्तर्याग अथवा इष्ट देवता की मानस-पूजा करें। पुनः १० बार इष्ट मन्त्र का जप करके यथाधिकार 'रश्मिमाला' एवं 'वाञ्छाकल्पलता' आदि का पारायण करें।

यदि अन्तर्याग करना अभीष्ट हो तो पूजा-क्रम में वर्णित विधि के अनुसार करना चाहिये।

अन्तर्याग के पश्चात् प्रातः स्मरण-पद्य, ललिता-पञ्चक का पाठ करें।

प्रातः-कृत्य तथा सन्ध्या-विधि—

उपर्युक्त विधि सम्पन्न कर लेने के पश्चात् भूमि-प्रार्थना करके नासिका के जिस भाग से श्वास चल रहा हो उसी ओर का पैर भूमि पर रखकर वहाँ से बाहर आये और शौचादि कर्म निवृत्त करें। दन्त धावन, स्नान लिखी हुई विधि से करें।

स्नानादि से निवृत्त होकर पूजा स्थान में बैठ कर पहले यथाधिकार 'वैदिक-सन्ध्या' करें, तदनन्तर 'तान्त्रिक-सन्ध्या' करें। जिसमें 'मूल-मन्त्र' के तीन कूट से तीन आचमन कर अंगुष्ठ मूल से दो बार मुख-प्रोक्षण करें। बाद में आँख, कान, दोनों कन्धे, नाभि, हृदय और मस्तक का स्पर्श करें। बाँये हाथ में जल लेकर मूल-मन्त्र द्वारा शरीर का प्रोक्षण करके अघमर्षण करें सन्ध्या विधि में दिये हुये मन्त्र द्वारा सूर्य को ३ बार अर्घ्य दें और सूर्य मण्डल में श्रीचक्र की भावना करके उसमें पद्धति में लिखित पद्यों से भगवती का ध्यान करें और तान्त्रिक गायत्री से तीन अर्घ्य दें। फिर मूल-मन्त्र के साथ 'श्रीपादुकां तर्पयामि नमः' जोड़ कर तीन बार तर्पण करें। तदनन्तर मूल-मन्त्र के

ऋष्यादि, न्यास ध्यान करके अष्टोत्तरशत मन्त्र जप तथा उत्तर न्यासादिसहित भगवती को जप समर्पित करें।

परशुराम कल्प सूत्र में इसी एक सन्ध्या का विधान वर्णित है, यदि मध्याह्न और सायं सन्ध्या भी करना चाहें तो इसी प्रकार कर सकते हैं, अथवा मूल मन्त्र का जप करें।

यहाँ प्रथम आह्निक प्रकरण पूर्ण होता है।

पूजा प्रकरण—

प्रारम्भ में गुरु परम्परा का स्मरण करके यागमन्दिर प्रवेश तत्त्वाचमन, गुरु पादुका-मन्त्र स्मरण, पञ्चमुद्रा से गुरु एवं गणपति को प्रणाम करें। इसके बाद सङ्कल्प करके शरीर माला आदि से अलङ्कृत कर मुख को ताम्बूल अथवा पञ्च-तिक्त द्वारा सुरभित करके प्रसन्नचित्त होते हुए शिवोऽहम् की भावना से पूजा प्रारम्भ करें।

तदनन्तर पुष्प शुद्धि, आसन पूजा, देहरक्षा आदि पद्धति में प्रोक्त विधानों को सम्पन्न करें। यहाँ श्रीयन्त्र यदि प्रतिष्ठित हो तो उसकी नित्य प्रतिष्ठा अपेक्षित नहीं है, और यदि प्रतिदिन लिख कर पूजा करते हों, तो उसकी लघु प्राण-प्रतिष्ठा करें। फिर मन्दिर पूजा, दीप पूजा और यन्त्र में पुष्पाञ्जलि देकर 'भूत शुद्धि' करें।

भूतशुद्धि प्रकार—

भूतशुद्धि द्वारा शरीर में स्थित 'सङ्कोचशरीर' जिसे 'पाप-शरीर' भी कहते हैं, उसका यं आदि पञ्चमहाभूतों के बीजाक्षरों से शोषण, दहन एवं अमृताप्लावन करके 'दिव्य शरीर' का उत्पादन और शिव-भक्तिमय शरीर का निर्माण किया जाता है।

इसे एक प्रकार से 'नाडी-शुद्धि' भी कहते हैं। भूतशुद्धि की विधि इस प्रकार है—

सर्वप्रथम नासिका के दाहिने भाग से श्वास खींचते हुए यह भावना करनी चाहिये कि—'जीव शिव को ब्रह्मरन्ध्र में स्थापित कर रहा हूँ।' फिर बाये भाग से वायु निकालते हुए यह भावना करनी चाहिये कि—'मूलाधार में स्थित जीवात्मा सुषुम्ना मार्ग से ब्रह्मरन्ध्रस्थ शिव में एकीभूत हो गया।' फिर 'यं' बीज से नासिका के वामभाग से पूरक करें और दक्षिण भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि—'सङ्कोचशरीर का शोषण हो गया।'

पुनः नासिका के वामभाग से 'रं' बीज द्वारा पूरक करें और दक्षिण भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि 'सङ्कोचशरीर का दहन हो गया।'

तत्पश्चात् नासिक के दक्षिण भाग से 'वं' बीज द्वारा पूरक करें और वामभाग से रेचक करते हुए भावना करें कि—'जले हुए पाप-शरीर की भस्म सहस्रार से निसृत अमृत से आप्लावित हो गई।

तदनन्तर नासिका के वामभाग से 'लं' बीज द्वारा पूरक करके दक्षिणभाग से रेचक करते हुए भावना करें कि—'इससे दिव्य शरीर उत्पन्न हो गया।'

फिर वाम भाग से 'ह्रीं' बीज द्वारा पूरक करके दक्षिण भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि—'दिव्य शरीर शिव-शक्ति-मय हो गया।'

तत्पश्चात् नासिका के दक्षिण भाग से 'ह्रीं हंसः सोहम्' मन्त्र द्वारा पूरक करके वाम भाग से रेचक करते हुए भावना करें कि—'शिव के साथ सहस्रार में जो जीवात्मा स्थापित किया था वह सुषुम्ना-मार्ग से पुनः मूलाधार में स्थित हो गया।

यहाँ यह विशेष स्मरणीय है कि भूतशुद्धि की इस क्रिया में में पूरक और रेचक को ही प्राणायाम कहते हैं। इसमें कुम्भक नहीं होता। इसको नाडी शुद्धि भी कहते हैं।

पद्धति में लिखित भूतशुद्धि का सार यहाँ लिख दिया गया है जिससे कर्म करतें समय पद्धति का अनुसरण हो। इसका विशेष प्रकार जानने की इच्छा हो, तो 'श्रीविद्यारत्नाकर' देखें।

तदनन्तर प्रोक्त पद्धति के अनुसार 'आत्म प्राणप्रतिष्ठा' करके गर्भाधानादि 'पञ्चदश संस्कार' के लिये मूलमन्त्र का १५ बार जप करें। तत्पश्चात् १६, १० अथवा ३ बार मूलमन्त्र से प्राणायाम करें।

प्राणायाम की विधि यह है कि—'नासिका के वाम भाग से एक बार मन्त्र बोलकर पूरक करें, फिर दोनों से नासिका बन्द करके कुम्भक में चार बार मन्त्र बोले तथा बाद में दो बार मन्त्र बोलते हुए रेचक करें। पुनः नासिका के दक्षिण भाग से एक बार मन्त्र बोलते हुए पूरक, चार बार मन्त्र बोल कर कुम्भक और दो बार मन्त्र बोलकर नासिका के वाम भाग से रेचक करें।' यह एक प्राणायाम हुआ। इस प्रकार कम से कम तीन प्राणायाम करने चाहिये। बाद में धीरे-धीरे मन्त्रों की संख्या और प्राणायामों की संख्या बढ़ानी चाहिये।

प्राणायाम के द्वारा जठराग्नि दीप्त होती है। शरीर के सब विकार दूर होते हैं, शरीर में कान्ति और दीप्ति आदि का प्रादुर्भाव होता है, और कुछ ही समय के बाद साधक में इन गुणों की अनुभूति होने लगती है। अतः साधनावस्था में प्राणायाम करना आवश्यक है।

इसके बाद 'विघ्नोत्सारण' और 'शिखा-बन्धन' करके 'मातृकादिन्यास' करें। इसकी विधि पद्धति में दी गई है जिसे गुरुमुख से अच्छी तरह से समझ लें। इसी प्रकार और भी लिखे हुए न्यास यथाधिकार करने चाहिये।

तन्त्रशास्त्र का सिद्धान्त है कि 'देवता बनकर देवता की पूजा करे' और 'न्यास' का अर्थ है स्थापना। शरीर के अङ्गों में मन्त्रों की स्थापना करने से समस्त शरीर मन्त्रमय और देवमय हो जाता है। इन न्यासों से शरीर की जडता और आणवमल का नाश होकर दिव्यता का समावेश होता है।

ये न्यास अधिकारानुसार—'बालामन्त्र से दीक्षित के लिये बालाषडङ्ग न्यास तक तथा पञ्चदशीमन्त्र से दीक्षित होने पर मूलविद्या-न्यास' तक करने आवश्यक है। तदनन्तर 'लघु षोडा-न्यास' और 'श्रीचक्रन्यासादि' भी यथावकाश करने से अभ्युदय होता है, तथा 'महाषोढा-न्यास' का तो पूर्ण दीक्षा वाले को ही अधिकार है।

'ललिता न्यासप्रिया प्रोक्ता' इस वचन के अनुसार न्यास करने से भगवती ललितात्रिपुरसुन्दरी प्रसन्न होती है।

ये सभी न्यास दाहिने हाथ के अंगुष्ठ और अनामिका के मिलाने से बनी 'तत्त्वमुद्रा' से करने चाहिये। दाहिने हाथ में वामहस्त से तत्त्वमुद्रा बनाकर न्यास करें। जिह्वा, दन्त और गुह्यस्थानों में मानसिक भावना से न्यास होता है।

पूजा प्रकरण—

पूजा का प्रकरण दो विभागों में विभक्त है। प्रथम विभाग में पूजा के लिये उपयोगी पात्रों का स्थापन, उनमें वस्तुओं की पूर्ति एवं पूरित वस्तुओं का संस्कार होता है। इसी को 'पात्रा-

सादन' कहा जाता है। ये पात्र क्रमशः १–कलश, २–सामान्यार्घं पात्र (शंख), ३–विशेषार्घंपात्र, ४–शुद्धिपात्र, ५–गुरुपात्र और ६–आत्मपात्र हैं। इनके अतिरिक्त पाद्य पात्र, अर्घ पात्र तथा आचमनीय पात्र भी होते हैं। विशेषार्घं में तर्पणी अर्पणार्थ रहती है, एवं भगवती के अग्रभाग में 'तर्पण-क्षीर-समर्पण-पात्र' और भगवती के वामभाग में अर्पणपात्र रखा जाता हैं। शास्त्रों में 'पात्रासादन' और उनकी सङ्ख्या का विविध विधान वर्णित है। अतः अपने सम्प्रदायानुसार करना ही श्रेयस्कर है। यहाँ उपर्युक्त पात्रों के सम्बन्ध में कुछ अधिक स्पष्टता अपेक्षित है, अतः साधकों के हितार्थ वह लिख रहे हैं। यथा—

कलश-स्थापन— यहां पूजा में दो कलश होते हैं, जिनमें एक 'वर्धनी-कलश' होता है तथा द्वितीय 'क्षीर-कलश' होता है। जिसमें विशेषार्घ्य के लिये साधित क्षीर पूरित रहता है। वर्धनी-कशल अरत्नि-प्रमाण होना चाहिये। (मणिबन्ध से अङ्गुली के अग्रभाग-पर्यन्त हस्त के प्रमाण को 'अरत्नि' कहते हैं।

क्षीर-कलश — विशेषार्घ्य-पात्र से द्विगुण होना चाहिये। विशेषार्घ्य पात्र अपने चार अंगुल ऊंचा और उतना ही चौड़ा कमल-सदृश दृष्टि-मनोहर होना चाहिये। उसका आधार-त्रिपदी भी चार अंगुल उंची तथा चार अंगुल चौड़ी होनी चाहिये जिसमें विशेषार्घ पात्री का अच्छी तरह से समावेश हो जाय।

सामान्यार्घ्य—यह शङ्ख का होता है, और यह बीच की नाभि निकाला हुआ 'जल-शङ्ख' होना चाहिये। इसका भी आधार त्रिपदी हो एवं विशेषार्घ्य पात्र के समान ही ऊँचा हो।

शुद्धिपात्र—गुरुपात्र तथा आत्मपात्र—ये तीनों छोटी कटोरियाँ होती हैं। पाद्य, एवं आचमन के लिये दो पात्र तथा

बलि के लिये एक ताम्रपात्र रहता है। इन पात्रों को अन्यान्य धातुओं के बनाने का भी शास्त्रों में विधान वर्णित है जो विशेष कामनाओं के लिये है। रजतपात्र सर्वोपयोगी होते हैं।

पात्रासादन के लिये ग्रन्थ में पूर्ण विधि दी गई है। अपने वामभाग में पीठ पर मत्स्यमुद्र से मण्डल-निर्माण, उस मण्डल की मूल-मन्त्र से पूजा, एवं वर्धनी-पात्र स्थापन, पूजन, अभिमन्त्रण, और कलश-जल से सर्व वस्तुओं का प्रोक्षण सर्वप्रथम यहाँ होता है।

वर्धनी-पात्र के दक्षिण भाग में सामान्यार्घ्य स्थापित होता है। यहाँ भी मत्स्य-मुद्रा से मण्डल-रचना, मण्डल-पूजन, आधार-स्थापन उसमें बारह वह्निकलाओं की पूजा एवं सामान्यार्घ्य-स्थापन, उसमें बारह सूर्य-कलाओं की पूजा, वर्धनीपात्र से उद्धरणी द्वारा जलपूरण करके सोलह सोमकलाओं की पूजा, तदनन्तर जल में मूल-मन्त्र से षडङ्ग, पूजन करके उससे पूजा-सामग्री का प्रोक्षण विधेय है।

इस प्रकार सामान्यार्घ्य के जल से विशेषार्घ्य-स्थापना के स्थल पर पूर्ववत् मण्डल, आधार, पात्र एवं पत्रामृत का पूजन होता है। इसमें जो कुछ विशेषताएँ हैं उन्हें उस-उस स्थान पर लिख दिया है।

इसी प्रकार शुद्धिपात्र, गुरुपात्र और आत्मपात्र-स्थापन की भी विधि है। इन पात्रों के लिये आवश्यक मण्डलों के चित्र भी यहाँ दिये गये हैं।

सरल संस्कृत भाषा में पूजा-विधि लिख दी गई है। अतः पहले इस विधि को कण्ठस्थ कर लेना चाहिये, तदनन्तर गुरु-मुख से अच्छी तरह समझ कर आद्योपान्त पूजन देखना चाहिये।

इससे यह पूजा समझ में आ जाती है। सम्पूर्ण पूजा करने में दो से तीन घण्टे लगते हैं। अभ्यास होने पर समय कम हो जाता है।

पूजा के अन्तर्गत विशेष मुद्राओं की भी आवश्यकता होती है। पूरी पूजा में ५० मुद्राएँ अपेक्षित हैं, इनका भी ज्ञान आवश्यक है। भगवती का श्रीयन्त्र में चौसठ उपचारों से पूजन करके पद्धति में प्रतिपादित लयाङ्ग-पूजन, नित्याओं का अर्चन तथा गुरु-मण्डलार्चन करके आवरणार्चन किया जाता है।

आवरणार्चन विधि

स्वर्ण अथवा रजत की बनी हुई तर्पणी को दाहीने अङ्गुष्ठ और तर्जनी के मध्यभाग में रख कर तर्पण अङ्गुष्ठ, अनामिका तथा कनिष्ठिका से अक्षत एवं पुष्प श्रीयन्त्र पर अर्पण करते हुए आवरणार्चन करें। सहस्रनामावली से अर्चन करना हो तो वह भी करें। तदनन्तर धूप, दीप, नैवेद्य, आरती, पुष्पाञ्जलि और बलिदान करके इष्ट मन्त्र का जप करें। जप की विधि जप प्रकरण में दी गई है, उसके अनुसार जप करके स्तोत्र-सहस्र-नामादिकों का पारायण करें। तदनन्तर सुवासिनी-पूजन, तत्त्व-शोधन और पात्रोद्वासन करें।

यहाँ यह स्मरणीय है कि—

अशक्तः कारयेत् पूजां दद्याद् वाऽर्चन-साधनम्।
दानाशक्तः सपर्यान्तं पश्येत् तत्पर-मानसः॥

तथा—'नित्य-नैमित्तिक-क्रमौ शिष्य-सुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते। नित्यक्रमस्य प्रमादादिनाऽतिक्रमे मूलशतजपः प्रायश्चित्र-माम्नातम्।' इनके अनुसार उपासना की निरन्तरता ही सर्वतः साध्य है।

इस प्रकार नित्यकर्म करते हुए नैमित्तिकार्चन करना चाहिये। इसमें पाँच पर्व मुख्य हैं—१. कृष्णाष्टमी, २. कृष्ण-चतुर्दशी; ३. अमावास्या, ४. पूर्णिमा एवं ५. सङ्क्रान्ति। इनमें प्रातः काल नित्यकर्म करके दिन में उपवास-पूर्वक रात्रि में पूजन किया जाता है। जिस तिथि का अर्चन हो, वह तिथि रात्रि-व्यापिनी होनी चाहिये। सङ्क्रान्ति का जो पुण्यकाल हो, उसमें पूजन होना चाहिये। पूजन के बाद भोजन करना चाहिये। पूर्णिमा के पर्व में कुछ विशेष विधि है, वह 'श्रीविद्यारत्नाकर' में वर्णित है उसके अनुसार विशेष उपचारों से अर्चन सम्पन्न करें।

नित्य, नैमित्तिक और काम्य ऐसे तीन प्रकार के कर्म होते हैं। जो नित्य और नैमित्तिक कर्म करता हैं उसी को काम्य-कर्म का अधिकार होता है। परन्तु जो नित्य और नैमित्तिक कर्म निरन्तर करते हैं, उनके सभी मनोरथ पूर्ण होते हैं। उनको काम्य-कर्म करने की आवश्यकता नहीं है। यदि आवश्यक हो, तो गुरुमुख से सम्यक् प्रकार विधि का ज्ञान करके करें। अन्यथा काम्य-कर्मों में प्रत्यवाय भी होता है अर्थात् विपरीति फल की भी सम्भावना रहती है। अतः बड़ी सावधानी से कर्म में प्रवृत्त होना चाहिये। शास्त्रों में लिखा है—

शुभ वाऽप्यशुभं वाऽपि काम्यं कर्म करोति यः।
तस्यारित्वं प्रजेन्मन्त्रस्तस्मान्न तत्परो भवेत्॥

पञ्चमकार अनुकल्प एवं समयाचार—

तन्त्रशास्त्रों में 'मद्य, मांस, 'मत्स्य, मुद्रा, और मैथुन' इन पञ्च मकारों से पूजन का विधान वर्णित है। और इनके विधि-निषेध का भी बड़े विस्तार से वर्णन है। इसको देखकर सर्व-सधारण व्यक्ति इसका निर्णय करने में असमर्थ होता है। जहाँ

इन पञ्च मकारों से पूजन का विधान वर्णित है वहाँ शीघ्र ही अनेक सिद्धियों की प्राप्ति का वर्णन भी उपलब्ध है, अतः इन सिद्धियों के लोभ से इन में प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है। परन्तु यह बड़ा ही कठिन मार्ग है। इसमें किञ्चित् भी असावधानी होने से निश्चित ही पतन हो जाता है। भोग-पदार्थों की ओर आकर्षित होना इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति है और इन्द्रियाँ इतनी बलवान होती हैं कि इनको भोगों से रोकना सर्वसाधारण का सामर्थ्य नहीं है। प्राणियों की प्रवृत्ति तो प्रकृति से है परन्तु निवृत्ति ही महाफलदायक है। अतः तन्त्रोक्त उपासना में पञ्चकार आवश्यक हो ऐसी बात नहीं है। शास्त्रों में इनके अनुकल्प का विधान भी वर्णित है। इसके स्थान पर दुग्ध, फल-रस तथा सुगन्धि द्रव्यों से मिश्रित सात्त्विक द्रव्यों से अर्चन करना ही हितकारक है। इससे पतन का भय नहीं है और सर्वतोमुखी कल्याण ही होता है।

जगद्गुरु आद्य शङ्कराचार्य के द्वारा प्रवर्त्तित तन्त्र-मार्ग में सात्त्विक उपासना का उपदेश है और वर्तमान में शाङ्कर-सम्प्रदाय ही अनवच्छिन्न रूप से चला आ रहा है। इसके अनुसार उपासना करने से साधक शीघ्र ही मन्त्र सिद्धि के द्वारा लौकिक और पारलौकिक कल्याण, 'अभ्युदय और निःश्रेयस' का अधिकारी हो जाता है।

श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती ललिता महात्रिपुरसुन्दरी की मातृभाव से उपासना है। वह करुणामयी, कृपामयी, भक्त-वत्सला माता अपने पुत्रों का कल्याण ही करती है और इसमें विशेष विधि-विधानों की ओर जाना भी आवश्यक नहीं है।

निष्कामो देवातां नित्यं योर्चयेत् भक्ति निर्भर,
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथा शक्ति मनुं जपन्
सैव तस्यैहिकं भारं वहेन्मुक्तिञ्च साधयेत्
सदा सन्निहिता तस्य सर्वञ्च कथयेत सा
वात्सल्य-सहिताधेनु यथा वत्समनुव्रजेत्
अनुगच्छेचच सा देवी स्वं भक्तं शरणागतम् ।

जो साधक निष्काम भाव से श्रद्धा भक्ति युक्त होकर उस कृपा मयी माता का चिन्तन करता है, और यथा शक्ति अपने इष्ट मन्त्र का जप करता है तो वह भगवती उस भक्त के इह-लौकिक समस्त भारों को स्वयं बहन करती है और शेष में मुक्ति भी देती है। इतना ही नहीं उस शरणागत भक्त के वह सदा साथ रहती है और सब कुछ उसको कहती रहती है। जैसे वात्सल्य स्नेह से द्रवित चित्त होकर गाय अपने बछड़े के पीछे रहती है उसी तरह वह करूणामयी माता अपने शरणागत भक्त के अनुगत होकर सब प्रकार से रक्षा करती है। संसार की यात्रा बड़ी भयानक है उससे परित्राण पाने के लिये मातृभाव की उपासना ही सर्वश्रेष्ठ है। आपदि किं करणीयं स्मरणीयं चरण युगलमम्बायाः, न मातुः परमस्ति दैवतम् आदि शास्त्रों का उपदेश है कि माता के समान दूसरा कोई बड़ा देवता नहीं है। अतः आपात् काल में क्या करना चाहिये, कि माता के चरण कमलों का निरन्तर स्मरण करना चाहिये। इससे मनुष्य दीनता हीनता दरिद्रता आधि व्याधि शोक सन्तापों से मुक्त होकर परम कल्याण को प्राप्त कर लेता है। यह भारतीय उपासनाओं में

सर्वश्रेष्ठ उपासना मानी जाती है और यह ज्ञान विज्ञान पूर्ण रहस्य मयी पद्धति है। इसका गुरु परम्परा से ही ज्ञान होता है। सर्व प्रथम इसमें मन्त्र दीक्षा परमावश्यक है। मन्त्र दीक्षा के विना इस पूजा का अधिकारी नहीं होता है। दीक्षा प्राप्त करके उनके नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। इस साधना की तीन कोटि होती है। साधक, सिद्धि और सिद्ध ये क्रमशः तीन अवस्थाओं की प्राप्ति होती है।

प्रारम्भ में साधक के लिये मन्त्र का अर्थ और मन्त्र चैतन्य की क्रिया, और बाह्य एवं अन्तर की योनि मुद्रा का ज्ञान आवश्यक है, इसके बिना चिर काल तक भी सिद्धि सम्भव नहीं है। ये सब गुरु गम्य ज्ञान है जिसने विधि पूर्वक साधना करके अनुभूति प्राप्त की है वही मन्त्र रहस्य का ज्ञान प्राप्त कर पाता है। और वह श्रद्धालु उपासकों को भी उपकृत करने में समर्थ होता है। अतः सम्प्रदाय पूर्वक गुरुपरम्परा से ही इस साधना का रहस्य प्राप्त होता है। अनेक जन्मों के पुण्य पुञ्ज जब एक साथ उदित होते हैं तो इस साधना में श्रद्धा उत्पन्न होती है। तदनन्तर उत्कट उत्कठा से उस विश्वपति से प्रार्थना करता है तो वह अशरणशरण अकारणकरुण करुणावरुणालय भगवान् विश्वनाथ स्वयं उसका मार्गदर्शन करते है या गुरुरूप में शक्तिपात के द्वारा साधना में प्रवृत्त कर देते है। उसके शनैः शनैः सांसारिक राग द्वेषादि दोष दूर हो जाते हैं और शेष में स्वरूप साक्षात्कार से कृतकृत्य हो जाता है। इस साधना से भोग और योग दोनों प्राप्त होते हैं **श्रीसुन्दरी-सेवन-तत्पराणां भोगश्च योगश्च करस्थ एव।** अतः अपने जीवन का कुछ समय देकर साधना में प्रवृत्त होना चाहिये जिससे यह संसार यात्रा सुखमय हो, जीवन भर सांसारिक प्रपञ्चों के करने पर भी वास्तविक

सुख-शान्ति प्राप्त नहीं होती है, लौकिक उपलब्धिया कितनी भी क्यों न प्राप्त हो जाय परन्तु पूर्णता प्राप्त नहीं होती, पूर्णता प्राप्त करने के लिये एक मात्र मार्ग साधना ही है।

मैंने गुरु कृपा से यत् किञ्चित् ज्ञान प्राप्त किया वह उनकी ही प्रेरणा से जगत् कल्याण के लिये प्रकाशित करने का प्रयत्न किया है। उत्तर भारत में श्रीविद्या साधना का प्रचार श्रीस्वामी जी महाराज द्वारा ही हुआ है, यह ज्ञान अनवरत रूप से प्रवाहित होता रहे यही हमारी हार्दिक कामना है। और इससे श्रीविद्या साधकों का कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। जहाँ तक हो सका है इस पद्धति में साधकों के लिये सभी विधानों का समुचित समावेश किया गया है। और जो साधकों के विशेष जिज्ञासा हो तो हम निस्वार्थ रूप में सहयोग के लिये सदा सर्वदा प्रस्तुत है।

शेष में साधकों के लिये कुछ विशेष निर्देश का उल्लेख करके अपने वक्तव्य को परिसमाप्त करता हूँ।

मनुष्य का शरीर सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्तियों से परिपूर्ण है। उन शक्तियों को जागरण करना ही साधना का लक्ष्य है। शरीर में बहत्तर हजार नाड़ियों का जाल बिछा हुआ है और उनमें सभी शक्तियाँ सुप्त रूप में विद्यमान है। उनमें तीन नाड़ियाँ इड़ा पिङ्गला सुषुम्ना मुख्य है। इन्ही में विशेष रूप से शक्ति का संचार होता है। मन्त्रों का भावना पूर्वक शुद्ध उच्चारण करने से सुषुम्ना नाड़ी का विकास होता है, यह ब्रह्म नाड़ी भी कहीं जाती है। कुण्डलीनी शक्ति के प्रवाह होने का यह मार्ग है।

कुण्डलिनी शक्ति

समस्त विश्व के प्राणियों में चेतना रूप में ईश्वरीय शक्ति का समावेश है। इसी से सब जीवों में ज्ञान, क्रिया का संचार

होता है। इसी से चिटी से लेकर ब्रह्म पर्यन्त सभी जीव अपने आवश्यक कर्म आहार निद्रादि का निर्वाह करते है। शरीर के अनुकूल ही ज्ञान क्रिया का संचार होता है। अतः पशु पक्षी आदि अपनी शारीरिक क्षमता से विशिष्ट क्रिया करने में असमर्थ है। किन्तु मनुष्य देह ऐसा ईश्वर ने बनाया है कि वह ईश्वरीय शक्तियों का विकास करने में समर्थ है। तन्त्र शास्त्रों की मान्यता है कि वह शक्ति मनुष्य शरीर में कुण्डलिनी रूप में विद्यमान है, और उसका विकास मन्त्र योग से होता है। अतः तान्त्रिक साधना को मन्त्रयोग कहा जाता है। मन्त्रों के बीजाक्षरों की ह्रस्व दीर्घ मात्राओं का यथावत् शुद्ध उच्चारण करने से सुषुम्ना मार्ग विकसित हो जाता है और उससे कुण्डलिनी का उर्ध्व गमन होता है, और इससे अलौकिक शक्तियाँ मनुष्य देह में विकसित होने लगती है। अतएव मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करना परमावश्यक है। अशुद्ध उच्चारण से विपरित फल की भी संभावना रहती है। दीक्षा का मुख्य प्रयोजन भी यही है, मन्त्र सिद्धि प्राप्त गुरु के द्वारा मन्त्रोच्चारण यथावत् शुद्ध होता है इसलिये मन्त्र का शुद्ध उच्चारण का ज्ञान प्राप्त करके उस मन्त्र के द्वारा कुण्डलिनी जागरण की क्रिया को जान कर मन्त्र जप करने से शीघ्र ही अनुभूतियाँ होने लगती है, क्योंकि अपने ही देह में स्थित शक्तियों का विकास करना है, अपनी वस्तु अपने को सुलभ होती है। अतः आलस्य त्याग करके गुरु निर्दिष्ट साधना क्रम का अभ्यास करना चाहिये। अभ्यास का महत्त्व अनन्त है कर्माभ्यास के फल स्वरूप सिद्धि लाभ अवश्यम्भावी है। साधना में श्रद्धा दृढ़ निष्ठा और तत्परता ही सब सिद्धियों का मूल कारण है।

इसके साथ मन वचन कर्म से व्यवहार की पवित्रता चारित्रिक शुद्धि शास्त्र मर्यादा का पालन करना आवश्यक है, इस पद्धति में

परिशिष्ट में त्रैपुर सिद्धान्त और साधक धर्मों का उल्लेख किया है उनको जानने से साधना के उद्देश्य और प्रयोजन का यथार्थ ज्ञान हो जायगा। और तत्परता से कर्माभ्यास करने से ऐश्वर्य शक्तियों का स्फुरण और विकास निश्चित रूप से होगा।

मन्त्र योग की उपासना का अपरिमित फल है श्री आद्य-शङ्कराचार्य रचित सौन्दर्य लहरी स्तोत्र में फल का वर्णन इस प्रकार है।

सरस्वत्याः लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते।
रतेः पातिव्रत्यं शिथलयति रम्येण वपुषा॥
चिरञ्जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः।
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद् भजनवान्॥

श्रीगुरुचरणसरोजरणु
दत्तात्रेयानन्दनाथ
(सीताराम कविराज)

॥ श्रीः ॥

श्रीजगन्मात्रे नमः

श्रीविद्यावरिवस्यान्तर्गतविषयानुक्रमः

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुश-पुष्पबाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

॥ श्रीः ॥
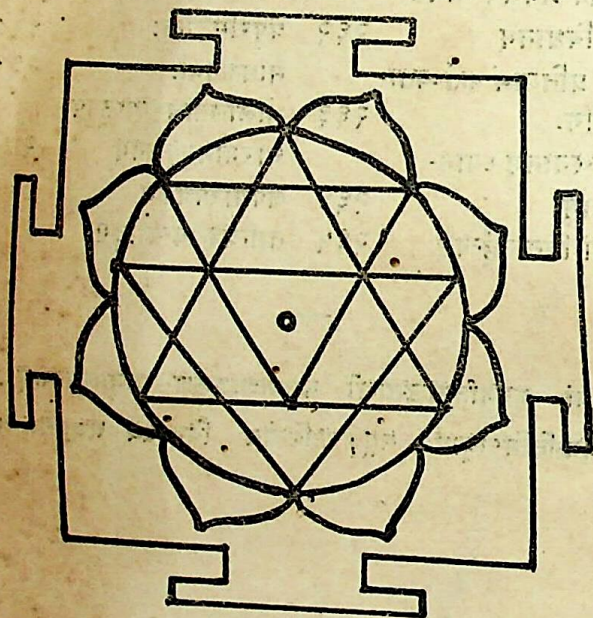
❀ श्रीगुरुभ्यो नमः । श्रीमहागणपतये नमः ❀

॥ श्रीसच्चिदानन्दस्वरूपिण्यै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥

श्रीविद्या-वरिवस्या

आब्रह्माण्डपिपीलिकान्ततनुभृत्सूज्जृम्भमाणा स्फुटं,
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति ।
सा देवी जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी,
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे ॥

अथ प्रथममाह्निकप्रकरणम्

(ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद् बहिर्निर्गत्य पादौ मुखं च प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिधाय शुद्धासने उपविश्य शिरसि सहस्रारे श्वेतवर्णं स्वगुरुं ध्यायेत्) ।

आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्यावतार-संसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ॥
नवाय नवरूपाय परमार्थ-स्वरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमो-भेद-भानवे चिद्घनाय ते ॥
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त-विग्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ॥

विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे ॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥
इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः ।
प्रातः प्रबोध-समये जपात् सुदिवसं भवेत् ॥

श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम् ।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहं भजे ॥१॥
तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया ।
कोणलक्षितहळक्षमण्डलीं भावलक्ष्यमबलालयं भजे ॥२॥
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम् ।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलम् ॥३॥
ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम्;
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः ॥४॥
तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुङ्कुमासवपरीमरन्दयोः ।
द्वन्द्वबिन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मङ्गलास्पदम् ॥५॥

निषक्तमणिपादुका-नियमितौघकोलाहलं,
स्फुरत्किसलयारुणं नखसमुल्लसच्चन्द्रकम् ।
परामृतसरोवरोदितसरोज-सद्रोचिषं,
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपदारविन्दद्वयम् ॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूपनिरूपणहेत्वमुकाम्बासहितगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।'
स्वच्छप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्बासहितपरमगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
स्वात्मारामपञ्जरविलीनचेतस्कामुकाम्बासहितपरमेष्ठिगुरुश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति गुरु-परमगुरु-परमेष्ठिगुरु-पादुकापूजनं भावयेत्।)

श्रीगुरुप्रणतिः

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥
वन्दे गुरु-पद-द्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम्।
रक्त-शुक्ल-प्रभा-मिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः॥

(इति प्रगम्य प्राणानायम्य च तच्चरणयुगलविगलदमृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गमात्मानं भावयेत्)।

इष्ट-मन्त्र-भावनम्

ततश्च सर्वचैतन्यात्मिकां जाग्रदाद्यवस्थात्रयावभासिकां सर्वाधिष्ठानरूपां प्रत्यक्चैतन्याभिन्नब्रह्मात्मिकां सर्वचैत्यविवर्जितामखण्डां चितिं भावयेत्। यथा—

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं तडिल्लतासदृशाकृतिं तरुणारुण-पिञ्जरां तैजसीं ज्वलन्तीं कुण्डलीरूपां सर्वाधिष्ठानभूतां परां संविदं चिन्तयेत् । मूलमन्त्रं च दशवारमावर्तयेत् ।

कुण्डलिनी-मन्त्रजप-विधिः

नियमितपवनस्पन्दो मूलाधारे चतुर्दलपद्मे त्रिकोणात्मकं पीठस्थित-ज्योतिर्लिङ्गमावेष्टयावस्थितां सार्धत्रिवलयां 'हूँ' बीजेनोत्थितां 'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रं च जपन् कुण्डलिनीं ध्यायेत् ।

अस्य श्रीकुण्डलिनीमन्त्रस्य शक्तिॠषिर्गायत्री छन्दश्चेतनाकुण्डलिनी-देवता ऐं बीजं श्रीं शक्तिः ह्रीं कीलकं श्रीकुण्डलिन्याश्चिन्तने विनियोगः ।

(इति विनियोगं कृत्वा) 'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रेण करषडङ्गन्यासौ विधाय ध्यायेत् । ध्यानम्—

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्-
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत् परामम्बिकाम् ॥

कुण्डलिनीस्तुतिः

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशीं यान्तीं सुषुम्नान्तरं,
भित्त्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभाम् ।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघैः पतिं,
सम्भाव्य स्वगृहागतां पुनरिमां सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम् ॥१॥

हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्तिः कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम् ।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरुचिरा ध्येया जगन्मोहिनी ॥२॥
अव्यक्तं परबिम्बमञ्चितरुचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा ।
आनन्दामृतकन्दगं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं,
संवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः ॥३॥
मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसङ्क्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तडित्कोटिप्रभाभास्वराम् ।
उद्यन्तीं समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणां,
सान्द्रानन्दसुधामयीं परशिवं प्राप्तां परां देवताम् ॥४॥
गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा तनुयाद् योगफलानि कुण्डली ।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा भजतां वाञ्छितकल्पवल्लरी ॥५॥
आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलयां नीवारशूकोपमां,
नित्यानन्दमयीं गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदैः ।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवत्कोदण्डमध्योदितां,
ध्यायेद् भास्वरबन्धुजीवरुचिरां संविन्मयीं देवताम् ॥६॥
हृत्पङ्केरुहभानुबिम्बनिलयां विद्युल्लतामन्थरां,
बालार्कारुणतेजसां भगवतीं निर्भर्त्सयन्तीं तमः ।
नादाख्यां परमर्धचन्द्रकुटिलां संविन्मयीं शाश्वतीं,
यान्तीमक्षररूपिणीं विमलधीर्ध्यायेद् विभुं तेजसाम् ॥७॥

भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटां नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्तीं तनुम् ।
वर्णानां जननीं तदीयवपुषा संव्याप्य विश्वं स्थितां,
ध्यायेत् सम्यगनाकुलेन मनसा संविन्मयीमम्बिकाम् ॥८॥
मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी ।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकामं,
दद्यादद्य श्रियमविकलां वाङ्मयी देवता नः ॥९॥
आधारबन्धप्रमुखक्रियाभिः, समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभिः ।
त्रिधामबीजं शिवमर्चयन्ती, शिवाङ्गना नः शिवमातनोतु ॥१०॥
निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासैः,
पथि पथि कमलानां चारु हासं विधाय ।
तरुणतपनकान्तिः कुण्डली देवता सा,
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेजः ॥११॥
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंसमानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु ॥१२॥
वर्णैरर्णवषड्दिशारविकलाचक्षुर्विभक्तैः क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान् ।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतै-
र्भिन्दाना परदेवता त्रिजगतां चित्तेषु दत्तां मुदम् ॥१३॥
आधाराद् गुणवृत्तशोभिततनुं निर्गत्वरीं सत्वरं,
भिन्दन्तीं कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम् ।

सङ्क्षुब्धं ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत-
स्रोतःकन्दलिताममन्दतडिदाकारां शिवां भावये ॥१४॥
मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिभाभास्वरे विभ्रमन्तं,
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम् ।
विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य ॥१५॥
तस्योर्ध्वे विस्फुरन्तीं स्फुटरुचिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छन्तीं सुषुम्नामनुसरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम् ।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरीं भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्नां स्फुरति निरुपमा हूङ्कृतोदञ्चितोरः ॥१६॥
नीता सा शनकैरधोमुखसहस्रारारुणाब्जोदरे,
च्योतत्पूर्णशशाङ्कबिम्बमधुनः पीयूषधारास्रुतिम् ।
रक्तां मन्त्रमयीं निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्,
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत् ॥१७॥
योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तर्बीजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान् ।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः, सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः ॥१८॥
(इति तद्रश्मिनिकरभस्मितसकलकल्मषजालो "मूलं" मनसा दशवार-मावर्तयेत् ।)

अजपाजपविधिः

अथ पूर्वेद्युः सूर्योदयादारभ्याद्यसूर्योदयपर्यन्तं षट्शताधिकैकविंशति-साहस्रिकां निःश्वासोच्छ्वासरूपिणीमजपां मूलाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तसप्त-चक्रनिवासिनीभ्यो देवताभ्यो निवेदयिष्ये, इति सङ्कल्प्य क्रमशो निवेदयेत् । यथा—

मूलाधारे चतुर्दलपद्मे वं शं षं सं चतुरक्षरे चतुष्कोणयन्त्रे ऐरावत-वाहने लंबीजे स्थिताय सिद्धिबुद्धिसहिताय कुङ्कुमवर्णाय महागणपतये षट्शतमजपाजपं निवेदयामि ।

स्वाधिष्ठाने षड्दलपद्मे बं भं मं यं रं लं षडक्षरे अर्धचन्द्रे यन्त्रे मकरवाहने वं बीजे स्थिताय सरस्वतीशक्तिसहिताय सिन्दूरवर्णाय ब्रह्मणे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि ।

मणिपूरचक्रे दशदलपद्मे डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं दशाक्षरे त्रिकोणयन्त्रे मेषवाहने रं बीजे स्थिताय लक्ष्मीशक्तिसहिताय नीलवर्णाय विष्णवे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि ।

अनाहतचक्रे द्वादशदलपद्मे कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं द्वादशाक्षरे षट्कोणयन्त्रे हरिणवाहने यं बीजे स्थिताय पार्वतीशक्ति-सहिताय हेमवर्णाय परमशिवाय षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि ।

विशुद्धिचक्रे षोडशदलपद्मे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः षोडशाक्षरे शून्ययन्त्रे हस्तिवाहने हं बीजे स्थिताय प्राणशक्तिसहिताय शुद्धस्फटिकसङ्काशाय जीवाय सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि ।

आज्ञाचक्रे द्विदलपद्मे श्वेतवर्णे हं क्षं द्व्यक्षरे लिङ्गयन्त्रे नरवाहने प्रणव-बीजे स्थिताय ज्ञानशक्तिसहिताय विद्युद्वर्णाय गुरवे सहस्रमेकम-जपाजपं निवेदयामि ।

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदलपद्मे चित्रवर्णे अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं लॄं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं इति विंशति-

वारोच्चारिते सहस्राक्षरे विसर्गयन्त्रे बिन्दुवाहने पूर्णचन्द्रमण्डले आनन्द-महासमुद्रमध्ये चिन्मयमणिद्वीपे चित्सारचिन्तामणिमयमन्दिरे कल्पवृक्षा-धस्तले अव्याकृतब्रह्ममहासिंहासने स्थिताय नानावर्णाय वर्णातीताय चिच्छक्तिसहिताय परमात्मने सहस्रमेकमजपाजपं निवेदयामि। (इति निवेदयेत्।)

(अथ कतिचित् क्षणान् 'हंसः सोऽहम्' इति श्वासोच्छ्वासेषु भावयेत्।)

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत् पुनः।
हंसोऽतिपरमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा॥

(इति ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सर्वान् देवान् पूजयेत्।)

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि। (कनिष्ठिकाङ्गुष्ठाभ्याम्)।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि। (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)।
यं वाय्वात्मकं धूपमाघ्रापयामि। (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)।
रं वह्न्यात्मकं दीपं दर्शयामि। (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्)।
वं अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि। (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)।
सं सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान् समर्पयामि। (साङ्गुष्ठाभिः-सर्वाभिरङ्गुलीभिः)।

श्रीचक्रदेवतान्तर्यागः

(आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्त्यां बिसतन्तुतनीयस्यां विद्युत्पुञ्ज-पिञ्जरायां विवस्वदयुतप्रकाशायां कुण्डलिन्यामेव निम्नाङ्कितेषु चक्रेषु श्रीचक्रस्थिता देवता भावयन् पूजयेत्। तद्यथा—

मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे तदुपरि स्थिते विषुवन्नाम्नि रक्तवर्णे षड्दले च देहश्रीचक्रयोरभेदेन भूपुरस्थिता अणिमादिदेवीः पूजयामि ।

मूलाधारे चतुर्दले षोडशदलगतकामाकर्षिण्यादिदेवीः पूजयामि ।

स्वाधिष्ठाने षड्दलेऽष्टदलगतानङ्गकुसुमादिदेवीः पूजयामि ।

मणिपूरे दशदले चतुर्दशारगतसर्वसंङ्क्षोभिण्यादिदेवीः पूजयामि ।

अनाहते द्वादशदले बहिर्दशारगतसर्वसिद्धिप्रदादिदेवीः पूजयामि ।

विशुद्धे षोडशदलेऽन्तर्दशारगतसर्वज्ञादिदेवीः पूजयामि ।

लम्बिकाग्रे अष्टारगतवशिन्यादिदेवीः पूजयामि ।

आज्ञायां द्विदले आयुधदेवीस्त्रिकोणगतमहाकामेश्वर्यादिदेवीश्च पूजयामि ।

सहस्रारे बिन्दुगतश्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं कामेश्वराङ्कनिलयां देवीं पूजयामि । इति ।

(एवं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या सचक्रावयवान्यावरणानि विलीनानि विभाव्य मध्यत्र्यस्राग्रे स्थितजीवात्मना सहितां देवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिकुसुमैस्तां सम्पूज्य ततोऽकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दन-कुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः भूवियद-निलानलजललक्षणाः पञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्च देवता देव्यग्रे-स्थिताः पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् ।

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण ता विलीना विभाव्य मूलविद्यामुच्चरन् जीवात्मानं देवीपादमूले लीनं विभाव्य हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तथैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् सङ्क्षोभिण्यादि-मुद्रा[1] भावयित्वा क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ।)

१. मुद्रास्तु पूजा-प्रकरणे द्रष्टव्याः ।

रश्मिमालामन्त्राः

'ॐ भूर्भुवःस्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् ।

(इति गायत्री, मूलाधारे) ॥१॥

'यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि ।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि ॥
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी ।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः ॥

(इत्यैन्द्री विद्या सप्तषष्ट्यर्णा सङ्कटे भयनाशिनी, हृदये) ॥२॥

'ॐ घृणिः सूर्य आदित्योम्' ।

(इत्यष्टार्णा सौरी तेजोदा फाले) ॥३॥

'ॐ'

(इति प्रणवः केवलो ब्रह्मविद्या मुक्तिप्रदा, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥४॥

'ॐ परो रजसेऽसावदोम्' ।

(इति नवार्णा तुरीया गायत्री स्वैक्यविमर्शिनी, द्वादशान्ते) ॥५॥

ॐ सूर्याक्षितेजसे नमः । खेचराय नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय । उष्णो भगवान् शुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।

विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥
ॐ नमो भगवते सूर्यायाहोवाहिनि वाहिन्यहोवाहिनि वाहिनि स्वाहा ।

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः ।
अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धि चक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान् ॥

पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः।

(इति षोडशमन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा, मूलाधारे) ॥६॥

'ॐ गन्धर्वराज विश्वावसो ममाभिलषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा'।
(इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी, हृदये) ॥७॥

'ॐ नमो रुद्राय पथिषदे स्वस्ति मां सम्पारय'।
(इति मार्गसङ्कटहारिणी, फाले) ॥८॥

'ॐ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा'।
(इति जलापच्छमनी, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥९॥

'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः'।
(इति महाव्याधिनाशिनी नामत्रयी विद्या, द्वादशान्ते) ॥१०॥

'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा'।
(इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी, मूलधारे) ॥११॥

'ॐ नमः शिवायै ॐ नमः शिवाय'।
(इति द्वादशार्णा शिवतत्त्वविमर्शिनी, हृदये) ॥१२॥

'ॐ जुं सः मां पालय पालय'।
(इति दशार्णा मृत्योरपि मृत्युरेषा विद्या, फाले) ॥१३॥

'ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वं ममामुष्य ॐ' ।

(इति श्रुतधारिणी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥१४॥

'अं आं..........अः कं खं..............क्षं' ।

(इति सबिन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णात्मिका मातृका सर्वज्ञवाकारी, द्वादशान्ते) ॥१५॥

'हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं' ।

(इति लोपामुद्राविद्या स्वस्वरूपविमर्शिनी, मूलाधारे) ॥१६॥

'क्लीं हैं ह्सौः स्हौः हैं क्लीं' ।

(इति षट्कूटा सम्पत्करी विद्या, हृदये) ॥१७॥

'सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणी कृशे चण्डकालि फट् हं स्थितिपूर्णे नमः सं सृष्टिनित्ये स्वाहा ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि' ।

(इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षिणी परमायुःप्रदा फाले) ॥१८॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं' ।

(इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥१९॥

'सौः' ।

(इयं परा विद्या । द्वादशान्ते) ॥२०॥

'ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं, ऐं क्लीं सौः' ।

(इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता, बाला) ॥२१॥

'श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा' ।

(इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता, अन्नपूर्णा) ॥२२॥

'ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा'।

(इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता, अश्वारूढा) ॥२३॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि नमः'।

(इति श्रीविद्यागुरुपादुका) ॥२४॥

'कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं'।

(इति मूलविद्या कादिनाम्नी। बाला, अन्नपूर्णा, अश्वारूढा, श्रीपादुका-चेत्येताभिश्चतसृभिर्युक्ता मूलविद्या साम्राज्ञी, मूलाधारे ध्येया) ॥२५॥

'ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा'।

(इति श्यामाङ्गभूता, लघुश्यामला) ॥२६॥

'ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा'।

(इयं श्यामाङ्गभूता, वाग्वादिनी) ॥२७॥

'ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्'।

(इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता, नकुलीविद्या) ॥२८॥

'ऐं क्लीं सौः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः'।

(इति श्यामा-गुरुपादुका) ॥२९॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजन-मनोहारि सर्वमुखरञ्जनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष-

वशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि (त्रैलोक्यं) 'अमुकं'[1] मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं'।

(इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिरङ्गोपाङ्गपादुकेत्येताभिश्चतसृभिर्विद्याभिः सहिता हृच्चक्रे ध्येया) ॥३०॥

'ल्हूं वाराहि ल्हूं उन्मत्तभैरविपादुकाभ्यां नमः'।

(इयं वार्ताल्यङ्गभूता, लघुवार्ताली) ॥३१॥

'ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा'।

(इयं वार्ताल्या उपाङ्गभूता, स्वप्नवाराही) ॥३२॥

'ऐं नमो भगवति महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु हुं फट् स्वाहा'।

(इयं वार्ताली प्रत्यङ्गभूता तिरस्करणी) ॥३३॥

'ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः'।

(एषा वार्ताली-गुरुपादुका) ॥३४॥

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः। रुन्धे रुन्धिनि नमः। जम्भे जम्भिनि नमः। मोहे मोहिनि नमः। स्तम्भे स्तम्भिनि नमः। सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट्।

(इति द्वादशोत्तरशताक्षरो महावाराहीमन्त्रः) ॥३५॥

---

१. प्रयोगसमयेऽत्र साध्यस्य नामोल्लेखः क्रियते वा त्रैलोक्यमिति।

(पूर्वोक्ताभिश्चतसृभिर्युक्तेयं महावाराही आज्ञाचक्रे ध्येया)
'कएईल हसकहल सकलह्रीं' । (इयं कादिपूर्तिविद्या ।)
'हसकल हसकहल सकल ह्रीं' (इयं हादिपूर्तिविद्या)
(इति श्रीपूर्तिविद्या, ब्रह्मरन्ध्रे ध्येया) ॥३६॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्ष-मलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः' ।
(इति सर्वमन्त्रसमष्टिरूपिणी महापादुका, द्वादशान्ते) ॥३७॥[1]

इति रश्मिमालामन्त्राः ।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत् तु यः ।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते ॥
(इति साङ्ख्यायनतन्त्रवचनेन गुरुमुखागमं विना जपस्य निषेधात् ॥)

प्रातःस्मरणम्

अहं देवी न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक् ।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तस्वभाववान् ॥
त्वमेवाहमहं त्वञ्च संविन्मात्रं वपुस्तव ।
आवयोरन्तरं देवि ! नश्यत्वाज्ञाबलात् तव ॥
अहं तीर्णो भवं घोरं कृत्यं किञ्चिन्न चास्ति मे ।
तथापि देहि मे मातराज्ञां तव सुसेवने ॥

१. रश्मिमाला-मन्त्राणाम् ऋष्यादयस्तु "श्रीविद्यारत्नाकरे" द्रष्टव्याः । रश्मिमालामन्त्रा आहत्य सप्तत्रिंशत् । एते ब्राह्मे मुहूर्ते सकृदावर्तनीयाः । सर्व एवेमे मन्त्राः श्रीगुरुमुखादवगत्यैव पठिता महते श्रेयसे नान्यथेति शिवशासनम् ।

कृत्वा समाधिस्थितया धिया ते, चिन्तां नवाधारनिवासभूताम् ।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं, संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये ॥
संसारयात्रामनुवर्तमानं तवाज्ञया श्रीत्रिपुरेश्वरेशि ! ।
स्पर्धा-तिरस्कार-कलि-प्रमाद-भयानि मां माऽभिभवन्तु मातः ॥
जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्तिर्जानाम्यधर्मं न च मे निवृत्तिः ।
त्वया हृषीकेशि ! हृदिस्थयाऽहं, यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि ॥

प्रातः प्रभृति-सायान्तं सायादि-प्रातरन्ततः ।
यत्करोमि जगद्योने ! तदस्तु तव पूजनम् ॥
मञ्जुसिञ्जितमञ्जीरं वाममर्धं महेशितुः ।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम् ॥

श्रीललितापञ्चकम्

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं,
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम् ।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं,
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम् ॥१॥
प्रातर्भजामि ललिताभुजकल्पवल्लीं,
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम् ।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां,
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥२॥
प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं,
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम् ।
पद्मासनादि-सुरनायकपूजनीयं,
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥३॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानीं,
त्र्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां,
विद्येश्वरीं निगमवाङ्मनसाऽतिदूराम् ॥४॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम,
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति,
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः,
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना,
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम् ॥६॥

भूप्रार्थना

समुद्रवसने देवि, पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादचारं क्षमस्व मे ॥

(इति भूमिं सम्प्रार्थ्य धरणीतलन्यस्तवहन्नाडीपार्श्वपादमुत्थाय ग्रामाद् बहिः स्मार्तेन विधिना शौचक्रमं निर्वर्तेत ।)

दन्तधावनादिविधिः

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजापशुवसूनि च ।
ब्रह्म प्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्ठमभिमन्त्र्य 'ऐं ह्रीं श्रीं, क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः' इति मन्त्रेण दन्तधावनं, 'ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं' इति जिह्वोल्लेखनं च विधाय कफविमोचननासाशोधनदूषिकानिरसनपूर्वकं विहितविंशतिगण्डूषः 'ऐं ह्रीं श्रीं' श्रीं, ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं-ह्रीं क्लीं, ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं हसकलह्रीं श्रीं', इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य, यथा स्मृत्याचामेत् ।

स्नानविधिः

(ततो नद्यादौ वैदिकस्नानोत्तरं 'श्रीललिताप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्य' इति सङ्कल्प्य जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य, तत्र)

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि, करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव, तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति सूर्यमभ्यर्थ्य—

आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इति गङ्गामर्थयित्वा 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्वां ह्वीं ह्वूं ह्वैं ह्वौं ह्वः 'क्रों' इत्यङ्कुशमुद्रया सूर्यमण्डलं भित्वा ततो गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं 'वं' इति सलिलबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य मुहुर्मुहुरावर्त्तयन् मूर्धनि त्रीनुदकाञ्ज-लीन् दत्त्वा त्रींश्च पीत्वा मूलमन्त्रपूर्वं 'श्रीललितां तर्पयामी'ति त्रिस्तर्पणं, मूलेन त्रिः प्रोक्षणञ्चात्मनो योनिमुद्रया विदध्यात् ।

(गृहे तु विना तर्पणम् । अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मनोरन्यतर-न्निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमन-प्रोक्षणे केवलं कुर्यात्) ।

सन्ध्याविधिः

(अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रो वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत्)। यथा—

मूलेन त्रिराचम्य, द्विः परिमृज्य, सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसौ नाभिं हृदयं शिरश्चाभिमृशेत्। एवं त्रिराचम्य, मूलमन्त्राभिमन्त्रितेन जलेन त्रिरात्मानञ्च प्रोक्ष्य, अञ्जलिना सलिलमादाय 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाश-शक्तिसहिताय स्वाहा' इति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्त्वा तन्मण्डले श्रीचक्रमनुचिन्त्य, तत्र ध्यायेत्—

ध्यायेत् कामेश्वराङ्कस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम्।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम्॥
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम्।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम्॥
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम्।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम्॥

ततः— 'ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि
ऐं ह्रीं श्रीं सकलह्रीं तन्नः क्लिन्ना प्रचोदयात्।'

(इति मन्त्रेण महेश्यै त्रिरर्घ्यं दत्त्वा, मूलेन त्रिः सन्तर्प्य)— जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारमावर्तयेत्। ततः पुनः कराङ्गन्यासादिकं कृत्वा जपं वक्ष्यमाणमन्त्रेण श्रीदेव्यै समर्प्याचम्य मण्डलस्थतीर्थं विसर्जनमुद्रया सूर्ये विसृजेत्। (इयमेकैव प्रातः सन्ध्यानुष्ठेया सूत्रकारमते)। अथ सपर्यासाधनानि सम्पाद्य ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेदिति शिवम्।

प्रथममाह्निकप्रकरणं समाप्तम्।

श्रीविद्यासपर्या-प्रकरणम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ।

ॐ श्रीमहागणपतये नमः ।

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोक-पर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ।

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं,
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्. द्व्यष्ट-चतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

यागमन्दिर-प्रवेशः

(द्वार-देवता-पूजनम्)

ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः। (द्वारस्य दक्षशाखायाम्)

३ भं भैरवाय नमः। (,, वामशाखायाम्)

३ लं लम्बोदराय नमः। (,, ऊर्ध्वशाखायाम्)

द्वारश्रियै नमः, देहल्यै नमः।

इति सम्पूज्य।

तत्त्वाचमनम्

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

३ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

३ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।

३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। (इत्याचामेत्)।

गुरुपादुकामन्त्रः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथ-श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्र-मुद्गर-योन्याख्याभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनि-मुद्रया महागणपतिं प्रणमेत्) ।

घण्टापूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे, घण्टाध्वनिविभूषिते ।
वादयन्ति परानन्दे, घण्टादेवं प्रपूजयेत् ॥
आगमार्थं च देवानां, गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
कुर्याद् घण्टारवं तत्र, देवताह्वानलाञ्छनम् ॥
(इति घण्टानादं कृत्वा)

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

(मूलेन प्राणानायम्य । देश-कालौ सङ्कीर्त्य)

मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यैः यथाशक्ति-सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वरं प्रीणयामि । (इति सङ्कल्पयेत्)

(तत आत्मानं अलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदनः सन् प्रमुदितचित्तः 'शिवोऽहम्' इति भावयेत्)

पुष्पशोधनम्

ॐ पुष्पकेतुराजार्हते शताय सम्यक् सम्बन्धाय ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पभूषिते पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा ।
(इति मन्त्राभिमन्त्रितजलेन पुष्पाणि सम्प्रोक्षयेत्) ।

आसनशुद्धिः

(दक्षिणहस्ते जलमादाय 'सौः' इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसनं प्रोक्षयेत्) ।

अस्य श्रीआसनमहामन्त्रस्य पृथिव्या मेरुपृष्ठऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसने विनियोगः ।

पृथ्वि त्वया धृता लोका, देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि, पवित्रं कुरु चासनम् ॥ (इति प्रोक्ष्य)

३ योगासनाय नमः, वीरासनाय नमः, शरासनाय नमः,

(आसनाधः मायाबीजं विलिख्य ।)

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥

(इति पुष्पाक्षतैः आसनमभ्यर्च्य आसने उपविशेत्) ।[1]

३ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः ।

(इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्) ।

देहरक्षा

३ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष ।

(इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा)

---

१. यदाशाभिमुखो मन्त्री त्रिपुरां परिपूजयेत् ।
देवी पश्चात्तदा प्राची प्रतीची त्रिपुरा पुरः ॥ (कुलार्णवे)

गुं गुरुभ्यो नमः । (दक्षबाहौ) गं गणपतये नमः । (वामबाहौ)
दुं दुर्गायै नमः । (दक्षोरौ) वं वटुकाय नमः । (वामोरौ)
यां योगिनीभ्यो नमः । (पादयोः) क्षं क्षेत्रपालाय नमः । (नाभौ)
पं परमात्मने नमः । (हृदये) इति प्रणम्य,

३ ॐ नमो भगवति तिरस्करणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ।

३ हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ।

३ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां-ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा ।

(इति परितो वह्निप्राकारं विभाव्य)

'भूर्भुवस्स्वरोम्' (इति छोटिकया दिग्बन्धः) ।

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम् ।
सञ्चिन्त्य परमाद्वैतभावनाऽमृतसेवया ॥
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः ।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसङ्कोचसङ्कटः ॥

इति मूलाधारात् कुण्डलीमुत्थाप्य ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा ततो गलितेनामृतेन स्वदेहं प्लावितं भावयेत् ।'

३ समस्तप्रकट-गुप्त-गुप्ततर-सम्प्रदाय-कुलोत्तीर्ण-निगर्भ-रहस्यातिरहस्य-परापरातिरहस्य-योगिनीदेवताभ्यो नमः ।

(इति समष्टिमन्त्रेण यन्त्रे पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा)

३ ऐं ह्लः अस्त्राय फट् (इति अस्त्रमन्त्रेण मुहरावृत्तेन अङ्गुष्ठादि-कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्) ।

३ श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते, भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन्, श्रीचक्रयजनाय मे ॥

३ अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

श्रीयन्त्रस्य लघुप्राणप्रतिष्ठा[1]

३ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोहं, हंसः शिवः श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥

३ आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

३ ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् । ज्योक् पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नस्स्वस्ति ॥

मन्दिरपूजा

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः ऐं ह्रीं श्रीं हरिचन्दनवाटिकायै नमः
,, रत्नद्वीपाय नमः ,, मन्दारवाटिकायै नमः
,, नानावृक्षमहोद्यानाय नमः ,, पारिजातवाटिकायै नमः
,, कल्पवाटिकायै नमः ,, कदम्बवाटिकायै नमः
,, सन्तानवाटिकायै नमः ,, पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः

---

१. प्रतिष्ठिते श्रीयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठा नास्त्यावश्यकी ।

३ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
,, गोमेदकरत्नप्राकाराय नमः
,, वज्ररत्नप्राकाराय नमः
,, वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
,, इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
,, मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
,, मरकतरत्नप्राकाराय नमः
,, विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
,, माणिक्यमण्डपाय नमः
,, सहस्रस्तम्भमण्डपाय नमः
,, अमृतवापिकायै नमः
,, आनन्दवापिकायै नमः
,, विमर्शवापिकायै नमः
,, बालातपोद्गाराय नमः
,, चन्द्रिकोद्गाराय नमः
,, महाश्रृङ्गारपरिघायै नमः
,, महापद्माटव्यै नमः
,, चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः

३ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
,, दक्षिणाम्नायमयदक्षिण-द्वाराय नमः
,, पश्चिमाम्नायमयपश्चिम-द्वाराय नमः
,, उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
,, रत्नप्रदीपवलयाय नमः
,, मणिमयमहासिंहासनाय नमः
,, ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
,, विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
,, रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
,, ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
,, सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः
,, हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
,, हंसतूलिकातल्पाय नमः
,, कौसुम्भास्तरणाय नमः
,, महावितानकाय नमः
,, महामायायवनिकायै नमः

(इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन् कुसुमाक्षतै-रभ्यर्चयेत्) ।

दीपपूजा

(स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन् निधाय दीपौ दीपान् वाऽभितः प्रज्वाल्य)—

ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि, शुभं भवतु मे सदा।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात् तावत्प्रज्वल सुस्थिरा ॥

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्। ततो मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य; मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन् दद्यात्)।

भूतशुद्धि-विधिः

(श्वाससमीरं पिङ्गलयाऽन्तराकृष्य)

ऐं ह्रीं श्रीं मूलशृङ्गाटकात् सुषुम्नापथेन जीवशिवं परमशिवे योजयामि स्वाहा।

(इति मन्त्रेण मूलाधारस्थितं जीवात्मानं सुषुम्नावर्त्मना ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेनैकीभूतं विभाव्य इडया (वामनासिकया) वायुं रेचयेत्)।

यं (इडया पूरयित्वा) सङ्कोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा।

(इति सङ्कोचशरीरं शोषितं विभाव्य पिङ्गलया (दक्षिणनासिकया) वायुं रेचयेत्)।

रं (पिङ्गलया पूरयित्वा) सङ्कोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा।

(इति प्लुष्टं भस्मीकृतं च विभाव्य इडया रेचयेत्)।

वं (इडया पूरयित्वा) परमशिवामृतं वर्षय वर्षय स्वाहा।

(इति तद्भस्म सहस्रारेन्दु मण्डलविगलदमृतरसेन सिक्तं च विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्)।

लं (पिङ्गलया पूरयित्वा) शाम्भवशरीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा।

(इति तद्भस्मनो दिव्यशरीरमुत्पन्नं विभाव्य इडया रेचयेत्)।

---

१. घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः ॥ दक्षवामभागौ देव्या एव।

ह्रीं (इडया पूरयित्वा) शिवशक्तिमयं शरीरं कुरु कुरु स्वाहा ।
(इति शिवशक्तिमयं शरीरं विभाव्य पिङ्गलया रेचयेत्) ।

हंसः सोहं (इति पिङ्गलया पूरयित्वा) अवतर अवतर शिवपदाद् जीव-सुषुम्नापथेन प्रविश मूलशृङ्गाटकमुल्लसोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंसः सोहं स्वाहा ।

(इति परमशिवेनैकीकृतं जीवं पुनः सुषुम्नावर्त्मना मूलाधारे स्थापितं सञ्चिन्त्य, इडया रेचयेत्) ।[1]

आत्मप्राणप्रतिष्ठा

(हृदि दक्षकरतलं निधाय ३ आं सोऽहमिति त्रिवारं पठेत् ।
एषः संक्षेपप्रकारः)

विस्तरेणेदं, हृदि हस्तं दत्त्वा—

ॐ आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथ गुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् ।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥

इति ध्यात्वा 'मम गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं मूलमन्त्रस्य पञ्चदशावृत्तीः करिष्ये' (इति सङ्कल्प्य पञ्चदशवारं प्रणवं स्वेष्टमन्त्रं वा आवर्तयेत् । ततः (मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायच्छेत्) ।

---

१. भूतशुद्धेः विशेषप्रकारस्तु "श्रीविद्यारत्नाकरे" द्रष्टव्यः ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

(इत्युच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रय-करास्फोटनत्रय-क्रूरदृष्ट्यवलोकन-तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्) ।

अथ, "नमः" (इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वाऽऽत्मानं श्रीदेवीरूपं भावयन्, स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं विदधीत) ।

मातृकान्यासः

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मणे ऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), श्रीमातृकासरस्वतीदेवतायै नमः (हृदि), हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः (गुह्ये), स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः (पादयोः), बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः (नाभौ), मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे) ।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।
३　इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः ।
,,　उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः ।
,,　एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
,,　ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
,,　अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

(अनेनैव क्रमेण मातृकामन्त्रोत्तरम् '१—हृदयाय नमः, २—शिरसे स्वाहा, ३—शिखायै वषट्, ४—कवचाय हुम्, ५—नेत्रत्रयाय वौषट्, ६—अस्त्राय फट्, इत्यादिभिः हृदयादिन्यासमारेत्) ।

(सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं च कृत्वा ध्यायेत्) ।

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो—
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था—
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि ॥

(लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा)—

अन्तर्मातृकान्यासः

(कण्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले)

३ अं नमः, आं नमः, इं नमः, ईं नमः, उं नमः, ऊं नमः, ऋं नमः, ॠं नमः, ऌं नमः, ॡं नमः, एं नमः, ऐं नमः, ओं नमः, औं नमः, अं नमः, अः नमः ।

(हृदये अनाहते द्वादशदलकमले)

३ कं नमः, खं नमः, गं नमः, घं नमः, ङं नमः, चं नमः, छं नमः, जं नमः, झं नमः, ञं नमः, टं नमः, ठं नमः ।

(नाभौ मणिपूरे दशदलकमले)

३ डं नमः, ढं नमः, णं नमः, तं नमः, थं नमः, दं नमः, धं नमः, नं नमः, पं नमः, फं नमः ।

(लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दलकमले)

३ बं नमः, भं नमः, मं नमः, यं नमः, रं नमः, लं नमः ।

(गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दलकमले)

३ वं नमः, शं नमः, षं नमः, सं नमः ।

,, हं नमः, क्षं नमः । (भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले)

,, अं नमः, आं नमः + + क्षं नमः ।

(५० वर्णाः मूर्ध्नि सहस्रारे)

बहिर्मातृकान्यासः

(मातृकाः त्रितारीपूर्विकाः स्वाङ्गेषु न्यसेत्) । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (शिरसि)
,, आं नमः (ललाटे)
,, इं नमः (दक्षनेत्रे)
,, ईं नमः (वामनेत्रे)
,, उं नमः (दक्षकर्णे)
,, ऊं नमः (वामकर्णे)
,, ऋं नमः (दक्षनासापुटे)
,, ॠं नमः (वामनासापुटे)
,, ऌं नमः (दक्षकपोले)
,, ॡं नमः (वामकपोले)
,, एं नमः (ऊर्ध्वोष्ठे)
,, ऐं नमः (अधरोष्ठे)
,, ओं नमः (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)
,, औं नमः (अधोदन्तपंक्तौ)
,, अं नमः (जिह्वाग्रे)
,, अः नमः (कण्ठे)
,, कं नमः (दक्षबाहुमूले)
,, खं नमः (दक्षकूर्परे)
,, गं नमः (दक्षमणिबन्धे)
,, घं नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)

३ ङं नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
,, चं नमः (वामबाहुमूले)
,, छं नमः (वामकूर्परे)
,, जं नमः (वाममणिबन्धे)
,, झं नमः (वामकराङ्गुलिमूले)
,, ञं नमः (वामकराङ्गुल्यग्रे)
,, टं नमः (दक्षोरुमूले)
,, ठं नमः (दक्षजानुनि)
,, डं नमः (दक्षगुल्फे)
,, ढं नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
,, णं नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
,, तं नमः (वामोरुमूले)
,, थं नमः (वामजानुनि)
,, दं नमः (वामगुल्फे)
,, धं नमः (वामपादाङ्गुलिमूले)
,, नं नमः (वामपादाङ्गुल्यग्रे)
,, पं नमः (दक्षपार्श्वे)
,, फं नमः (वामपार्श्वे)
,, बं नमः (पृष्ठे)
,, भं नमः (नाभौ)

ऐं ह्रीं श्रीं भं नमः (नाभौ) ३ शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्)
,, मं नमः (जठरे) ,, षं नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्)
,, यं नमः (हृदये) ,, सं नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्)
,, रं नमः (दक्षकक्षे) ,, हं नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्)
,, लं नमः (गलपृष्ठे) ,, ळं नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तम्)
,, वं नमः (वामकुक्षौ) ,, क्षं नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तम्)।

करशुद्धिन्यासः

३ अं नमः (दक्षकरतले)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (वामकरतले)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ अं नमः (मध्यमयोः)
३ आं नमः (अनामिकयोः)
३ सौः नमः (कनिष्ठिकयोः)
३ अं नमः (अङ्गुष्ठयोः)
३ आं नमः (तर्जन्योः)
३ सौः नमः (करतलकरपृष्ठयोः)।

आत्मरक्षान्यासः

३ ऐं क्लीं सौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष ।
(इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात्)।

बालाषडङ्गन्यासः

३ ऐं हृदयाय नमः
३ क्लीं शिरसे स्वाहा
३ सौः शिखायै वषट्
३ ऐं कवचाय हुं
३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
३ सौः अस्त्राय फट्।

चतुरासनन्यासः

३ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः (पादयोः)

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः श्रीचक्रासनाय नमः (जान्वोः)

३ ह्सै ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः (ऊरुमूले)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः

३ अं आं + + अः ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः (शिरसि)

३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (ललाटे)

३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (भ्रूमध्ये)

३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (कण्ठे)

३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (हृदये)

३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (नाभौ)

३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (गुह्ये)

३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (मूलाधारे)।

बहिश्चक्रन्यासः

३ अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)।

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (जान्वोः)

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहितगुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (ऊरुमूलयोः)।

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (नाभौ)।

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगीनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (हृदये)।

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहित-निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (कण्ठे)।

३ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राष्ठिात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहित-रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (मुखे)।

३ ह्स्रैं हस्क्लरीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (नेत्रयोः)।

३ "पञ्चदशी" बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः(मूर्ध्नि)।

अन्तश्चक्रन्यासः

३ अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (अधःसहस्रारे)।

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः। (मूलाधारे)।

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मक-सर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहित-गुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः। (स्वाधिष्ठाने)।

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (मणिपूरे)।

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मक-सर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (अनाहते)।

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहितनिगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (विशुद्धौ)।

३ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहितरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (लम्बिकाग्रे)।

३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मक-सर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनोरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (आज्ञायाम्)।

३ (पञ्चदशी) बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहितपरापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (सहस्रारे)।

(पुनः बिन्दुचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे)—

अं आं सौः नमः (बिन्दौ),

ऐं क्लीं सौः नमः (अर्धचन्द्रे),

ह्रीं क्लीं सौः नमः (रोधिन्याम्),

हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः (नादे),

ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः नमः (नादान्ते),

ह्रीं क्लीं ब्लें नमः (शक्तौ),

ह्रीं श्रीं सौः नमः (व्यापिकायाम्),

ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः नमः (समनायाम्),

(पञ्चदशी) नमः (उन्मनायाम्),

(षोडशी) नमः (ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ)।

कामेश्वर्यादिन्यासः

३ ऐं कएईलह्रीं अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक-आत्मतत्त्व—सृष्टिकृत्य--जाग्रद्दशाधिष्ठायकेच्छाशक्ति—-वाग्भवात्मक-वागीश्वरीस्वरूप-महाकामेश्वरीब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।
(मूलाधारे)।

३ क्लीं हसकहलह्रीं सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ-दशार-द्वय चतुर्दशारचक्रात्मक–विद्यातत्त्व–स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक–ज्ञान-शक्ति–कामराजात्मक–कामकलास्वरूप–महावज्रेश्वरी–विष्ण्वात्मशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः। (अनाहते)

३ सौः सकलह्रीं सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदल-षोडशदल-चतुरस्रचक्रात्मक-शिवतत्त्व-संहारकृत्य-सुषुप्ति-दशाधिष्ठायक-क्रिया-शक्ति-शक्तिबीजात्मक-परापरशक्ति-स्वरूप-महाभगमालिनी-रुद्रात्म-शक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः (आज्ञायाम्)।

३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं परब्रह्मचक्रे महोड्याण-पीठे चर्यानन्दनाथसमस्तचक्रात्मक-सपरिवार-परमतत्त्व-सृष्टिस्थिति-संहारकृत्य-तुरीयदशाधिष्ठायकेच्छा-ज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति-वाग्भव-कामराज-शक्तिबीजात्मक-परमशक्तिस्वरूप-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-परब्रह्मा-त्मशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि नमः (ब्रह्मरन्ध्रे)।

मूलविद्यान्यासः

अथ स्वेष्टमन्त्रस्य ऋष्यादिषडङ्गन्यासं यथोपदेशं कृत्वा—

३ कं नमः (शिरसि),
,, एं नमः (मूलाधारे),
,, ईं नमः (हृदि),
,, लं नमः (दक्षनेत्रे),
,, ह्रीं नमः (वामनेत्रे),
,, हं नमः (भ्रूमध्ये),
,, सं नमः (दक्षश्रोत्रे),
,, कं नमः (वामश्रोत्रे),
३ हं नमः (मुखे),
,, लं नमः (दक्षभुजे),
,, ह्रीं नमः (वामभुजे),
,, सं नमः (पृष्ठे),
,, कं नमः (दक्षजानुनि),
,, लं नमः (वामजानुनि),
,, ह्रीं नमः (नाभौ)।

षोडश्युपासकानां विशेषन्यासाः

(श्रीषोडशीमन्त्रस्य ऋष्यादि-न्यासान् विधाय)—

३ (मूलं) नमः। (दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत्।

(तत्र श्रीषोडशीं दीपाभां स्रवत्सुधारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा)—

ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) नमः। महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि।
(सौभाग्यदण्डिन्या मुद्रया वामकर्णसंवेष्टनपूर्वकं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। मम शत्रून्निगृह्णामि। (रिपुजिह्वाग्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। त्रैलोक्यस्याहं कर्ता। (त्रिखण्डया मुद्रया फाले न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। (त्रिखण्डया गलोर्ध्वमामस्तकं न्यसेत्,

,, (मूलं) नमः। (त्रिखण्डया मुद्रया मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादामस्तकं न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। (योनिमुद्रया मुखे न्यसेत्),

,, (मूलं) नमः। (योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत्)।

सम्मोहनन्यासः

३ (मूलं) (मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य। (मूलं) ब्रह्मरन्ध्रे अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्),

,, (मूलं) (मणिबन्धद्वये), (मूलं) (फाले),

,, (मूलं) (शाक्ततिलकं धारयेत्)।

महाषोडशाक्षरीन्यासः

(अथ त्रितारीनमस्सम्पुटितान् मूलविद्याषोडशार्णान् क्रमेण न्यसेत्। अत्र कूटत्रयस्य वर्णत्रयत्वेन षोडशार्णत्वव्यपदेशः)। यथा—

संहारन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः (पादयोः), ह्रीं नमः (जङ्घयोः), क्लीं नमः (जान्वोः), ऐं नमः (कटिभागद्वये), सौः नमः (पृष्ठे), ॐ नमः (लिङ्गे), ह्रीं नमः (नाभौ), श्रीं नमः (पार्श्वयोः), क ए ई ल ह्रीं नमः (स्तनयोः), हसकहलह्रीं नमः (अंसयोः), सकलह्रीं नमः (कर्णयोः), सौः नमः (मूर्ध्नि), ऐं नमः (मुखे) क्लीं नमः (नेत्रयोः), ह्रीं नमः (कर्णयुगसन्निधौ), श्रीं नमः (कर्णवेष्टनयोः)।

सृष्टिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः (ब्रह्मरन्ध्रे), ह्रीं नमः (फाले), क्लीं नमः (नेत्रयोः), ऐं नमः (कर्णयोः), सौः नमः (नासापुटयोः,), ॐ नमः (गण्डयोः), ह्रीं नमः (दन्तपंक्तौ), श्रीं नमः (ओष्ठयोः), क ए ई ल ह्रीं नमः (जिह्वायाम्), ह स क ह ल ह्रीं नमः (कण्ठे), सकलह्रीं नमः (पृष्ठे), सौः नमः (सर्वाङ्गे), ऐं नमः (हृदि), क्लीं नमः (स्तनयोः), ह्रीं नमः (उदरे), श्रीं नमः (लिङ्गे)।

स्थितिन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः (अङ्गुष्ठयोः), ह्रीं नमः (तर्जन्योः), क्लीं नमः (मध्यमयोः), ऐं नमः (अनामिकयोः), सौः नमः (कनिष्ठिकयोः), ॐ नमः (मूर्ध्नि), ह्रीं नमः (मुखे), श्रीं नमः (हृदि), कएईलह्रीं नमः (नाभौ), हसकहलह्रीं नमः (कण्ठादिनाभ्यन्तम्), सकलह्रीं नमः (मूर्धादिकण्ठान्तम्), सौः नमः (पादाङ्गुष्ठयोः), ऐं नमः (पादतर्जन्योः), क्लीं नमः (पादमध्यमयोः), ह्रीं नमः (पादानामिकयोः), श्रीं नमः (पादकनिष्ठिकयोः)।

(एते पूर्वोक्तन्यासाः कर्तव्या एव, अन्येषामकरणेन न प्रत्यवायः करणे त्वभ्युदय एव)।

लघुषोढान्यासः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः, (शिरसि), गायत्र्यै छन्दसे नमः, (मुखे), गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये), श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं आं ऐं — अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।
३ इं चं छं जं झं ञं ईं क्लीं — तर्जनीभ्यां नमः।
३ उं टं ठं डं ढं णं ऊं सौः — मध्यमाभ्यां नमः।
३ एं तं थं दं धं नं ऐं ऐं — अनामिकाभ्यां नमः।
३ ओं पं फं बं भं मं औं क्लीं — कनिष्ठिकाभ्यां नमः।
३ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

(एवमेव हृदयादिन्यासः।) ध्यानम् —

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
रक्तमाल्याम्बरालेपां रक्तभूषणभूषिताम्॥
पाशाङ्कुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
लसन्नेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्॥
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्॥

(इति श्रीदेवीं समष्टिरूपेण ध्यात्वा गणेशादीन् व्यष्टिरूपेण च ध्यायेत्)।

१– गणेशन्यासः

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान् ।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान् ॥
ते तु सिन्दूरवर्णाभाः सर्वालङ्कारभूषिताः ।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः ॥

(वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाधःकरपर्यन्तं गणेशानां पाशादिध्यानम् । शक्तीनान्तु वामकरे कमलं दक्षिणे च प्रियाश्लेष इति ध्यात्वा, मातृकास्थानेषु त्रितारीमातृकापूर्वकं गणेशान् न्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः (शिरसि),
३ आं ह्रींयुक्ताय विघ्नराजाय नमः (मुखवृत्ते) (ललाटे)
३ इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः (दक्षनेत्रे),
३ ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः (वामनेत्रे),
३ उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते नमः (दक्षकर्णे),
३ ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः (वामकर्णे)
३ ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजे नमः (दक्षनासापुटे),
३ ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः (वामनासापुटे),
३ ऌं कान्तियुक्ताय एकदन्ताय नमः (दक्षगण्डे),
३ ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः (वामगण्डे),
३ एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः (ऊर्ध्वोष्ठे),
३ ऐं जटायुक्ताय निरञ्जनाय नमः (अधरोष्ठे),
३ ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ),
३ औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः (अधोदन्तपंक्तौ),
३ अं नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय नमः (जिह्वाग्रे),

३	अः	सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय नमः	(कण्ठे),
३	कं	कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः	(दक्षबाहुमूले),
३	खं	सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः	(दक्षकूर्परे),
३	गं	जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः	(दक्षमणिबन्धे),
३	घं	सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः	(दक्षकराङ्गुलिमूले)
३	ङं	विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
३	चं	सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः	(वामबाहुमूले),
३	छं	कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः	(वामकूर्परे),
३	जं	मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः	(वाममणिबन्धे),
३	झं	विकटायुक्ताय आमोदाय नमः	(वामकराङ्गुलिमूले),
३	ञं	पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः	(वामकराङ्गुल्यग्रे),
३	टं	भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः	(दक्षोरुमूले),
३	ठं	भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः	(दक्षजानुनि),
३	डं	शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः	(दक्षगुल्फे),
३	ढं	रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),
३	णं	मानुषीयुक्ताय शूराय नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
३	तं	मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः	(वामोरुमूले),
३	थं	वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः	(वामजानुनि),
३	दं	भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः	(वामगुल्फे),
,,	धं	लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले)
,,	नं	दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे),
,,	पं	धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय[1] नमः	(दक्षपार्श्वे),

१. नित्याषोडशिकार्णवे तु द्वितुण्डाय नमः इति पाठः ।

३ फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः (वामपार्श्वे),
,, बं रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः (पृष्ठे),
,, भं चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः (नाभौ),
,, मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः (जठरे),
,, यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः (हृदये),
,, रं चपलायुक्ताय जटिने नमः (दक्षस्कन्धे),
,, लं ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः (गलपृष्ठे)
,, वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः (वामस्कन्धे)
,, शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्),
,, षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्)
३ सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्),
३ हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्),
३ ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः (हृदयादिगुह्यान्तम्),
३ क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः (हृदयादिमूर्धान्तम्) ।

२– ग्रहन्यासः

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम् ।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद् रविपूर्वकान् ॥
कामरूपधरान् देवान् दिव्याभरणभूषितान् ।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान् ॥
शक्तयोऽपि तथा ध्येया वराभयकराम्बुजाः ।
स्वस्वप्रियाङ्कनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः ॥ (इति ध्यात्वा)—

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः (हृदयाधो हृज्जठरसन्धौ)

३ यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः (भ्रूमध्ये),

,, कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः (नेत्रयोः),

,, चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः (श्रोत्रकूपाधः),

,, टं ठं डं ढं णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः (कण्ठे),

,, तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः (हृदि),

,, पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः (नाभौ),

,, शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः (मुखे),

,, ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः (गुदे), ।

३– नक्षत्रन्यासः

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणयः ।
नतिपाण्योऽश्विनपूर्वाः सर्वाभरणभूषिताः ॥ इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं अश्विन्यै नमः (ललाटे),

३ इं भरण्यै नमः (दक्षनेत्रे),

,, ईं उं ऊं कृत्तिकायै नमः (वामनेत्रे),

,, ऋं ॠं ऌं ॡं रोहिण्यै नमः (दक्षकर्णे),

,, एं मृगशिरसे नमः (वामकर्णे),

,, ऐं आर्द्रायै नमः (दक्षनासापुटे),

,, ओं औं पुनर्वसवे नमः (वामनासापुटे),

,, कं पुष्याय नमः (दक्षस्कन्धे),

३ खं गं आश्लेषायै नमः (कण्ठे),
,, घं ङं मघायै नमः (वामस्कन्धे),
,, चं पूर्वफाल्गुन्यै नमः (पृष्ठे),
,, छं जं उत्तरफाल्गुन्यै नमः (दक्षकूर्परे),
,, झं ञं हस्ताय नमः (वामकूर्परे),
,, टं ठं चित्रायै नमः (दक्षमणिबन्धे),
,, डं स्वात्यै नमः (वाममणिबन्धे),
,, ढं णं विशाखाय नमः (दक्षहस्ते),
,, तं थं दं अनुराधायै नमः (वामहस्ते),
,, धं ज्येष्ठायै नमः (नाभौ),
,, नं पं फं मूलाय नमः (कटिबन्धे),
,, बं पूर्वाषाढायै नमः (दक्षोरौ),
,, भं उत्तराषाढायै नमः (वामोरौ),
,, मं श्रवणाय नमः (दक्षजानुनि),
,, यं रं धनिष्ठायै नमः (वामजानुनि),
,, लं शततारकायै नमः (दक्षजङ्घायाम्),
,, वं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः (वामजङ्घायाम्),
,, षं सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः (दक्षपादे),
,, ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः (वामपादे)।

४— योगिनीन्यासः

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदकमले श्वेतवर्णां त्रिनेत्रां,
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्मसन्धारयन्तीम् ।

वक्त्रेणैकेन युक्तां, पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां,
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्याम् ॥
(इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं डां डीं ड म ल व र यूं डाकिन्यै नमः।
ॽ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः
ां रक्ष रक्ष त्वगात्मानं नमः।

(इति मन्त्रेण कण्ठस्थषोडशदलविशुद्धिकमलकर्णिकायां डाकिनीं
यस्य तद्दलेषु पुरोभागादि प्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीर्न्यसेत्)। यथा-,
ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृतायै नमः; आं आकर्षिण्यै नमः, इं इन्द्राण्यै नमः,
ईशान्यै नमः, उं उमायै नमः, ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, ऋं ऋद्धिदायै नमः,
ं ॠकारायै नमः, ऌं ऌकारायै नमः, ॡं ॡकारायै नमः,
एकपदायै नमः, ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, ओं ओंकारायै नमः,
ं औषध्यै नमः, अं अम्बिकायै नमः, अः अक्षरायै नमः (इति)।

हृत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलसितां दंष्ट्रिणीं श्यामवर्णा-
मक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्तीं त्रिनेत्राम्।
रक्तस्थां कालरात्रिप्रभृतिपरिवृतां स्निग्धभक्तैकसक्तां,
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदां राकिणीं भावयामः ॥
(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं रां रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः;
कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगात्मानं नमः'।
(इति हृदयस्थितद्वादशदलानाहतनलिनकर्णिकायां राकिणीं न्यस्य
द्दलेषु प्राग्वत् तदावरणशक्तीर्न्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्लीं श्रीं कं कालरात्र्यै नमः, खं खण्डितायै नमः, गं गायत्र्यै नमः, घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, ङं ङार्णायै नमः, चं चण्डायै नमः, छं छायायै नमः, जं जयायै नमः, झं झङ्कारिण्यै नमः, ञं ज्ञानरूपायै नमः, टं टङ्कहस्तायै नमः, ठं ठङ्कारिण्यै नमः, (इति)।

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसितां दंष्ट्रिणीं रक्तवर्णां,
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्तीं महोग्राम्।
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठां,
गौडान्नासक्तचित्तां सकलसुखकरीं लाकिनीं भावयामः॥ (इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्लीं श्रीं लां लीं ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः।
३ डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मां रक्ष रक्ष मांसात्मानं नमः'।

(इति नाभिगतदशदलमणिपूरकसरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तत्परिवारशक्तीन्र्न्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्लीं श्रीं डं डामर्यै नमः, ढं ढङ्कारिण्यै नमः, णं णार्णायै नमः, तं तामस्यै नमः, थं स्थाण्व्यै नमः, दं दाक्षायण्यै नमः, धं धात्र्यै नमः, नं नार्यै नमः, पं पार्वत्यै नमः, फं फट्कारिण्यै नमः। तदनु—

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिनेत्रां,
हस्ताब्जैर्धारयन्तीं त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्तां,
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः॥ (इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्लीं श्रीं कां कीं क म ल व र यूं काकिन्यै नमः,
ऐं ह्लीं श्रीं बं भं मं यं रं लं मां रक्ष रक्ष मेद आत्मानं नमः'।

(इति गुह्यस्थानगतषड्दलस्वाधिष्ठानसरोजकर्णिकायां काकिनीं न्यस्य तद्दलेषु तदावरणशक्तीः प्राग्वन्न्यसेत्)। यथा —

ऐं ह्रीं श्रीं बं बन्धिन्यै नमः, भं भद्रकाल्यै नमः, मं महामायायै नमः, यं यशस्विन्यै नमः, रं रक्तायै नमः, लं लम्बोष्ठ्यै नमः। ततः —

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिनेत्रां,
धूम्राभामस्थिसंस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम्।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां,
मुद्गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनीं भावयामः॥

(इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं वं शं षं सं मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः'

(इति पायूपस्थमध्यगतचतुर्दलमूलाधारकमलकर्णिकायां साकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तदावृतशक्तीर्न्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं वं वरदायै नमः, शं श्रियै नमः, षं षण्डायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः। तदनु —

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै-
र्बिभ्राणां ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम्।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्थां त्रिनयनलसितां हंसवत्यादियुक्तां,
हारिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरीं हाकिनीं भावयामः॥

(इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं ह म ल व र यूं हाकिन्यै नमः।
ऐं ह्रीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष रक्ष मज्जात्मानं नमः'

(इति भ्रूमध्यगतद्विदलाज्ञा-चक्र-कर्णिकायां हाकिनीं न्यस्य तद्दक्ष-वामदलयोः क्रमेण तच्छक्तिद्वयं न्यसेत्) ।

'ऐं ह्रीं श्रीं हं हंसवत्यै नमः, क्षं क्षमावत्यै नमः ।' तदनु—

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्थां,
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम् ।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृतां सर्ववर्णां भवानीं,
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनीं भावयामः ॥

(इति ध्यात्वा)

'ऐं ह्रीं श्रीं यां यीं य म ल व र यूं याकिन्यै नमः ।
ऐं ह्रीं श्रीं अं आं······ ··क्षं (५०) मां रक्ष रक्ष शुक्रात्मानं नमः ।'

(इति ब्रह्मरन्ध्रगतसहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्दलेषु प्रतिविंशतिदलं तदावरणशक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्वन्न्यसेत्) ।

५—राशिन्यासः

रक्तश्वेतहरित्पाण्डुचित्रकृष्णपिशङ्गकान् ।
कपिशबभ्रुकिर्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमात् स्मरेत् ॥

(इति ध्यात्वा)

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं मेषाय नमः (दक्षिणपादे),
" उं ऊं वृषाय नमः (लिङ्गदक्षभागे),
" ऋं ॠं लृं ॡं मिथुनाय नमः (दक्षकुक्षौ),
" एं ऐं कर्काय नमः (हृदयदक्षभागे),
" ओं औं सिंहाय नमः (दक्षबाहुमूले),

३ अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः (दक्षशिरोभागे),
„ कं खं गं घं ङं तुलायै नमः (वामशिरोभागे),
„ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः (वामबाहुमूले),
„ टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः (हृदयवामभागे),
„ तं थं दं धं नं मकराय नमः (वामकुक्षौ),
„ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः (लिङ्गवामभागे),
„ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः (वामपादे)।

६—पीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात्।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः॥

(इति भावयित्वा मातृकाभिस्समं पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं अं कामरूपाय नमः (शिरसि),
३ आं वाराणस्यै नमः (मुखवृत्ते)-(ललाटे)
„ इं नेपालाय नमः (दक्षनेत्रे),
„ ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः (वामनेत्रे),
„ उं पुरस्थितकाश्मीराय नमः (दक्षकर्णे),
„ ऊं कान्यकुब्जाय नमः (वामकर्णे),
„ ऋं पूर्णशैलाय नमः (दक्षनासापुटे),
„ ॠं अर्बुदाचलाय नमः (वामनासापुटे),
„ ऌं आम्रातकेश्वराय नमः (दक्षगण्डे),

३	लॄं एकाम्राय नमः	(वामगण्डे),
,,	एं त्रिस्रोतसे नमः	(ऊर्ध्वोष्ठे),
,,	ऐं कामकोटये नमः	(अधरोष्ठे),
,,	ओं कैलासाय नमः	(ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ),
,,	औं भृगुनगराय नमः	(अधोदन्तपङ्क्तौ),
,,	अं केदाराय नमः	(जिह्वाग्रे),
,,	अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः	(कण्ठे),
,,	कं श्रीपुराय नमः	(दक्षबाहुमूले),
,,	खं ओङ्काराय नमः	(दक्षकूर्परे),
,,	गं जालन्धराय नमः	(दक्षमणिबन्धे),
,,	घं मालवाय नमः	(दक्षकराङ्गुलिमूले),
,,	ङं कुलान्तकाय नमः	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
,,	चं देवीकोटाय नमः	(वामबाहुमूले),
,,	छं गोकर्णाय नमः	(वामकूर्परे),
,,	जं मारुतेश्वराय नमः	(वाममणिबन्धे),
,,	झं अट्टहासाय नमः	(वामकराङ्गुलिमूले),
,,	ञं विरजायै नमः	(वामकराङ्गुल्यग्रे),
,,	टं राजगेहाय नमः	(दक्षोरुमूले),
,,	ठं महापथाय नमः	(दक्षजानुनि),
,,	डं कोलापुराय नमः	(दक्षगुल्फे),
,,	ढं एलापुराय नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),
,,	णं कालेश्वराय नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे),

३	तं जयन्तिकायै नमः	(वामोरुमूले),
,,	थं उज्जयिन्यै नमः	(वामजानुनि),
,,	दं चित्रायै नमः	(वामगुल्फे),
,,	धं क्षीरिकायै नमः	(वामपादाङ्गुलिमूले),
,,	नं हस्तिनापुराय नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रे),
,,	पं उड्डीशाय नमः	(दक्षपार्श्वे),
,,	फं प्रयागाय नमः	(वामपार्श्वे),
,,	बं षष्ठीशाय नमः	(पृष्ठे),
,,	भं मायापुर्यै नमः	(नाभौ),
,,	मं जलेशाय नमः	(जठरे),
,,	यं मलयाय नमः	(हृदये),
,,	रं श्रीशैलाय नमः	(दक्षस्कन्धे),
,,	लं मेरवे नमः	(गलपृष्ठे),
,,	वं गिरिवराय नमः	(वामस्कन्धे),
,,	शं महेन्द्राय नमः	(हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्),
,,	षं वामनाय नमः	(हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्),
,,	सं हिरण्यपुराय नमः	(हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्),
,,	हं महालक्ष्मीपुराय नमः	(हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्),
,,	ळं ओड्याणाय नमः	(हृदयादिगुह्यान्तम्),
,,	क्षं छायाच्छत्राय नमः	(हृदयादिमूर्धान्तम्) ।

(इति लघु-षोढान्यासः समाप्तः)

———

अथ श्रीचक्रन्यासः

(अस्य श्रीश्रीचक्रन्यासस्येत्यनन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्याह्निकप्रकरणोक्तवद् ध्यात्वा श्रीदेव्याः समष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा —

शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम् ।
त्वगाद्याकारनिर्मुक्तज्वलत्कालाग्निसन्निभम् ॥

(इति च ध्यात्वा) —

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः (इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य),

ऐं ह्रीं श्रीं गं गणपतये नमः (दक्षोरौ)
३ क्षं क्षेत्रपालाय नमः (दक्षांसे),
,, यां योगिनीभ्यो नमः (वामांसे),
,, वं वटुकाय नमः (वामोरौ),
,, लं इन्द्राय नमः (पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे),
,, रं अग्नये नमः (दक्षजानुनि),
,, टं यमाय नमः (दक्षपार्श्वे),
,, क्षं निर्ऋतये नमः (दक्षांसे),
,, वं वरुणाय नमः (मूर्ध्नि),
,, यं वायवे नमः (वामांसे),
,, सं सोमाय नमः (वामपार्श्वे),
,, हं ईशानाय नमः (वामजानुनि),
,, हंसः ब्रह्मणे नमः (मूर्ध्नि),
,, अं अनन्ताय नमः (मूलाधारे),

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

'ऐं ह्लीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः'

(इति व्यापकं न्यस्य ततः 'ऐं ह्लीं श्रीं आद्यचतुरस्त्ररेखायै नमः' इति च व्यापकं न्यस्य दक्षांसपृष्ठादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत्)। यथा—

ऐं ह्लीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षांसपृष्ठे),
,, लघिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षपाण्यङ्गुल्यग्रेषु),
,, महिमासिद्ध्यै नमः	(दक्षोरुसन्धौ),
,, ईशित्वसिद्ध्यै नमः	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रेषु),
,, वशित्वसिद्ध्यै नमः	(वामपादाङ्गुल्यग्रेषु),
,, प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः	(वामोरुसन्धौ),
,, भुक्तिसिद्ध्यै नमः	(वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु),
,, इच्छासिद्ध्यै नमः	(वामांसपृष्ठे),
,, प्राप्तिसिद्ध्यै नमः	(शिखामूले),
,, सर्वकामसिद्ध्यै नमः	(शिरःपृष्ठे),

ऐं ह्लीं श्रीं चतुरस्त्रमध्यरेखायै नमः (इति व्यापकं न्यस्य वक्ष्यमाणाङ्गेषु),

ऐं ह्लीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः	(पादाङ्गुष्ठद्वये),
,, माहेश्वर्यै नमः	(दक्षपार्श्वे)
,, कौमार्यै नमः	(मूर्ध्नि),
,, वैष्णव्यै नमः	(वामपार्श्वे),
,, वाराह्यै नमः	(वामजानुनि),
,, इन्द्राण्यै नमः	(दक्षजानुनि),
,, चामुण्डायै नमः	(दक्षांसे),
,, महालक्ष्म्यै नमः	(वामांसे),

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः (इति व्यापकं न्यस्य वक्ष्यमाणाङ्गेषु),
ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः (पादाङ्गुष्ठद्वये),
३ सर्वविद्राविण्यै नमः (दक्षपार्श्वे),
,, सर्वाकर्षिण्यै नमः (मूर्ध्नि),
,, सर्ववशङ्कर्यै नमः (वामपार्श्वे),
,, सर्वोन्मादिन्यै नमः (वामजानुनि),
,, सर्वमहाङ्कुशायै नमः (दक्षजानुनि),
,, सर्वखेचर्यै नमः (दक्षांसे),
,, सर्वबीजायै नमः (वामांसे),
,, सर्वयोनये नमः (द्वादशान्ते),
,, सर्वत्रिखण्डायै नमः (पादाङ्गुष्ठद्वये),
ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः (हृदये),

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयस्सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्तास्सन्तु ।

(इति हृदि चक्रसमर्पणं न्यसेत्)

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्रीं श्रीं कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकर्णपृष्ठे),
,, बुद्ध्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षांसे),
,, अहङ्काराकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकूर्परे),
,, शब्दाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षकरपृष्ठ-करतलयोः),
,, स्पर्शाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षस्फिचि दक्षोरौ),

३ रूपाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षजानुनि),
„ रसाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षगुल्फे),
„ गन्धाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (दक्षपादतले दक्षप्रपदे),
„ चित्ताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामपादतले वामप्रपदे),
„ धैर्याकर्षियै नित्याकलायै नमः (वामगुल्फे),
„ स्मृत्याकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामजानुनि),
„ नामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामोरौ, वामस्फिचि),
„ बीजाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामकरपृष्ठ-वामकरतलयोः),
„ आत्माकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामकूर्परे),
„ अमृताकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः (वामांसे),
„ शरीराकर्षिण्ये नित्याकलायै नमः (वामकर्णपृष्ठे),
„ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नमः (हृदये),

एता गुप्तयोगिन्यस्सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः, सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु ।

सर्वसंक्षोभणचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः (दक्षशङ्खे) (ललाटदक्षभागे),
„ अनङ्गमेखलायै नमः ((दक्षजत्रुणि) (दक्षबाहुमूलसन्धौ),
„ अनङ्गमदनायै नमः (दक्षोरौ),
„ अनङ्गमदनातुरायै नमः (दक्षगुल्फे),
„ अनङ्गरेखायै नमः (वामगुल्फे),
„ अनङ्गवेगिन्यै नमः (वामोरौ),

,, अनङ्गाङ्कुशायै नमः (वामजत्रुणि) (वामबाहुमूलसन्धौ),
,, अनङ्गमालिन्यै नमः (वामशङ्खे) (ललाट-वामभागे),
ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः (हृदये)।

एता गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः।
(इति व्यापकं न्यस्य),

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः (ललाटमध्ये),
३ सर्वविद्राविण्यै नमः (ललाटदक्षभागे),
,, सर्वाकर्षिण्यै नमः (दक्षगण्डे),
,, सर्वाह्लादिन्यै नमः (दक्षांसे),
,, सर्वसम्मोहिन्यै नमः (दक्षपार्श्वे),
,, सर्वस्तम्भिन्यै नमः (दक्षोरौ),
,, सर्वजृम्भिण्यै नमः (दक्षजङ्घायाम्),
,, सर्ववशङ्कर्यै नमः (वामजङ्घायाम्),
,, सर्वरञ्जन्यै नमः (वामोरौ),
,, सर्वोन्मादिन्यै नमः (वामपार्श्वे),
,, सर्वार्थसाधिन्यै नमः (वामांसे),
,, सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः (वामगण्डे),
,, सर्वमन्त्रमय्यै नमः (ललाटवामभागे),
,, सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः (शिरःपृष्ठे),

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः (हृदये)।

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः

(इति व्यापकं न्यस्य),

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसिद्धिप्रदायै नमः (दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे),

३ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः (नासामूले, दक्षसृक्किणि, (ओष्ठप्रान्ते),

,, सर्वप्रियङ्कर्यै नमः (वामनेत्रे, दक्षस्तने),

,, सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः (वामबाहुमूले, दक्षवृषणे),

,, सर्वकामप्रदायै नमः (वामोरुमूले, सीविन्या[1] दक्षभागे),

,, सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः (वामजानुनि, सीविन्या वामभागे),

,, सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः (दक्षजानुनि, वामस्तने),

,, सर्वविघ्नविनाशिन्यै नमः (गुदे, वामवृषणे),

,, सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः (दक्षोरुमूले वामसृक्विणि),

,, सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः (दक्षबाहुमूले, वामनासापुटे),

,, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः(हृदये)।

एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

---

१. सीविनी—अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा।

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

ऐं ह्लीं श्रीं ह्लौं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
ऐं ह्लीं श्रीं सर्वज्ञायै नमः (दक्षनासापुटे),
३ सर्वशक्त्यै नमः (दक्षसृक्विणि),
,, सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः (दक्षस्तने),
,, सर्वज्ञानमय्यै नमः (दक्षमुष्के),
,, सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः (सीविन्या दक्षभागे),
,, सर्वाधारस्वरूपायै नमः (वाममुष्के सीविन्या बामभागे),
,, सर्वपापहरायै नमः (वामस्तने),
,, सर्वानन्दमय्यै नमः (वामसृक्विणि),
,, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः (वामनासापुटे),
,, सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः (नासाग्रे),
,, ह्लीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः (हृदि)।

एता निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु।

सर्वरोगहरचक्रन्यासः

ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
३ अं....अः (१६) ब्लूं वशिनीवादेवतायै नमः (दक्षचिबुके),
,, कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (दक्षकण्ठे),
,, चं छं जं झं ञं न्ब्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (हृदयदक्षभागे),
,, टं ठं डं ढं णं य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (नाभिदक्षभागे),

३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (नाभिवामभागे),
,, पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (हृदयवामभागे),
,, यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (वामकण्ठे),
,, शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (वामचिबुके),
,, ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः (हृदि),

एता रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वा न्यस्ताः सन्तु ।

आयुधन्यासः

(अथ हृदि त्रिकोणं विभाव्य तत्र प्रागादिदिक्षु क्रमेणायुधानां चतुष्टयं न्यसेत् यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नमः (त्रिकोणपृष्ठे),
३ धं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः (त्रिकोणदक्षे, स्ववामे)
,, ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः (त्रिकोणाग्रे)
,, क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नमः (त्रिकोणवामे, स्वदक्षभागे)

सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यासः

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
,, (मूलप्रथमकूटं) कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः (त्रिकोणाग्रकोणे),
,, (मूलद्वितीयकूटं) पूर्णगिरिपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः (तद्दक्षकोणे),
,, (मूलतृतीयकूटं) जालन्धरपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नमः (तद्वामकोणे),
ऐं ह्रीं श्रीं (मूलं) ओड्याणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः (तन्मध्ये),

(अथ तदन्तस्सपर्या—प्रकरणोक्तप्रकारेण षोडशस्वरान् विभाव्य षोडशनित्या न्यसेत् ।
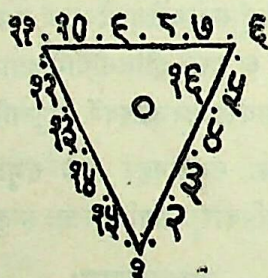
यथा— मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्यग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं इति, उत्तररेखायां, ईशानादिवारुण्यन्तं एं ऐं ओं औं अं इति पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत् । बिन्दौ षोडशं स्वरं (अः) विचिन्त्य महानित्यां न्यसेत्) । यथा—

३ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै नमः ।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगाह्वये भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै नमः ।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै नमः ।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं भ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै नमः ।

३ उं ओं ह्लीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै नमः ।
३ ऊं ह्लीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्लीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै नमः ।
३ ऋं ह्लीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूतीनित्यायै नमः ।
३ ऋं ॐ ह्लीं हुं खे च छे क्षः स्त्री हुं क्षें ह्लीं फट् ऋं त्वरितानित्यायै नमः
३ ऌं ऐं क्लीं सौं ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै नमः ।
३ ॡं ह्स्क्लर्डैं ह्स्क्लर्डीं ह्स्क्लर्डौः ॡं नित्यानित्यायै नमः ।
३ एं ह्लीं फ्रें स्त्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमद्रवे हुँ फ्रें ह्लीं एं नीलपताका-नित्यायै नमः ।
३ ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजया नित्यायै नमः ।
३ ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै नमः ।
३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्लां ह्लीं ह्लूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै नमः ।
३ अं च्क्रौं अं चित्रानित्यायै नमः ।
३ अः 'पञ्चदशी' अः ललितामहानित्यायै नमः । (बिन्दौ)
३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः (हृदि) ।
एता अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः (इत्यादि प्राग्वत्) ।

सर्वानन्दमयचक्रन्यासः

ऐं ह्लीं श्रीं (मूलं) सर्वानन्दमयचक्राय नमः (इति व्यापकं न्यस्य),
३ (मूलं) श्रीललितायै नमः (हृदयमध्ये),
,, एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा न्यस्ताऽस्तु ।

३ (मूलं) सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः (इति हृदि न्यस्य), योनिमुद्रां प्रदर्श्य मूलं जपित्वा च पुनः कराङ्गन्यासं कुर्यात्) ।[1]

इति श्रीचक्रन्यासः

अथ महाषोढान्यासः[2]

प्रपञ्चो भुवनं मूर्तिर्मन्त्रदैवतमातरः ।
महाषोढाह्वयो न्यासः सर्वन्यासोत्तमोत्तमः ॥

अस्य श्रीमहाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः श्री अर्धनारीश्वरो देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगः (इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा मूर्धादिषु विन्यस्याऽङ्गन्यासं[3] कुर्यात्) ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (६) इति षडक्षरमन्त्रपूर्वकं सर्वं न्यसेत्) । यथा–

,, ह्रों ईशानाय नमः (अङ्गुष्ठयोः),
,, हें तत्पुरुषाय नमः (तर्जन्योः),
,, हुं अघोराय नमः (मध्यमयोः),
,, हिं वामदेवाय नमः (अनामिकयोः),
,, हं सद्योजाताय नमः (कनिष्ठिकयोः),
,, ह्रों ईशानाय नमः (मूर्ध्नि),
,, हें तत्पुरुषाय नमः (मुखे),
,, हुं अघोराय नमः (हृदये),

१. इमौ पूर्वोक्तौ लघुषोढाचक्रन्यासौ श्रीमहाषोडशाक्षरीदीक्षितेभ्योऽपि समानौ ।

२. केवलं पूर्णाभिषिक्तानां श्रीमहाषोडश्युपासकानां कृते ।

३. अङ्गन्यासस्तु —अङ्गुलीदेहवक्त्रात्मकः ।

६ हिं वामदेवाय नमः (गुह्ये)
,, हं सद्योजाताय नमः (पादयोः)
,, हों ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः (मूर्ध्नि अङ्गुष्ठेन)
,, हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः (मुखे, तर्जन्या),
,, हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः (दक्षकर्णे, मध्यमया),
,, हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः (वामकर्णे, अनामिकया),
,, हं सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः (चोरकूपे, कण्ठाधः, कनिष्ठया)

(अयं पञ्चवक्त्रन्यासः क्रमेणाङ्गुष्ठादिपञ्चाङ्गुलीभिरेकैकाङ्गुलिनैकैकवक्त्रे न्यस्तव्यः। एवं न्यासं विधाय ततो "ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं ह्सौः ह्सः" इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा वक्ष्यमाणरूपं देवं हृदये ध्यात्वा न्यसेत्)।

ओघप्रकारान्तरेण ध्यानम्—

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे ॥

१— प्रपञ्चन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं प्रपञ्चरूपायै श्रिये नमः (शिरसि),
६ आं द्वीपरूपायै मायायै नमः (मुखवृत्ते) (ललाटे),
,, इं जलधिरूपायै कमलायै नमः (दक्षनेत्रे),
,, ईं गिरिरूपायै विष्णुवल्लभायै नमः (वामनेत्रे),
,, उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः (दक्षकर्णे),
,, ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः (वामकर्णे),
,, ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः (दक्षनासापुटे),
,, ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः (वामनासापुटे);

६	ऌं	आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः	(दक्षगण्डे),
,,	ॡं	गुहारूपायै मायायै नमः	(वामगण्डे),
,,	एं	नदीरूपायै रमायै नमः	(ऊर्ध्वोष्ठे),
,,	ऐं	चत्वररूपायै पद्मायै नमः	(अधरोष्ठे),
,,	ओं	उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः	(ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ),
,,	औं	स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः	(अधोदन्तपंक्तौ),
,,	अं	अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः	(जिह्वाग्रे),
,,	अः	जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः	(कण्ठे),
,,	कं	लवरूपायै आर्यायै नमः	(दक्षबाहुमूले),
,,	खं	त्रुटिरूपायै उमायै नमः	(दक्षकूर्परे),
,,	गं	कलारूपायै चण्डिकायै नमः	(दक्षमणिबन्धे),
,,	घं	काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः	(दक्षकराङ्गुलिमूले),
,,	ङं	निमेषरूपायै शिवायै नमः	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे),
,,	चं	श्वासरूपायै अपर्णायै नमः	(वामबाहुमूले),
,,	छं	घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः	(वामकूर्परे),
,,	जं	मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः	(वाममणिबन्धे),
,,	झं	प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः	(वामकराङ्गुलिमूले),
,,	ञं	दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः	(वामकराङ्गुल्यग्रे),
,,	टं	सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः	(दक्षोरुमूले),
,,	ठं	रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः	(दक्षजानुनि),
,,	डं	तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः	(दक्षगुल्फे),
,,	ढं	वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः	(दक्षपादाङ्गुलिमूले),

६ णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे),
" तं योगरूपायै महामायायै नमः (वामोरुमूले),
" थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः (वामजानुनि),
" दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः (वामगुल्फे),
" धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः (वामपादाङ्गुलिमूले),
" नं राशिरूपायै शर्वाण्यै नमः (वामपादाङ्गुल्यग्रे),
" पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः, (दक्षपार्श्वे),
" फं अयनरूपायै काल्यै नमः (वामपार्श्वे),
" बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः (पृष्ठे),
" भं युगरूपायै गौर्यै नमः (नाभौ),
" मं प्रलयरूपायै भवान्यै नमः (जठरे),
" यं पञ्चभूतरूपायै ब्राह्म्यै नमः (हृदये),
" रं पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः (दक्षकक्षे),
" लं पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः (गलपृष्ठे),
" वं पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नमः (वामकक्षे),
" शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं),
" षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नमः (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं),
" सं अन्तःकरणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं),
" हं अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः (हृदयादि-वामपादाङ्गुल्यन्तं),
" ळं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं),
" क्षं दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं),

(इत्येकपञ्चाशच्छक्तिमातृकास्थानेषु विन्यस्य, ततः) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (अकारादिक्षकारान्तां मातृकामुच्चार्य) सकलप्रपञ्चाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः श्रीं श्रीं ऐं ॐ

(इति सर्वाङ्गे व्यापकं कुर्यात् ।)

२– भुवनन्यासः

(पादयोः)[1] ॐ ऐं श्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं अतललोकनिलयशतकोटिगुह्याद्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(गुल्फयोः) ६ ईं उं ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(जङ्घयोः) „ ऋं ॠं लृं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(जान्वोः) „ ॡं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(ऊर्वोः) ६ ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्येच्छायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(स्फिचोः) „ अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(मूलाधारे) „ कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रियायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

(स्वाधिष्ठाने) „ चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

---

१. अत्रैतेषां स्थानानां प्रथममुल्लेखो न्यासस्थलज्ञानस्य सौकर्याय ।

(मणिपूरके) ,, टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिणी-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।
(अनाहते) ,, तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनी-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।
विशुद्धौ) ,, पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।
(आज्ञायां) ,, यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।
(ललाटे) ,, शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनी-
मूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

(ब्रह्मरन्ध्रे ६ ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनी-
योगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः, (इति विन्यस्य)

६ (समस्तमातृकामुच्चार्य) सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्।)

३—मूर्तिन्यासः

(शिरसि) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं केशवायाक्षरशक्त्यै नमः,
(मुखे) ६ आं नारायणायाद्यशक्त्यै नमः,
(दक्षिणांसे) ,, इं माधवायेष्टदायै नमः,
(वामांसे) ,, ईं गोविन्दायेशान्यै नमः,
(दक्षपार्श्वे) ,, उं विष्णवे उग्रायै नमः,
(वामपार्श्वे) ,, ऊं मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नमः,

(दक्षकट्यां) ,, ॠं त्रिविक्रमाय ॠद्ध्यै नमः,
(वामकट्यां) ,, ॠं वामनाय रूपिण्यै नमः,
(दक्षोरौ) ,, ऌं श्रीधराय लुप्तायै नमः,
(वामोरौ) ,, ॡं हृषीकेशाय लूनदोषायै नमः,
(दक्षजानुनि) ,, एं पद्मनाभायैकनायिकायै नमः,
(वामजानुनि) ,, ऐं दामोदरायैकारिण्यै नमः,
(दक्षजङ्घायां) ,, ओं वासुदेवायौघवत्यै नमः,
(वामजङ्घायां) ,, औं सङ्कर्षणायौर्वकामायै नमः,
(दक्षपादे) ,, अं प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नमः,
(वामपादे) ,, अः अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नमः,
(दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्) ६ कं भं भवाय करभद्रायै नमः,
(वामपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्) ,, खं बं शर्वाय खगबलायै नमः,
(दक्षपार्श्वे) ६ गं फं हराय गरिमफलप्रदायै नमः,
(वामपार्श्वे) ,, घं पं पशुपतये घोरपादायै नमः,
(दक्षदोर्मूले) ,, ङं नं उग्राय पंक्तिवासायै नमः,
(वामदोर्मूले) ,, चं धं महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नमः,
(कण्ठे) ,, छं दं भीमाय छन्दोमय्यै नमः,
(वदने) ,, जं थं ईशानाय जगत्स्थानायै नमः,
(दक्षकर्णे) ,, झं तं तत्पुरुषाय झङ्कृत्यै नमः,
(वामकर्णे) ,, ञं णं अघोराय ज्ञानदायै नमः,
(भाले) ,, टं ढं सद्योजाताय टङ्कढक्कधरायै नमः,
(शिरसि) ,, ठं डं वामदेवाय ठङ्कृतिडामर्यै नमः,

(मूलाधारे) ,, यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै नमः,
(स्वाधिष्ठाने) ,, रं प्रजापतये रञ्जन्यै नमः,
(मणिपूरके) ,, लं वेधसे लक्ष्म्यै नमः,
(अनाहते) ,, वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः,
(विशुद्धौ) ,, शं पितामहाय शशिधरायै नमः,
(आज्ञायां) ,, षं विधात्रे षडाधारालयायै नमः,
(अर्धेन्दौ) ,, सं विरिञ्चये सर्वनायिकायै नमः,
(रोधिन्यां) ,, हं स्रष्ट्रे हसिताननायै नमः,
(नादे) ,, ळं चतुराननाय ललितायै नमः,
(नादान्ते) ,, क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात् ।)

४—मन्त्रन्यासः

(मूलाधारे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं इं एकलक्षकोटिभेद-प्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटे-श्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

(स्वाधिष्ठाने) ६ ईं उं ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्व्यक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

(मणिपूरके) ६ ऋं ॠं ऌं त्रिलक्षकोटिभेदवह्न्यादित्र्यक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

(अनाहते) ६ ॡं एं ऐं चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

(विशुद्धौ) ६ ओं औं अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादिपञ्चाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(आज्ञायां) ६ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(बिन्दौ) ६ घं ङं चं सप्तलक्षकोटिभेदगणपत्यादिसप्ताक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(अर्धेन्दौ) ६ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदबटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(रोधिन्यां) ६ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादे) ६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(नादान्ते) ६ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(शक्तौ) ६ धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(व्यापिकायां) ६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेद-लक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(समनायां) ६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(उन्मन्यां) ६ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटिभेददुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

(ध्रुवमण्डले) ६ षं सं हं ळं क्षं षोडशलक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडशाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलमन्त्राधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्)।

५– देवतान्यासः

(दक्षपादे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्त्यम्बादेव्यै नमः।

(वामपादे) ६ इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षगुल्फे) ६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः।

(वामगुल्फे) ६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः।

(दक्षजङ्घायां) ६ ऌं ॡं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः।

(वामजङ्घायां) ६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः।

(दक्षजानुनि) ६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः

(वामजानुनि) ६ अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै ,,

(दक्षोरौ) ६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै ,,

(वामोरौ) ६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै ,,

(दक्षोरुमूले) ६ ङं चं सहस्रकोटयप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै ,,

(वामोरुमूले) ६ छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै ,,

(दक्षपार्श्वे) ६ झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै ,,

(वामपार्श्वे) ६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै ,,

(दक्षस्तने) ६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै ,,
(वामस्तने) ६ णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै ,,
(दक्षदोर्मूले) ६ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्रयम्बादेव्यै ,,
(वामदोर्मूले) ६ धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै ,,
(दक्षभुजे) ६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै ,,
(वामभुजे) ६ बं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै ,,
(दक्षांसे) ६ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै,,
(वामांसे) ६ रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै ,,
(दक्षकर्णे) ६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वेश्वर्यम्बादेव्यै ,,
(वामकर्णे) ६ षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै ,,
(भाले) ६ हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै ,,
(ब्रह्मरन्ध्रे) ६ क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै ,,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः ह्रीं श्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात् ।)

६ - मातृकाभैरवन्यासः

(मूलाधारे) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः कं खं गं घं ङं अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै आं क्षां मङ्गलाम्बादेव्यै आं क्षां ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्षं मङ्गलनाथाय अं क्षं असिताङ्गभैरवनाथाय नमः ।

(स्वाधिष्ठाने) ६ चं छं जं झं ञं अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै ईं ळां चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळां माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इं ळं चर्चिकनाथाय इं ळं रुरुभैरवनाथाय नमः ।

(मणिपूरके) ६ टं ठं डं ढं णं अनन्तकोटिपातालचरीकुलसेवितायै ऊं ह्रां योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊं ह्रां कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुल-सहिताय उं हं योगेश्वरनाथाय उं हं चण्डभैरवनाथाय नमः।

(अनाहते) ६ तं थं दं धं नं अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ॠं सां हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠं सां वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ऋं सं हरसिद्धनाथाय ऋं सं क्रोधभैरवनाथाय नमः।

(विशुद्धौ) ६ पं फं बं भं मं अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै ॡं षां भट्टिन्यम्बादेव्यै ॡं षां वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय ऌं षं भट्टिनाथाय ऌं षं उन्मत्तभैरवनाथाय नमः।

(आज्ञायां) ६ यं रं लं वं अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शां किलकिलाम्बादेव्यै ऐं शां इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुल-सहिताय एं शं किलिकिलनाथाय एं शं कपालिभैरवनाथाय नमः।

(भाले) ६ शं षं सं हं अनन्तकोटिवनचरीकुलसहितायै औं वां कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वां चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुल-सहिताय ओं वं कालरात्रिनाथाय ओं वं भीषणभैरवनाथाय नमः।

(ब्रह्मरन्ध्रे) ६ ळं क्षं अनन्तकोटिजलचरीकुलसहितायै अः ळां भीषणा-म्बादेव्यै अः ळां महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं ळं भीषणनाथाय अं ळं संहारभैरवनाथाय नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (समस्तमातृकामुच्चार्य) समस्तमातृका-भैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ (इति व्यापकं कुर्यात्)।

(अनन्तरं पूर्वोक्तैः 'हसां हसी' इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यायेत्)। यथा—

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे ॥
नवरत्नमयश्रीमत् - सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तस्समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ॥
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम् ।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ॥
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ॥
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः ।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम् ॥
महाषोढोदिताशेष-देवतागणसेवितम् ।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ॥
पुरुषं वा स्मरेद् देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥
सर्वंतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम् ।

(इति स्वाभेदेन ध्यात्वा, योनि-लिङ्ग-सुरभि-कपाल-ज्ञान-त्रिशूल-पुस्तक-वनमाला-नभो-महामुद्रा इति दशमुद्राः प्रदर्श्य शिरसि श्रीगुरुं-ध्यायेत्) ।

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं,
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम् ।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं,
स्मरेच्छिरसि हंसगं तदभिधानपूर्वं गुरुम् ॥

(इति श्रीगुरुं ध्यात्वा तद्विद्यया तत्पादुकां शिरसि विन्यस्य, प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम स्वमूलाधारे स्मृत्वा शिवरूपं च स्वात्मानं ध्यायेत्)।

इति महाषोढान्यासः

(महाषोढान्यासफलं कुलार्णवे)

एवं न्यासे कृते देवि साक्षात्परशिवो भवेत् ।
मन्त्री चात्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः ॥
महाषोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने ।
देवास्सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः ॥
महाषोढाह्वयं न्यासं यत्र मन्त्री न्यसेततः ।
दिव्यक्षेत्रं समुद्दिष्टं समन्ताद् दशयोजनम् ॥
कृत्वा न्यासमिमं देवि यत्र गच्छति मानवः ।
तत्र श्रीर्विजयो लाभः स मान्यः पुरुषः प्रिये ॥
महाषोढाकृतन्यासस्त्वदीक्षायाभिवन्दते ।
स मासान्मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम् ॥
वज्रपञ्जरनामानमेवं न्यासं करोति यः ।
दिव्यान्तरिक्षभूशैलजलारण्यनिवासिनः ॥
उद्दण्डभूत-वेताल-देव-रक्षो-ग्रहादयः ।
भयग्रस्तेन मनसा नेक्षन्ते साधकं प्रिये ॥
महाषोढाह्वयं न्यासं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
देवास्सर्वे प्रकुर्वन्ति ऋषयश्च मुनीश्वराः ॥
बहुनोक्तेन किं देवि ! सुशिष्याय प्रकाशयेत् ।
अक्षयां लभते सिद्धिं रहसि न्यासमाचरेत् ॥

अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्

(स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया-विलिख्य) —
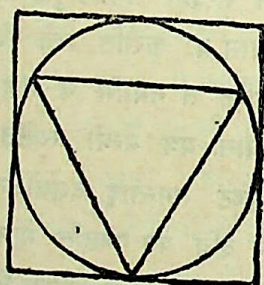
मण्डलं च मूलेन समभ्यर्च्य, कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्ध-पुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत्) ।

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ॥

आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।

(इत्यावाह्य, मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन—)

ललिताचंनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।

वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

(इति मन्त्रेण पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्षयेत्) ।

सामान्यार्घ्यविधिः

(वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय) —
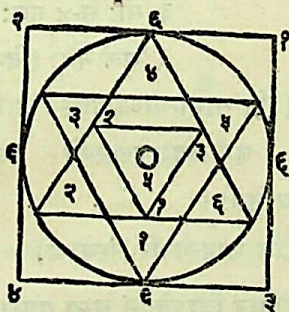
चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजयेत्) । यथा—

३ ऐं हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

३ क्लीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,, नमः ।

३ सौः शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,, नमः ।

३ ऐं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,, नमः ।

३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,, नमः ।

३ सौः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,, नमः ।

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन —

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः ।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां	पूजयामि	नमः ।
३ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा ।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां	,,	नमः ।
३ सौः स-४ शिखायै वषट् ।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां	,,	नमः ।
३ ऐं क-५ कवचाय हुं ।	कवचशक्तिश्रीपादुकां	,,	नमः ।
३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् ।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां	,,	नमः ।
३ सौः स-४ अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां	,,	नमः ।

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन —

३ ऐं क-५ नमः । ३ सौः स-४ नमः ।
३ क्लीं ह-६ नमः । ३ मूलं नमः (बिन्दौ) ।

३ ततः "अस्त्राय फट्" (इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य)

३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ।

(इति मण्डलोपरि संस्थाप्य)

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।
ऐं श्रीं श्रीं रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः
(इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत्) । तद्यथा—

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ।	३ षं सुश्रीकलायै नमः
३ रं ऊष्मा ,, ,,	३ सं सुरूपा ,, ,,
३ लं ज्वलिनी ,, ,,	३ हं कपिला ,, ,,
३ वं ज्वालिनी ,, ,,	३ ळं हव्यवाहिनी ,,
३ शं विस्फुलिङ्गिनी ,,	३ क्षं कव्यवाहिनी ,,

३ अस्त्राय फट्—(इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा—)

३ उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः—(इति संस्थाप्य)

३ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।

३ हां हीं हूं हैं हौं हः ह्मलवरयूम् । सूर्यमण्डलाय नमः—
(इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत् । तद्यथा—)
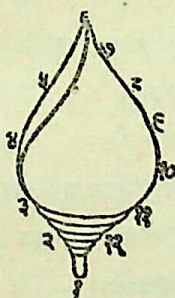
३ कं भं तपिनीकलायै नमः	३ छं दं सुषुम्नाकलायै नमः
३ खं बं तापिनी ,, ,,	३ जं थं भोगदा ,, ,,
३ गं फं धूम्रा ,, ,,	३ झं तं विश्वा ,, ,,
३ घं पं मरीचि ,, ,,	३ ञं णं बोधिनी ,, ,,
३ ङं नं ज्वालिनी ,, ,,	३ टं ढं धारिणी ,, ,,
३ चं धं रुचि ,, ,,	३ ठं डं क्षमा ,, ,,

३ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः—(इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दुं दत्त्वा)

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं भवावाजस्य सङ्गये ॥

६

सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः (इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत् । तद्यथा—)

३	अं अमृताकलायै	नमः		३	लृं चन्द्रिकाकलायै		नमः
३	आं मानदा	,,	,,	३	लॄं कान्ति	,,	,,
३	इं पूषा	,,	,,	३	एं ज्योत्स्ना	,,	,,
३	ईं तुष्टि	,,	,,	३	ऐं श्री	,,	,,
३	उं पुष्टि	,,	,,	३	ओं प्रीति	,,	,,
३	ऊं रति	,,	,,	३	औं अङ्गदा	,,	,,
३	ऋं धृति	,,	,,	३	अं पूर्णा	,,	,,
३	ॠं शशिनी	,,	,,	३	अः पूर्णामृता	,,	,,

(ततस्तस्मिन् शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य, अस्त्राय फट् इति संरक्ष्य, कवचाय हुं इति अवगुण्ठ्य, धेनुयोनि-मुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य)—

ललिताचंनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम् ।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै ॥

(इति मन्त्रेण तत्सलिलपृषद्भिः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलं किञ्चिद् वर्धन्यां क्षिपेत्)।

विशेषार्घ्यविधिः

(सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य, चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुं चार्चयेत्)।
तद्यथा—

(चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—)

३	ऐं क-५ हृदयाय नमः[1]	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नम।	
३	क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा	शिरःशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	सौः स-४ शिखायै वषट्	शिखाशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	ऐं क-५ कवचाय हुं	कवचशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	सौः स-४ अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां	,,

(ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन —)

३	ऐं क-५ हृदयाय नमः।	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।	
३	क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा।	शिरःशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	सौः स-४ शिखायै वषट्।	शिखाशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	ऐं क-५ कवचाय हुं।	कवचशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्।	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां	,,
३	सौः स-४ अस्त्राय फट्।	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां	,,

(ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—)

१. षोडश्युपासकैस्तु षोडशीमन्त्रेणैव सर्वत्र पूजा विधेया।

३ ऐं क-५ नम : ३ सौः स-४ नमः ।
३ क्लीं ह-६ नमः ३ मूलं नमः (बिन्दौ)

अथ ३ अस्त्राय फट् (इति आधारं प्रक्षाल्य)

३ ऐं क-५ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः । (इति मण्डलोपरि संस्थाप्य)

,, अग्नि दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः ।

(इति अग्निमण्डलं विभाव्य दश वह्निकलाः पूजयेत्) । यथा—

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ३ षं सुश्रीकलायै नमः
,, रं ऊष्मा ,, ,, सं सुरूपा ,,
३ लं ज्वलिनी ,, ,, हं कपिला ,,
३ वं ज्वालिनी ,, ,, ळं हव्यवाहिनी ,,
,, शं विस्फुलिङ्गिनी ,, ,, क्षं कव्यवाहिनी ,,

(ततः—)

३ अस्त्राय फट् (इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य)

,, क्लीं ह-६ उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः, (इति आधारोपरि संस्थाप्य)

,, ह्रीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनी ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा (इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य) —

,, आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । हां हीं हूं हैं हौं हः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः (इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्) ।

३	कं भं तपिनीकलायै नमः		३	छं दं सुषुम्नाकलायै नमः	
,,	खं बं तापिनी	,,	,,	जं थं भोगदा	,,
,,	गं फं धूम्रा	,,	,,	झं तं विश्वा	,,
,,	घं पं मरीचि	,,	,,	ञं णं बोधिनी	,,
,,	ङं नं ज्वालिनी	,,	,,	टं ढं धारिणी	,,
,,	चं धं रुचि	,,	,,	ठं डं क्षमा	,,

(ततो विशेषार्घ्यपात्रे—)

२ सौः स-४ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यामृताय नमः—(इति अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं सबिन्दुमातृकयार्पितं कस्तूरिकाद्यधिवासितं क्षीरं पूरयित्वा अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डं च निक्षिप्य)—

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवावाजस्य सङ्गथे । सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः (इति सोममण्डलं विभाव्य षोडशसोमकलाः पूजयेत् ।) यथा—

३	अं अमृताकलायै	नमः	३	ऌं चन्द्रिका	नमः
,,	आं मानदा	,,	,,	ॡं कान्ति	,,
,,	इं पूषा	,,	,,	एं ज्योत्स्ना	,,
,,	ईं तुष्टि	,,	,,	ऐं श्री	,,
,,	उं पुष्टि	,,	,,	ओं प्रीतिकलायै	,,
,,	ऊं रति	,,	,,	औं अङ्गदा	,,
,,	ऋं शशिनीकलायै	,,	,,	अं पूर्णाकलायै	,,
,,	ॠं धृति	,,	,,	अः पूर्णामृता	,,

(ततः '३ ॐ जुं सः स्वाहा' इति अष्टवारमभिमन्त्र्य) —

तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि-षोडशवर्णात्मक-रेखात्रयं त्रिकोणं विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादिकोणेषु, अप्रादक्षिण्येन हळक्षान् बहिः प्रादक्षिण्येन पञ्चदशीमूल-खण्डत्रयं, बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरं 'ईं' तद्वामदक्षयोः क्रमेण 'हं सः' इति च विलिख्य-)
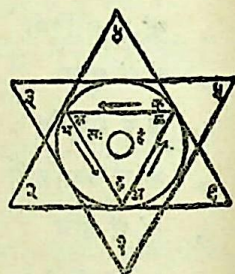
३ 'हंसः नमः' (इति आराध्य, त्रिकोणस्य परितः वृत्तं, तद्बहिश्च षट्कोणं निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोणमभ्यार्च्य)

,, (मूलं) तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलशपिशितहस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा। (इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य तदर्घ्यात् किञ्चित् पात्रान्तरेण—)

३ वषट्। (इत्युद्धृत्य,) — ३ स्वाहा। (इति तत्रैव निक्षिप्य)

,, हुं। (इति अवगुण्ठ्य,) — ३ वौषट्। (इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य)

,, फट्। (इति संरक्ष्य) — ३ नमः। (इति पुष्पं दत्त्वा)

,, मूलेन (गालिन्या निरीक्ष्य) —३ ऐं (इति योनिमुद्रया नत्वा)

,, मूलेन (सप्तवारमभिमन्त्र्य, सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य)—

ललितार्चनकाले हि यानि यानीह साम्प्रतम्।
वस्तूनि सौरभाढ्यानि पवित्राणि भवन्तु वै॥

(इति मन्त्रेण तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य सर्वं विद्यामयं विभावयेत्)।

शुद्धिसंस्कारः

(विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य)—

" ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय

(इति मण्डलमभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं च संस्थाप्य)

" ॐ श्लीं पशु हुं फट् (इति अष्टवारमभिमन्त्र्य)

" सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

" वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

" अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

" तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥

" ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ (इत्यभ्यर्च्य) ।

तदधस्त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य, (प्रथममण्डले)—

" हंसश्शिवस्सोहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः । (इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय)
(द्वितीयमण्डले)

" हंसः नमः (इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्रं निदध्यात्) ।

(ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्)।

वह्निकलाः

३	यं धूम्रार्चिषे	नमः	३	षं सुश्रियै	नमः
,,	रं ऊष्मायै	,,	,,	सं सुरूपायै	,,
,,	लं ज्वलिन्यै	,,	,,	हं कपिलायै	,,
,,	वं ज्वालिन्यै	,,	,,	ळं हव्यवाहिन्यै	,,
,,	शं विस्फुलिङ्गिन्यै	,,	,,	क्षं कव्यवाहिन्यै	,,

सूर्यकलाः

३	कं भं तपिन्यै	नमः	३	छं दं सुषुम्नायै	नमः
,,	खं बं तापिन्यै	,,	,,	जं थं भोगदायै	,,
,,	गं फं धूम्रायै	,,	,,	झं तं विश्वायै	,,
,,	घं पं मरीच्यै	,,	,,	ञं णं बोधिन्यै	,,
,,	ङं नं ज्वालिन्यै	,,	,,	टं ढं धारिण्यै	,,
,,	चं धं रुच्यै	,,	,,	ठं डं क्षमायै	,,

सोमकलाः

३	अं अमृतायै	नमः	३	ऊं रत्यै	,,
,,	आं मानदायै	,,	,,	ऋं धृत्यै	,,
,,	इं पूषायै	,,	,,	ॠं शशिन्यै	,,
,,	ईं तुष्ट्यै	,,	,,	ऌं चन्द्रिकायै	नमः
,,	उं पुष्ट्यै	,,	,,	ॡं कान्त्यै	,

३	एं ज्योत्स्नायै	नमः	३	औं अङ्गदायै	,,
,,	ऐं श्रियै	,,	,,	अं पूर्णायै	,,
,,	ओं प्रीत्यै	,,	,,	अः पूर्णामृतायै	,,

ब्रह्मकलाः

,,	कं सृष्ट्यै	,,	,,	चं लक्ष्म्यै	नमः
,,	खं ऋद्धयै	,,	,,	छं द्युत्यै	,,
,,	गं स्मृत्यै	,,	,,	जं स्थिरायै	,,
,,	घं मेधायै	,,	,,	झं स्थित्यै	,,
,,	ङं कान्त्यै	,,	,,	ञं सिद्धयै	,,

३ हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं वृहत् ॥ नमः ।

विष्णुकलाः

३	टं जरायै	नमः	३	तं कामिकायै	नमः
,,	ठं पालिन्यै	नमः	,,	थं वरदायै	नमः
,,	डं शान्त्यै	नमः	,,	दं ह्लादिन्यै	नमः
,,	ढं ईश्वर्यै	नमः	,,	धं प्रीत्यै	नमः
,,	णं रत्यै	नमः	,,	नं दीर्घायै	नमः

,, प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः । यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ नमः ।

रुद्रकलाः

३	पं तीक्ष्णायै	नमः	३	बं भयायै	नमः
,,	फं रौद्रयै	नमः	,,	भं निद्रायै	नमः

३	मं तन्द्र्यै	नमः	,,	लं क्रियायै	नमः
,,	यं क्षुधायै	नमः	,,	वं उद्गार्यै	नमः
,,	रं क्रोधिन्यै	नमः	,,	शं मृत्यवे	नमः

,, त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नमः ॥

ईश्वरकलाः

३	षं पीतायै	नमः	३	हं अरुणायै	नमः
३	सं श्वेतायै	नमः	३	क्षं असितायै	नमः

३ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ नमः।

सदाशिवकलाः

३	अं निवृत्त्यै	नमः	३	लृं परायै	नमः
,,	आं प्रतिष्ठायै	नमः	,,	लॄं सूक्ष्मायै	नमः
,,	इं विद्यायै	नमः	,,	एं सूक्ष्मामृतायै	नमः
,,	ईं शान्त्यै	नमः	,,	ऐं ज्ञानायै	नमः
,,	उं इन्धिकायै	नमः	,,	ओं ज्ञानामृतायै	नमः
,,	ऊं दीपिकायै	नमः	,,	औं आप्यायिन्यै	नमः
,,	ऋं रेचिकायै	नमः	,,	अं व्यापिन्यै	नमः
,,	ॠं मोचिकायै	नमः	,,	अः व्योमरूपायै	नमः

,, विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥

गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ नमः।

,, (मूलं) नमः।

,, अखण्डैकरसान्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके ॥ नमः।

,, अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ॥ नमः।

,, तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥ नमः।

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥ नमः।

,, ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः ॥ नमः।

(एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किञ्चिद् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं गुरुपादुकामन्त्रेण यजेत्। गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत्)।

पुनः आत्मपात्रे गुरुयजनावशिष्टममृतं निक्षिप्य, मूलाधारे बालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा)

३ कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः। (इति मनसा सम्पूज्य)

,,	(मूलं) पुण्यं जुहोमि स्वाहा		३	(मूलं) सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा	
,,	(मूलं) पापं	,,	,,	(मूलं) विकल्पं	,,
,,	(मूलं) कृत्यं	,,	,,	(मूलं) धर्मं	,,
,,	(मूलं) अकृत्यं	,,	,,	(मूलं) अधर्मं	,,

३ (मूलं) अधमं जुहोमि वौषट्

३ इतः पूव प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यां उदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा—(इति पूर्णाहुतिं विभाव्य)

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा ।

(इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्धया जुहुयात् । (विशेषार्घ्यपात्रात्किञ्चित्क्षीरं क्षीरकलशे निक्षिपेत् । आविसर्जनं शङ्खं विशेषार्घ्यपात्रञ्च न चालयेत्) ।

अन्तर्यागः

(मूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं विसतन्तुतनीयसीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परश्शत-सुधामयूख-शीतलतेजोदण्डरूपां परचितिं भावयेत् । ततस्तत्तेजसि—)

मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे भूपुरस्थितदेवीः,

तदुपरि स्थिते विषुवनाम्नि रक्तवर्णषड्दलपद्मे षोडशदलदेवीः,

मूलाधारे चतुर्दले अष्टदलदेवीः, स्वाधिष्ठाने षड्दले चतुर्दशारदेवीः, मणिपूरके दशदले बहिर्दशारदेवीः, अनाहते द्वादशदले अन्तर्दशारदेवीः, विशुद्धौ षोडशदले अष्टारदेवीः, लम्बिकाग्रे आयुधदेवीः त्रिकोणदेवीश्च, आज्ञायां द्विदले बिन्दुगतदेवीं च ध्यात्वा —

तत्तदग्रे जीवात्मानं पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्टं भावयन् तत्तत्पूजामन्त्रैः तत्तदावरणपूजां देव्या वामहस्ते पूजासमर्पणं च विभाव्य, श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य, मध्यत्र्यस्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मना सहितां श्रीदेवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलि-

गतकुसुमैः तत्र तां सम्पूज्य, ततः अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणीः चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतहरितश्याम–रक्तशुक्लवर्णाः धरणिवियदनिलानलजललक्षणपञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्चदेवताः देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत् ।

ततो देव्या नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य, मूलविद्यां उच्चरन्, जीवात्मानं श्रीदेवीपादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादिनवमुद्राः[1] भावयित्वा, क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ।

अथ देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमालम्ब्य तेजोरूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिकां वियदादिविश्वकारणां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिविलविलस-दमल-दशशत-दलकमलाद् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुम-गर्भितेऽञ्जलौ समानीय —

३ ह्रीं श्रीं सौः श्रीललितायाः अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः ।

(इति विभाव्य यन्त्रे पुष्पाञ्जलिमर्पयेत्) । ततः —

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड् शेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

(इति निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य)

---

१. षोडश्युपासकानां तु दशमुद्राः ।

३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः

महापद्मवनान्तःस्थे कारणानन्दविग्रहे ।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि ॥

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः (इत्यावाहयेत्) ।

(नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृतिवेषभूषणायुधशक्तिचक्रं ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणरीत्या निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य—)

३ (मूलं) आवाहिता भव   ३ (मूलं) संनिरुद्धा भव
,, (मूलं) संस्थापिता भव   ,, (मूलं) सम्मुखी भव
,, (मूलं) सन्निधापिता भव   ,, (मूलं) अवगुण्ठिता भव

(इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्रा हृदयादिषडङ्गमुद्रा बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत्) ।

चतुःषष्ट्युपचारपूजा

(अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत् । तेष्वशक्तो भावनया पुष्पाक्षतानर्पयेत्) । यथा—

३ श्रीललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः   ३ श्रीललितायै दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं ,,
,, आभरणावरोपणं ,,   ,, उष्णोदकंस्नानं ,,
,, सुगन्धितैलाभ्यङ्गं ,,   ,, कनककलशच्युत-सकलतीर्थाभिषेकं[1] ,,
,, मज्जनशालाप्रवेशनं ,,   ,, धौतवस्त्रपरिमार्जनं ,,
,, मज्जनशालामणि-पीठोपवेशनं ,,   ,, अरुणदुकूलपरिधानं ,,

---

१. इह श्रीसूक्तेनाभिषेको विधेयः ।

३ अरुणकुचोत्तरीयं	नमः	३ महापदकं	नमः
,, आलेपमण्डपप्रवेशनं	,,	,, मुक्तावलिं	,,
,, आलेपमण्डपमणि-पीठोपवेशनं	,,	,, एकावलिं	,,
		,, छन्नवीरं	,,
,, दिव्यगन्धसर्वाङ्गीण-विलेपनं	,,	,, केयूरयुगलचतुष्टयं	,,
		,, वलयावलिं	,,
,, केशभारस्य कृष्णागरुधूपं		,, ऊर्मिकावलिं	,,
,, कुसुममालाः	,,	,, काञ्चीदाम	,,
,, भूषणमण्डपप्रवेशनं	,,	,, कटिसूत्रं	,,
,, भूषणमण्डपमणि-पीठोपवेशनं	,,	,, सौभाग्याभरणं	,,
		,, पादकटकं	,,
,, नवमणिमकुटं	,,	,, रत्ननूपुरं	,,
,, चन्द्रशकलं	,,	,, पादाङ्गुलीयकं	,,
,, सीमन्तसिन्दूरं	,,	,, एककरे पाशं	,,
,, प्रथमभूषणं (माङ्गल्यसूत्रं)	,,	,, अन्यकरेऽङ्कुशं	,,
,, तिलकरत्नं	,,	,, इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं	,,
,, कृष्णाञ्जनं	,,	,, अपरकरे पुष्पबाणान्	,,
,, मणिकुण्डलयुगलं	,,	,, श्रीमन्माणिक्यपादुके	,,
,, नासाभरणं	,,	,, स्वसमानवेषाभिवरण-देवताभिः सह महा-चक्राधिरोहणं	,,
,, अधरयावकं	,,		
,, कनकचिन्ताकं	,,		
,, पदकं	,,	,, कामेश्वराङ्कपर्यङ्कोपवेशनं	,,

३ अमृतासवचषकं	,,	३ कर्पूरवीटिकां	,,
,, आचमनीयं	,,	,, आनन्दोल्लासविलासहासं	,,

अथ मङ्गलारातिकम्--- (कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादि-लिखितस्याष्टषट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारचरुगोलकवत्यां चणकमुद्गजुषि वा कर्णिकायां दलेषु च पयःशर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टोपादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृतपाचितानि नवसप्तपञ्चान्यतमसंख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं कर्षप्रमितं आपूर्य कर्पूरगर्भितां वर्तिकां हृल्लेखया प्रज्वाल्य—)

३ श्रीं ह्रीं ग्लूं स्लूं म्लूं प्लूं न्लूं ह्रीं श्रीं (इति नवाक्षर्या रत्नेश्वरीविद्यया अभिमन्त्र्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य, तथा मूलेनाभ्यर्च्य) —

३ जगद्ध्वनिमन्त्रमातः स्वाहा (इति मन्त्रपूर्वकं गन्धाक्षतादिना घण्टां सम्पूज्य तां वादयन् जानुचुम्बितभूतलः तत्पात्रं आमस्तकमुद्धृत्य) —

,, श्रीललितायै मङ्गलारात्रिकं कल्पयामि नमः ।

सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां,
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य ।
मुखकमल-समीपे तेऽम्ब सार्धत्रिवारं,
भ्रमयति मयि भूयात् से कृपार्द्रः कटाक्षः ॥
समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके ।
आरार्तिकमिदं तुभ्यं गृहाण मम सिद्धये ॥

(इति नववारं, श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्) ।

,,	श्रीललितायै छत्रं कल्प० नमः		३	श्रीललितायै गन्धं कल्प० नमः		
,,	चामरयुगलं	,,	,,	पुष्पं	,,	
,,	दर्पणं	,,	,,	धूपं	,,	
,,	तालवृन्तं	,,	,,	दीपं	,,	

(अथ नैवेद्यम् — देव्याः पुरतः स्वदक्षिणे चतुरस्रमण्डलं निर्माय तत्र आधारोपरि नैवेद्यं निधाय, मूलेन प्रोक्ष्य, वं इति बीजोच्चारणपूर्वकं धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, मूलेन त्रिवारं अभिमन्त्र्य आपोशनं च दत्त्वा) —

,, श्रीललितायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः ॥ (इति निवेदयेत्) ।

(अथ श्रीललितायै पानीयं उत्तरापोशनं हस्तप्रक्षालनं गण्डूषं आचमनीयं ताम्बूलं च कल्पयेत् । ततोऽभिवन्द्य नैवेद्यं नैर्ऋत्यां स्थापयित्वाऽस्त्रेण भूमिं शोधयेत्) ।

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ऐं (इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनवमुद्राः प्रदर्शयेत् ।

'षोडश्युपासकास्तु' 'ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः' इति त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः) ।

चतुरायतनपूजा

३ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा महागणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिवारम्).

३ घृणिः सूर्य आदित्योम्—आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (त्रिवारम्)

३ ॐ नमो नारायणाय—महाविष्णु श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (त्रिवारम्)

३ ॐ नमः शिवाय—साम्बपरमेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (त्रिवारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम्॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्पयेत्)।

लयाङ्गपूजा

३ (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इति बिन्दौ देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्)।

षडङ्गार्चनम्

(देव्यग्रे बिन्दौ अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—)

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः।	
,, क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा	शिरःशक्तिश्रीपादुकां	,, ।
,, सौः स-४ शिखायै वषट्	शिखाशक्तिश्रीपादुकां	,, ।
,, ऐं क-५ कवचाय हुं	कवचशक्तिश्रीपादुकां	,, ।
,, क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां	,, ।
,, सौः स-४ अस्त्राय फट्	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां	,, ।

(षोडश्युपासकानां तु षोडशीषट्कूटेन षडङ्गपूजा)।

नित्यादेवीयजनम्

३ अः (पञ्चदशी) अः श्रीललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (इति बिन्दौ महानित्यां त्रियंजेत्)।

(अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रियंजेत्। ततश्चः पूर्ववत् महानित्यां त्रियंजेत्)।
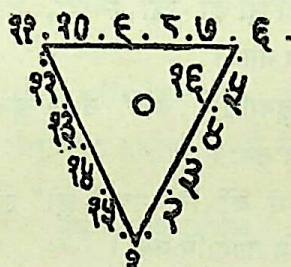
ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण 'अं आं इं ईं उं' इति, पूर्वरेखायां, आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं" इति उत्तररेखायां, ईशानादिवारुण्यन्तं 'एं ऐं ओं औं अं' इति पञ्चपञ्च-स्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत्। बिन्दौ षोडशं स्वरं 'अः' इति विचिन्त्य महानित्यां यजेत्)। यथा—

२ 'अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः' अं कामेश्वरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ 'आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगाह्वये भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्व-रूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं' आं भगमालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ 'इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा' इं नित्यक्लिन्नानित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा, ईं भेरुण्डानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः' उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं' ऊं महावज्रेश्वरीनित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः' ऋं शिवदूतीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट्' ॠं त्वरितानित्या-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ऌं ऐं क्लीं सौः' ऌं कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ॡं ह्स्क्लर्डैं ह्स्क्लर्डीं ह्स्क्लर्डौः' ॡं नित्यानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं' एं नील-पताकानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ऐं भ्म्र्यूं' ऐं विजयानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'ओं स्त्रौं ओं' सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा' औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ 'अं च्कौं' अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, 'अः (पञ्चदशी)' अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(एवं शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादि-चित्रान्ताः कृष्णपक्षे तु चित्रादि-कामेश्वर्यन्ताः स्वस्वमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य बिन्दौ महानित्यां यजेत्)।

गुरु मण्डलार्चनम्

,, **परौघेभ्यो नमः।** (इति बिन्दुत्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बिन्दौ महापादुकां यजेत्)। यथा —

,, ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्ष-मलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

(त्रिकोणे वामकोणादारभ्य पूर्वरेखायाम्) —

३ उड्डीशानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त० नमः

,, प्रकाशानन्दनाथ ,,

,, विमर्शानन्दनाथ ,,

,, आनन्दानन्दनाथ ,,

(दक्षकोणादारभ्य दक्षरेखायां—)

३ षष्ठीशानन्दनाथ ,,

३ ज्ञानानन्दनाथ ,,

३ सत्यानन्दश्रीपादुकां पू० त० नमः

३ पूर्णानन्दनाथ ,,

(स्वाग्रकोणादारभ्य वामरेखायां–)

३ मित्रेशानन्दनाथ ,,

,, स्वभावानन्दनाथ ,,

,, प्रतिभानन्दनाथ ,,

,, सुभगानन्दनाथ ,,

(ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहित-प्रागग्रत्रिकोणपश्चिमरेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवतासन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिणसंस्था-क्रमेण दिव्यसिद्धमानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेद-वसुसङ्ख्यं समर्चयेत्)। यथा—
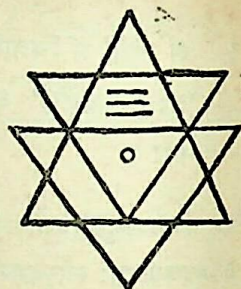
३ दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः। (इति पुष्पाञ्जलिः)

(दिव्यौघः। प्रथमरेखायां—)

३ परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त० नमः

३ परशिवानन्दनाथ ,,

,, पराशक्त्यम्बा ,,

,, कौलेश्वरानन्दनाथ ,,

,, शुक्लदेव्यम्बा ,,

,, कुलेश्वरानन्दनाथ ,,

,, कामेश्वर्यम्बा ,,

(सिद्धौघः। द्वितीयरेखायां—)

,, भोगानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त० नमः

,, क्लिन्नानन्दनाथ ,,

३ समयानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त० नमः

,, सहजानन्दनाथ ,,

(मानवौघः। तृतीयरेखायां—)

,, गगनानन्दनाथ ,,

,, विश्वानन्दनाथ ,,

,, विमलानन्दनाथ ,,

,, मदनानन्दनाथ ,,

,, भुवनानन्दनाथ ,,

,, लीलाम्बा ,,

,, स्वात्मानन्दनाथ ,,

,, प्रियानन्दनाथ ,,

(ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, तृतीयरेखायां स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत्)।

आवरणपूजा

३ संविन्मये परे देवि परामृतरसप्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे॥

प्रथमावरणम्

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः ।

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्) ।

(ततः क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखा-त्रयस्य लकारप्रकृतिकपृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखायां पश्चिमादि-द्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैऋर्तयोः पूर्वेशानयोश्च मध्ये—)
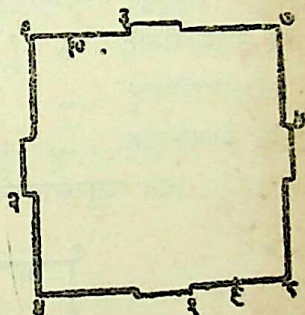
३ अं अणिमासिद्धिश्रीपादुकां पू० त० नमः
३ लं लघिमासिद्धि ,,
,, मं महिमासिद्धि ,,
,, इं ईशित्वसिद्धि ,,
,, वं वशित्वसिद्धि ,,
३ पं प्राकाम्यसिद्धिश्रीपादुकां पू० त० नमः
,, भुं भुक्तिसिद्धि ,,
,, इं इच्छासिद्धि ,,
,, पं प्राप्तिसिद्धि ,,
,, सं सर्वकामसिद्धि ,,

(इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवमुत्तरत्रापि) ।

(अथचतुरस्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु च क्रमेण—)
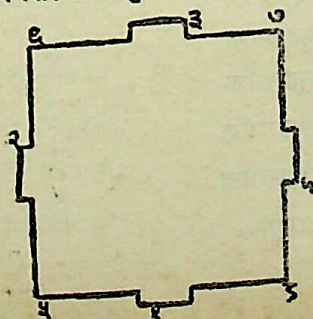
३ आं ब्राह्मीमातृ—श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ इं माहेश्वरीमातृ ,,
३ ऊं कौमारीमातृ ,,
३ ॠं वैष्णवीमातृ ,,
३ ॡं वाराहीमातृ—श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ ऐं माहेन्द्रीमातृ ,,
३ औं चामुण्डामातृ ,,
३ अः महालक्ष्मीमातृ ,,

(ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण)
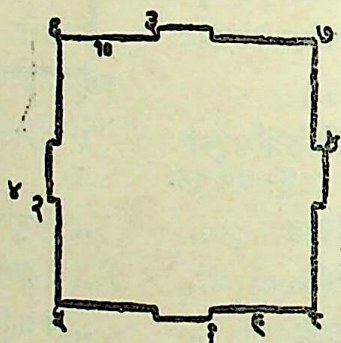
३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥
,, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति ,,
,, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति ,,
,, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्ति ,,
,, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति ,,
,, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति ,,
,, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति ,,
,, ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्ति ,,
,, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति ,,

,, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः ।

,, एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

(अणिमासिद्धेः पुरतः —)

३ अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः ।

,, अं अणिमासिद्धि[1] ,,

,, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति ,,

,, द्रां

(इति सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्श्य—)

,, अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य—)

३ प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः । (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्) ।

द्वितीयावरणम्

३ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

(श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिकषोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन)
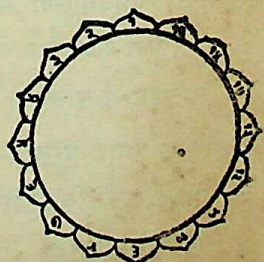
१. चक्रेश्वर्याः दक्षे सिद्धिः, वामे मुद्रा एवमुत्तरत्रापि ।

३ अं कामाकर्षिणीनित्याकलादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः ।
,, आं बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, इं अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ईं शब्दाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, उं स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ऊं रूपाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ऋं रसाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ॠं गन्धाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ऌं चित्ताकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ॡं धैर्याकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, एं स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ऐं नामाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, ओं बीजाकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, औं आत्माकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, अं अमृताकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, अः शरीराकर्षिणीनित्याकलादेवी ,,
,, एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

(कामाकर्षिण्याः पुरतः —)

३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः ।
,, लं लघिमासिद्धि ,,

,, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति ,,

,, द्रीं (इति सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य—)

,, अभीष्टसिद्धि मे देहि, शरणागत-वत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम् ॥ (इति पूजां समर्प्य-)

,, गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

तृतीयावरणम्

३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(हकारप्रकृतिक–अष्टमूर्त्यात्मक-शिवाभिन्ने जपाकुसुममित्रे अष्टपत्रे श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण—)
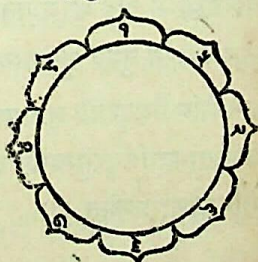
३ कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवीश्रीपादुकां पू० त० नमः।

,, चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी ,,

,, टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी ,,

,, तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी ,,

,, पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी ,,

,, यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवी ,,

,, शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवी ,,

,, ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी ,,

„ एता गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(अनङ्गकुसुमायाः पुरतः —)

३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी—श्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ मं महिमासिद्धि „

„ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति „

„ क्लीं (इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य—)

„ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।

„ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्। (इति पूजां समर्प्य—)

„ गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

तुरीयावरणम्

३ ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(ईकारप्रकृतिकचतुर्दशभुवनात्मक-महामायारूपे दाडिमीप्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—)
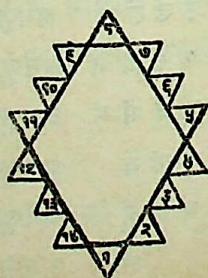
३ कं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति— श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ खं सर्वविद्राविणीशक्ति ,,
३ गं सर्वाकर्षिणीशक्ति ,,
३ घं सर्वाह्लादिनीशक्ति ,,
३ ङं सर्वसम्मोहिनीशक्ति ,,
३ चं सर्वस्तम्भिनीशक्ति ,,
३ छं सर्वजृम्भिणीशक्ति ,,
३ जं सर्ववशङ्करीशक्ति— श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ झं सर्वरञ्जिनीशक्ति ,,
३ ञं सर्वोन्मादिनीशक्ति ,,
३ टं सर्वार्थसाधिनीशक्ति ,,
३ ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्ति ,,
३ डं सर्वमन्त्रमयीशक्ति ,,
३ ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्ति ,,

३ एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

(सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः—)

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः ।
३ इँ ईशित्वसिद्धि ,,
३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्ति ,,
३ ब्लूं (इति सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य—)

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, तुरीयावरणार्चनम् ॥ (इति पूजां समर्प्य—)

३ सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्) ।

पञ्चमावरणम्

३ हसैं हस्क्लीं हस्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(एकारप्रकृतिकदशावतारात्मक-विष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—)
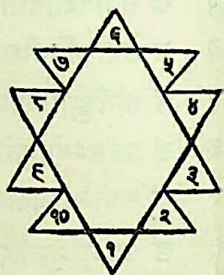
३	णं सर्वसिद्धिप्रदादेवी—श्रीपादुकां पू० त० नमः	३	नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी—श्रीपादुकां पू० त० नमः
,,	तं सर्वसम्पत्प्रदादेवी ,,	,,	पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवी ,,
,,	थं सर्वप्रियङ्करीदेवी ,,	,,	फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी ,,
,,	दं सर्वमङ्गलकारिणीदेवी ,,	,,	बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी ,,
,,	धं सर्वकामप्रदादेवी ,,	,,	भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी ,,

३ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः—)

३ हसैं हस्क्लीं हस्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी—श्रीपादुकां पू० त० नमः

३ वं वशित्वसिद्धि ,,

३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति ,,

३ सः (इति सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य—)

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥ (इति पूजां समर्प्य—)

३ कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

षष्ठावरणम्

३ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नम। (पुष्पाञ्जलिः)

(रेफप्रकृतिक—--दशकलात्मक-
वैश्वानराभिन्ने जपासुमनःसहचरे
अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य
वामावर्तेन :—)
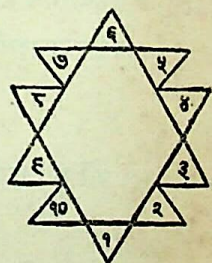
३ मं सर्वज्ञादेवी-
श्रीपादुकां पू० त० नमः
,, यं सर्वशक्तिदेवी ,,
,, रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी ,,
,, लं सर्वज्ञानमयीदेवी ,,
,, वं सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी ,,

३ शं सर्वाधारस्वरूपादेवी-
श्रीपादुकां पू० त० नमः
,, षं सर्वपापहरादेवी ,,
,, सं सर्वानन्दमयीदेवी ,,
,, हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी ,,
,, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी ,,

३ एता निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(सर्वज्ञायाः पुरतः)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

" पं प्राकाम्यसिद्धि "

" क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति "

" क्रों (इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रां प्रदर्श्य)

" अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठाख्यावरणार्चनम् ॥ (इति पूजां च समर्प्य)

" निगर्भयोगिनीमयूखायै षष्ठावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)।

सप्तमावरणम्

३ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(ककारप्रकृतिक-अष्टमूर्त्यात्मक-कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—)
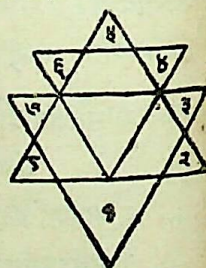
३ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः ब्लूँ वशिनीवाग्देवता-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

" कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरी—वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः।

" चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी—वाग्देवता "

" टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला—वाग्देवता "

२ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा— वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः
,, पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनी— वाग्देवता ,,
,, यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी— वाग्देवता ,,
,, शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी—वाग्देवता ,,

एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)। (वशिन्याः पुरतः)—

,, ह्लीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी-श्रीपादुकां पू० त० नमः।
,, भुं भुक्तिसिद्धि ,,
,, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति ,,
,, ह्स्ख्फ्रें—(इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य—)
,, अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम्। (इति पूजां समर्प्य—)

,, रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहा-त्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। (इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

अष्टमावरणम्

मध्यत्र्यस्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन—
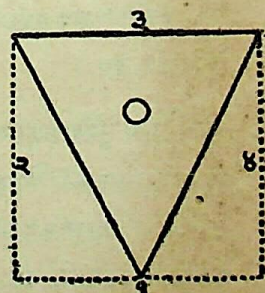
३ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरी कामेश्वरबाणेभ्यो नमः। बाणशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

„ थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां नमः।
धनुः शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

„ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां नमः।
पाशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

„ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां नमः।
अङ्कुशशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।
(इत्यायुधार्चनं विदध्यात्। ततः—

३ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः) (नादप्रकृतिकगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्पबन्धुकिरणे त्रिकोणे अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण—)

„ ऐं क-५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक-आत्मतत्त्व--सृष्टिकृत्य--जाग्रद्दशाधिष्ठायक—इच्छाशक्ति--वाग्भवात्मक-वागीश्वरीस्वरूप-ब्रह्मात्मशक्ति-महाकामेश्वरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

„ क्लीं ह-६ सूर्यचक्रेजालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ—दशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मकविद्यातत्त्व-स्थितिकृत्य—स्वप्नदशाधिष्ठायक-ज्ञानशक्ति—कामराजात्मककामकलास्वरूप -- विष्ण्वात्मशक्ति – महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३　सौः स-४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदलषोडशदलचतुरस्रचक्रात्मक-शिवतत्त्व-संहारकृत्य — सुषुप्तिदशाधिष्ठायक-क्रियाशक्तिशक्तिबीजात्मक — परापरशक्तिस्वरूप--रुद्रात्मशक्ति--महाभगमालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

,,　ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ-समस्तचक्रात्मक--सपरिवार-परमतत्त्व--सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य-तुरीय-दशाधिष्ठायक -- इच्छाज्ञानक्रिया--शान्ताशक्ति -- वाग्भवकामराज-शक्तिबीजात्मक-- परमशक्तिस्वरूप - परब्रह्मात्मशक्ति – श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

,,　एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्रा ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

(महाकामेश्वर्याः पुरतः—)

,,　ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः ।

,,　इं इच्छासिद्धि　　　　　　　　　　,,

,,　ह्सौः—सर्वबीजामुद्राशक्ति　　　　　　,,

,,　ह्सौः (इति सर्वबीजामुद्रां प्रदर्श्य—)

,,　अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ (इति पूजां समर्प्य—)

,,　अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

नवमावरणम्

३ क-१५ सर्वानन्दमयचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

(विन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मके विन्दुचक्रे—)

„ ("मूलं") श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (इति त्रिः सन्तर्प्य।)

„ एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाऽस्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) (महात्रिपुरसुन्दर्याः पुरतः—)

३ "पञ्चदशी" श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ पं प्राप्तिसिद्धि „

„ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति „

„ ऐं (इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य*)

„ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥
(इति पूजां समर्प्य—)

३ परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।
(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्।)

---

* षोडश्युपासकानाङ्कृते विशेषः—

३ हसकल हसकहल सकलह्रीं तुरीयाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (इति त्रिः सन्तर्प्य—)

३ सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायक--शान्त्यतीतकलात्मक--प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मकपरब्रह्म--स्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सकलजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाऽस्तु नमः। (इति समष्ट्यञ्जलिं विधाय)

३ सं सर्वकामसिद्धि-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

,, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः इति सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः।

,, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः (इति सर्वत्रिखण्डामुद्रां प्रदर्श्य।) ततः समर्पणम्

पञ्चपञ्चिकापूजा

(बिन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वाय्वीशानाग्निनिर्ऋतिकोणेषु च क्रमेण यजेत्।)
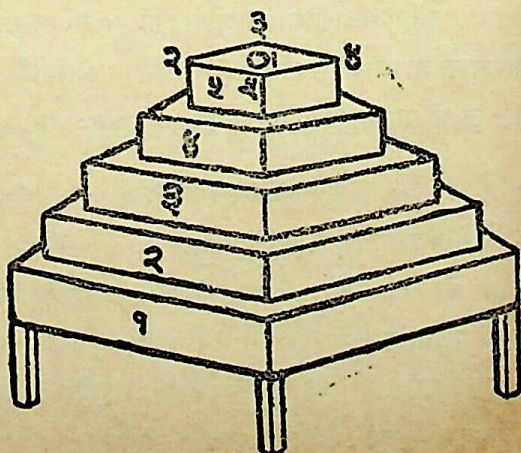
१—पञ्चलक्ष्म्यः

३ (मूलं) श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (मध्ये)

,, श्रीं लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः (वायव्ये)

,, ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (ईशाने)

,, श्रीं ह्रीं क्लीं। त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)

,, श्रीं सहकलह्रीं श्रीं। सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (नैर्ऋते)

२—पञ्चकोशाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (मध्ये)

,, ॐ ह्रीं हंसस्सोहं स्वाहा। परंज्योतिःकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (वायव्ये)

,, ॐ हंसः। परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (ईशाने)

,, हंस अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)

,, अं आं + ळं क्षं मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (नैर्ऋते)

३—पञ्चकल्पलताः

३ (मूलं) श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (मध्ये)

,, ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)

,, ॐ ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः ह्स्रै। पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (ईशाने)

,, श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (आग्नेये)

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः । पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

४—पञ्चकामदुघाः

३ (मूलं) श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (मध्ये)

,, ॐ ह्रीं हंसः जुं सञ्जीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा । अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (वायव्ये)

,, ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः सुधाकामदुघाम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः । (ईशाने)

,, ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा । अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (आग्नेये)

,, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा । अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

५—पञ्चरत्नाम्बाः

३ (मूलं) श्रीविद्यारत्नाम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः । (मध्ये)

,, ज्झ्रौं महाचण्डे तेजः सङ्कर्षिणि कालमन्थाने हः । सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः । (वायव्ये)

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीराजमातङ्गश्वरि सर्वजन-मनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुष-वशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। श्रीराजमातङ्गीश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (इशाने)

„ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)।

„ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।
वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुकां पू त० नमः। (नैरृते)

षड्दर्शनविद्या

३ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा। तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (गायत्री) परोरजसे सावदोम् ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ ह्रीं नमश्शिवाय। रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों। सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ नमो नारायणाय। विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

षडाधारपूजा।

३ सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथस्वरूपिण्यै नमः। गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः। ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ लां हंसस्सोहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ रां हंसश्शिवस्सोहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिवस्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ डां सोहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वरस्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

„ हां हंसश्शिवस्सोहं सोहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै हाकिनीसहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

अथाम्नायसमष्टिपूजा

३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः, पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनीदेव्यम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ (मूलम्) गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशति-सहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः, दक्षिणाम्नाय-समयविद्येश्वरी-भोगिनी-देव्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्य-विद्यादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरि-पीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्रैं ह्स्रीं ह्स्रौः ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किंणि किंणि विच्चे ह्स्रैः ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः पश्चिमाम्नाय-समयविद्येश्वरी-कुब्जिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) दशदूती-मण्डलत्रय-दशवीर-चतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धर-पीठस्थितायै पश्चिमाम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नायसमय-विद्येश्वरी कालिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) नवमुद्रा-पञ्चवीरावलिसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

❀ षोडश्युपासकानाम्

३ मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० ।

३ (मूलं) श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज-गुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्ताशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः।
श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः। अनुत्तरशाङ्कर्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलं) परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादि-श्रीपूर्तिविद्यासहितानन्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

(ततः बाला-अन्नपूर्णा-अश्वारूढामन्त्रैः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्)।

दण्डनाथानामार्चनम्

३ पञ्चम्यै	नमः	३ पोत्रिण्यै	नमः
,, दण्डनाथायै	,,	,, शिवायै	,,
,, सङ्केतायै	,,	,, वार्ताल्यै	,,
,, समयेश्वर्यै	,,	,, महासेनायै	,,
,, समयसङ्केतायै	,,	,, आज्ञाचक्रेश्वर्यै	,,
,, वाराह्यै	,,	,, अरिघ्न्यै	,,

३ (मूलम्) गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्येश्वरीपर्यन्तचतुर्विंशति-सहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः, दक्षिणाम्नाय-समयविद्येश्वरी-भोगिनी-देव्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) भैरवाष्टकनवसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगसहितायै सौभाग्य-विद्यादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तत्रिंशत्सहस्रदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरि-पीठस्थितायै दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ ह्स्रैं ह्स्रीं ह्स्रौः ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्रैः ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः पश्चिमाम्नाय-समयविद्येश्वरी-कुब्जिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) दशदूती-मण्डलत्रय-दशवीर-चतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धर-पीठस्थितायै पश्चिमाम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट्। उत्तराम्नायसमय-विद्येश्वरी कालिकादेव्यम्बा श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ (मूलम्) नवमुद्रा-पञ्चवीरावलिसहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-श्रीपादुकां पू० त० नमः।

❀ षोडश्युपासकानाम्

३ मखपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० ।

३ (मूलं) श्रीमन्मालिनिमन्त्रराज-गुरुमण्डलसहितायै पराम्बादिसमय-विद्येश्वरीपर्यन्ताशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठस्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका श्रीपादुकां पू० त० नमः ।

३ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः । अनुत्तरशाङ्कर्यम्बा-श्रीपादुकां पू० त० नमः ।

३ (मूलं) परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्यादि-श्रीपूर्तिविद्यासहितानन्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टि-रूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका-श्रीपादुकां पू० त० नमः ।

(ततः बाला-अन्नपूर्णा-अश्वारूढामन्त्रैः अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गदेवतार्चनं कृत्वा मूलेन देवीं त्रिः सन्तर्पयेत्) ।

दण्डनाथानामार्चनम्

३ पञ्चम्यै	नमः	३ पोत्रिण्यै	नमः
,, दण्डनाथायै	,,	,, शिवायै	,,
,, सङ्केतायै	,,	,, वार्तल्यै	,,
,, समयेश्वर्यै	,,	,, महासेनायै	,,
,, समयसङ्केतायै	,,	,, आज्ञाचक्रेश्वर्यै	,,
,, वाराह्यै	,,	,, अरिघ्न्यै	,,

मन्त्रिणीनामार्चनम्

३	सङ्गतयोगिन्यै	नमः	३	वीणावत्यै	नमः
,,	श्यामायै	,,	,,	वैणिक्यै	,,
,,	श्यामलायै	,,	,,	मुद्रिण्यै	,,
,,	मन्त्रनायिकायै	,,	,,	प्रियकप्रियायै	,,
,,	मन्त्रिण्यै	,,	,,	नीपप्रियायै	,,
,,	सचिवेशान्यै	,,	,,	कदम्बवनवासिन्यै	,,
,,	प्रधानेश्यै	,,	,,	कदम्बेश्यै	,,
,,	शुकप्रियायै	,,	,,	सदामदायै	,,

ललितानामार्चनम्

३	सिंहासनेश्यै	नमः	३	महाराज्ञ्यै	नमः
,,	ललितायै	,,	,,	वराङ्कुशायै	,,
,,	चापिन्यै	,,	,,	कामराजप्रियायै	,,
,,	त्रिपुरायै	,,	,,	कामकोटिकायै	,,
,,	महात्रिपुरसुन्दर्यै	,,	,,	चक्रवर्तिन्यै	,,
,,	सुन्दरीचक्रनाथायै	,,	,,	महाविद्यायै	,,
,,	सम्राज्ञ्यै	,,	,,	शिवायै	,,
,,	चक्रिण्यै	,,	,,	अनङ्गवल्लभायै	,,
,,	चक्रेश्यै	,,	,,	सर्वपाटलायै	,,
,,	महादेव्यै	,,	,,	कुलनाथायै	,,
,,	कामेश्यै	,,	,,	आम्नायनाथायै	,,
,,	परमेश्वर्यै	,,	,,	सर्वाम्नायनिवासिन्यै	,,

ॐ शृङ्गारनायिकायै नमः

(अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिना—अर्चनं कुर्यात् ।)

(इति पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूपदीपौ कल्पयित्वा, सर्वसंक्षोभिण्यादि-सबीजामुद्राः प्रदर्श्य,

धूपम्—

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवास-सम्मिश्रितैः,
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषाऽऽलोडितैः ।
श्रीखण्डागुरु-गुग्गुलप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिर्धूपं
ते परिकल्पयामि जननि ! त्वं धूपमङ्गीकुरु ॥

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै धूपमाघ्रापयामि नमः ।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीपम्—

स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ।
सबाह्याभ्यन्तरं ज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम् ॥

३ (मूलम्) साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै दीपं दर्शयामि नमः ।

महानैवेद्यम्—

मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत्) ।

श्रीदेव्यग्रे चतुरस्रमण्डलं सामान्यार्घ्योदकेन विधाय तत्र —

आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्यकांस्यादिस्थालीचषकभरितं भक्ष्यभोज्य-

चोष्यलेह्यपेयात्मकं सद्रव्यशुद्ध्यादिरसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं निधाय—

"मूलेन" निरीक्ष्य

३ ऐं ह्रः—इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य—

३ ओं जुं सः वौषट्—इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य, चक्रमुद्रां प्रदर्श्य—

३ यं—इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारं जपन् तद्गत-दोषान् संशोष्य—३ रं—इति वह्निबीजेनाधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य—

मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य

३ वं—इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य—(मूलेन) सप्तवारमभिमन्त्र्य—

३ ॐ क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुर स्फुर श्रीं परश्रीं—इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य—

देव्यै पाद्यम्, अर्घ्यम् आचमनीयं च दत्त्वा—

३ (मूलेन) देवीं त्रिः सन्तर्प्य—

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चिद् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्

३ (मूलम्)-साङ्गायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै सर्वात्मिकायै श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नैवेद्यं कल्पयामि नमः। इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य, कृताञ्जलिः —

३ हेमपात्रगतं दिव्यं परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं ग्रहाण परमेश्वरि ॥
शर्करापायसापूप-घृतव्यञ्जन-संयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम् ॥ (इति निवेद्य)

अमृतोपस्तरणमसि—इति देव्यै आपोशनं दत्त्वा वामकरेण ग्रासमुद्रां दर्शयन्, दक्षकरेण प्राणादि-पञ्चमुद्राः प्रदर्शनपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतोः कल्पयेत्। यथा —

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ क्लीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः व्यानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं उदानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा, ३ ब्रह्मणे स्वाहा।

३ क ए ई ल ह्रीं नमः, आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

३ ह स क ह ल ह्रीं नमः, विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

३ स क ल ह्रीं नमः, शिवतत्त्वव्यापिनी श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

३ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः, सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

(इति किञ्चित् किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं समर्पयेत्, प्रार्थयेच्च।)

३ चित्पात्रे सद्धविस्सौख्यं विविधानेक-भक्षणम्।
निवेदयामि ते देवि सानुगायै जुषाण तत्॥
मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥
मधु नक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः। मधुद्यौरस्तु नः पिता॥
मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥
—इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तदात्म्येन समर्पयेत्।
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम्।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब ! पीयताम्॥

३ नमस्ते देवदेवेशि: सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अमृतानन्द-सम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै अमृतपानीयं समर्पयामि ।
ततो भुञ्जानां परदेवतां ध्यायेत्—

३ ब्रह्मेशाद्यैः सरसमभितः सूपविष्टैः समन्ताद्,
दिव्याकल्पैर्ललितरमणी वीज्यमाना सखीभिः ।
नर्मक्रीडा-प्रहसनपरा हासयन्तो सुरेशान्,
भुङ्क्ते पात्रे कनकखचिते षड्रसान् लोकधात्री ॥
इति देवीं भुक्तवतीं सुतृप्तां ध्यात्वा—

३ अमृतापिधानमसि । इत्युत्तरापोशनं दत्त्वा—

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै हस्तप्रक्षालनं मुखप्रक्षालनम् आचमनीयं च कल्पयामि नमः ।
(ताम्रबलिपात्रे निवेदनसामग्रीः किञ्चित् किञ्चिदादाय निवेदन-पात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलमस्त्रेण शोधयेत् ।)

ताम्बूलम्—

३ वनस्पतिदैवत्याय ताम्बूलाय नमः । (इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य—

३ तमाल-दल-कर्पूर-पूगभाग-समन्वितम् ।
एलापत्र-सुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥
ताम्बूलवल्लिदलनिर्जित हेमवर्णं-स्वर्णाक्तपूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम् ।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं, ताम्बूलमम्ब ! वदनाम्बुरुहे गृहाण ॥

३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै मुखमण्डनार्थं ताम्बूलं कल्पयामि नमः ॥

अथ बहुमणिमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य,
त्रिभुवन-कमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां,
जननि ! कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥

इति च विभाव्य —

नीराजनम्

ततः सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्करेखात्मकम्, अष्टदलकमल-कर्णिकास्थापित-मणिमयस्वर्ण-रजत-ताम्रपात्रदीपं कर्पूरं च—प्रज्वाल्य पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकम् नीराजयेत् —

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम्।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

रत्नालङ्कृत-हेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै—
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः ।
आताम्रज्वलदुज्ज्वलज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा,
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः ॥

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्,
डमरु-सदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान् ।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै-
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्त्तिकं ते ॥

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः।
तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥

(इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत्।

मन्त्रपुष्पम्

अथाञ्जलौ पुष्पाण्यादाय मन्त्रपुष्पम् । यथा) —

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस-
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥[1]

(इति, उक्त्वा पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् प्रदक्षिणा नमस्कारांश्च)—

प्रदक्षिणा

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति ।
तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां-प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥

(इति प्रदक्षिणां विभाव्य[2] नमस्कुर्यात्—)

रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम् ।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानी-पदपङ्कजाभ्याम् ॥

कञ्जासनादि-सुरवृन्दलसत्किरीट-
कोटिप्रघर्षण-समुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे ।
त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं,
दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन ॥

सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतंसमानन्दपूर्णनयनत्रयशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्रं शम्भोः कलत्रममितां श्रियमातनोतु ॥

---

१. इत्येते कतिचिच्चतुष्षष्ट्युपचारातिरिक्ता उपचारास्तु पूर्ववत् धूपदीपेतिसूत्रगतेनादिपदेन गृह्यन्ते ।

२. अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमा ।
वेदार्धचन्द्रवह्न्यद्रिसङ्ख्याः स्युः सर्वसिद्धये ॥

महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं, स्वतो न्यस्तबिन्दुं स्वयं न्यस्तहार्दम् ।
भवद्वक्त्र-वक्षोज-गुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद् भावयेत् स त्वमेव ॥
तथाऽन्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयं ते ।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥
मिहिरबिन्दुमुखीं तदधो लसच्छशि-हुताशन-बिन्दुयुगस्तनीम् ।
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम् ॥

कामकलाध्यानम्

(अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्तनौ सपरार्धेन योनिरिति सानुस्वारे तुरीयस्वरे कामकलात्मिकां ध्यात्वा, सौः इति देवीशक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत् ।)

होमस्य कृताकृतत्वम्

(अथ होमः । स च "यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः" इति सूत्रगतेन "यदि" इति पदेन कृताकृतः सूचितः । तस्य च करणपक्षे तदितिकर्तव्यता होम-प्रकरणाद् ज्ञातव्या । तत्र च महाव्याहृतिहोमादर्वागेव बलिदानम् ।

(होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम् ।)

बलिदानविधिः

(देव्या दक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य)

'३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः' ।

(इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य) ।

'३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फुट् स्वाहा'।

(इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्त्वा, वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य प्रणमेत्)। इति बलिदानविधिः।

अथ जपप्रकरणोक्तविधिना जपं निर्वर्त्य स्तुवीत।

पुष्पाञ्जलिस्तोत्रम्

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस-
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले,
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥

समस्तमुनियक्षकिम्पुरुषसिद्धविद्याधर—
गुहासुर-सुराप्सरो-गणमुखैर्गणैः सेविते।
निवृत्तितिलकाम्बरप्रकृतिशान्तिविद्याकला—
कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः॥

त्रिवेदकृतविग्रहे त्रिविधकृत्यसन्धायिनि,
त्रिरूपसमवायिनि त्रिपुरमार्गसञ्चारिणि।
त्रिलोचनकुटुम्बिनि त्रिगुणसंविदुद्यत्पदे,
त्रयि त्रिपुरसुन्दरि त्रिजगदीशि पुष्पाञ्जलिः॥

पुरन्दर-जलाधिपान्तक-कुबेररक्षोहर—
प्रभञ्जनधनञ्जय-प्रभृतिवन्दना-नन्दिते।
प्रवालपदपीठिका-निकटनित्य-वर्तिस्वभू—
विरिञ्चिविहितस्तुते विहत एष पुष्पाञ्जलिः॥

यदानतिबलादलङ्कृतिरुदेति विद्यावय—
स्तपोद्रविण-सौरभाकृति-कवित्वसविन्मयी ।
जरामरणजन्मजं भयमपैति तस्यै समा—
हिताखिलसमीहितप्रसवभूमि तुभ्यं नमः ॥

निरावरण-संविदुद्गम-परास्तभेदोल्लस—
त्पदास्पदचिदेकतावरशरीरिणि स्वैरिणि ।
रसायनतरङ्गिणी-रुचितरङ्ग-सञ्चारिणि,
प्रकामपरिपूरणि प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः ॥

तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदं,
सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः ।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा,
शिवङ्करि शिवे परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः ॥

त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा,
त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला ।
त्वमेव वपुषः स्थितिस्त्वमखिलायतिस्त्वं गुरुः,
प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः ॥

इति पुष्पाञ्जलिस्तोत्रम् ।

कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि—
र्लक्ष्मी स्वयंवरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले,
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ॥१॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते,
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सांनिध्यमुद्य-दरुणायत-सोदरस्य,
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य ॥२॥
ईशित्वभावकलुषाः कति नाम सन्ति,
ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते,
यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति ॥३॥
लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं,
कारुण्यकन्दलित-कान्तिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः,
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ॥४॥
ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति वेदाः;
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय,
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥५॥
हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः,
क्रूरः कथं नु भविता गरलस्य वेगः ।
आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्धं,
देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥
सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते,
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः ।

किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं,
द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति ॥७॥

कल्पद्रुमै-रभिमत-प्रतिपादनेषु,
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः ।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं,
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम् ॥८॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये,
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु ।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि,
त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव ॥९॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित् ।
नूनं मयापि सदृशं करुणैकपात्रं,
जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥१०॥

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानां,
कि नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे ।
मालाकिरीट-मदवारण-माननीयां—
स्तान् सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥११॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि,
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरितौघहरोद्यतानि,
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥

कल्पोपसंहरणकल्पितताण्डवस्य,
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य ।
पाशाङ्कुशैक्षव–शरासन–पुष्पबाणा,
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥१३॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं,
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम् ।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं,
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम् ॥१४॥

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं,
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले ।
त्वत्तेजसा परिणतं जगदादिमूलं,
सङ्गं तनोतु सरसीरुहसङ्गमस्य ॥१५॥

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं,
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित् ।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी,
वाणीनिर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः ॥१६॥

सर्वसिद्धिकृत्स्तोत्रम्

३ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनी-राशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि, मातृकां पीठरूपिणीम् ॥१॥
प्रणमामि महादेवीं, मातृकां परमेश्वरीम् ।
कालहल्लोहलोल्लोलकलनाशमकारिणीम् ॥२॥

यदक्षरैकमात्रेऽपि, संसिद्धे स्पर्धते नरः ।
रवितार्क्ष्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ॥३॥
यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम् ।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं, महाश्रीसिद्धमातृकाम् ॥४॥
यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं, तां वन्दे सिद्धिमातृकाम् ॥५॥
यदेकादशमाधारं, बीजं कोणत्रयोद्भवम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं, जगदद्यापि दृश्यते ॥६॥
अकचादिटतोन्नद्धपयशाक्षरवर्गिणीम् ।
ज्येष्ठाङ्गबाहुहृत्पृष्ठकटिपादनिवासिनीम् ॥७॥
तामीकाराक्षरोद्धारां, सारात् सारां परात्‌ परम् ।
प्रणमामि महादेवीं, परमानन्दरूपिणीम् ॥८॥
अद्यापि यस्या जानन्ति, न मनागपि देवताः ।
केयं कस्मात् क्व केनेति, ! सरूपारूपभावनाम् ॥९॥
वन्दे तामहमक्षय्यां 'क्षकाराक्षररूपणीम् ।
देवीं कुलकलोल्लासप्रोल्लसन्तीं परां शिवाम् ॥१०॥
वर्गानुक्रमयोगेन, यस्यां मात्रष्टकं स्थितम् ।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्ध्यष्टकेश्वरीम् ॥११॥
कामपूर्णजकाराख्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम् ।
चतुराज्ञाकोशमूलां नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ॥१२॥
इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत् ।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तथ्यतः ॥

क्षमाप्रार्थना

भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना,
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा,
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥

पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्बान्धवजनः,
प्रभुस्तीर्थं कर्माविकलमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे,
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा,
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता,
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥

हे सद्रूपिणि हे चिदर्चिरुदये हे कामराजप्रिये,
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि ।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे,
हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥

नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते,
नमः पद्माटव्यां कुतुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये,
नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥

जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये,

जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे ।

जय जय निखिलार्थदानशौण्डे,

जय जय हे ललिताम्ब चित्सुखाब्धे ॥

श्रीगुरुस्तोत्रम्

षडङ्गदेवता नित्या दिव्याद्योघत्रयीगुरून् ।

नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥

अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ॥

अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥ (नमः)

अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥ (नमः)

यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम् ॥

बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ।

मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

(एवमादिभिरन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिरखिललोकमातरमभिष्टुत्य शक्तिं पूजयेत् ।)

सुवासिनीपूजनम्

यथा—प्राङ्निमन्त्रितां गौरीरूपिणीं दीक्षितां सुवासिनीं प्रक्षालितपादामासन उपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदा 'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः' इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा, इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यसलिलेन शक्तिं त्रिः सम्प्रोक्ष्य—

३ ॐ शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु प्रणश्यत्वशुभञ्च यत् ।

यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु ।

इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखां जपेत्। अथ तां देवतारूपां विभाव्य '३ ऐं क्लीं सौः शक्त्यै अमुकं समर्पयामि' इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुम-चन्दनपट्टवासः पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात्।

सा च दीक्षिता चेत्

समस्तप्रकटयोगिनीत्यादि समष्टिमन्त्रेण श्रीदेव्यै नवावरणदेवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्यास्तस्याः करे विशेषार्घ्यादमृतं पात्रान्तरे कृत्वा समर्पयेत्। (साप्युत्थाय तदादाय शिरसि गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुं त्रिरिष्ट्वा हृदि देवीञ्च सन्तर्प्य मूलेन गुर्वाज्ञां गृहीत्वा मूलान्ते 'सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा) इति मन्त्रेण सर्वतत्त्वं शोधयेत्। ततश्च तस्याः पूजनं कुर्य्यात्।

अदीक्षिता चेदलिपात्रदानमेव

(पश्चात्तां भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत्।)

तत्त्वशोधनम्

(सन्निहिते गुरौ गन्धमाल्यादिभिः सम्पूज्य पात्राणि समर्पयेत्)। असन्निहिते च स्वशिरसि गुरुपात्रामृतेन गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुत्रयं यजेत्। समुपस्थितसाधकेभ्यः पात्राणि दत्वा पश्चात् तत्त्वशोधनं विदध्यात्)।

३ क—५ प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणि-पादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अं-अः ३ क—५ आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। आत्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ ह—६ मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना कं····मं ३ ह ६ विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। अन्तरात्मा मे शुद्ध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ स—४ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं····क्षं शिवतत्त्वेन कार्मणमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वहा।

३ (मूलम्) प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूमिमायाकलाऽ—विद्यारागकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना—

अं आं····ळं क्षं (मूलम्) सर्वतत्त्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिनं जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

ततः षोडश्युपासकानां पूर्णाभिषिक्तानां पञ्चमपात्रेण —

३ (मूलम्) पूर्णमदः पूर्णमिदं, पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते॥

ऐं ह्रीं श्रीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि, अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा। इति।

(गुरौ सन्निहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्धा) चिदग्नौ होमबुद्धया जुहुयात्। ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान् निक्षिप्य—

३ देवनाथ गुरो स्वामिन्, देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो! पात्रं पूर्णतरं कुरु॥

(इति गुरवे समर्पयेत्। असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले स्थापयेत्)।

पूजासमर्पणम्

(ततः सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदादाय—)

साधु वाऽसाधु वा कर्म, यद्यदाचरितं मया ।
तत् सर्वं कृपया देवि ! गृहाणाराधनं मम ॥

(इति देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि त्रिः—परिभ्राम्य तज्जलं हस्ते सामादाय सामयिकानामात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् । ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,)

देवतोद्वासनम्

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि, यन्मयाऽऽचरितं शिवे ।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा, क्षमस्व परमेश्वरि ॥ (इति क्षमाप्य,
रश्मिरूपा महादेव्यः पूजिता याश्च देवताः
ललिताया वपुस्यत्र, लीनाः सन्तु सुखवहाः

सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य, खेचरीं बद्ध्वोद्वास्य—निर्वाणमुद्रया श्रीयन्त्रस्थं पुष्पमुत्थाप्य नासिकयाऽऽघ्राय च शिरसि धारयेत्) ।

हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शिवेन सह सुन्दरि ।
प्रविश त्वं महादेवि, सर्वैरावरणैः सह ॥

तेजोरूपेण परिणतां श्रीदेवीं पूर्ववद् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्ति पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभाव्य ।

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा,
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेऽपराधान् क्षमस्व ।

न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः,
सानन्दं मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥

इति विसर्जनम् ।

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां, यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां, करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः,
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था,
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं, ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च, जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

(इत्यादि शान्तिश्लोकान् पठित्वा, विशेषार्घ्यंविसर्जनं कुर्यात्

यथा—विशेषार्घ्यपात्रं मूलेनामस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेणादाय "आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि" इति पूर्वोक्तमन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्त्वा तत्पात्रमन्यानि च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्यावस्थापयेत् ।

(पुनः श्रीयन्त्रं पञ्चोपचारैः सम्पूज्य—)

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा, कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ।
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते, हृदयकमलमध्ये देवि ! हर्षं तनोतु ॥

इति पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा—

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे शिवं गुरुम् ॥

इति परमशिवं महाकामेश्वरं सम्पूज्य—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

इति महाविष्णुं पूजयेत् ।

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि ! ।
यत्कृतं तु मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥

इति श्रीदेव्या वामहस्ते जलेन पूजां समर्प्य—

कृतेनानेन समर्चनेन महाकामेश्वराङ्कनिलया
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका प्रियताम् ।

ततः श्रीयन्त्राभिषेक-तर्पण-समर्पणजलेन स्वगात्रं मार्जयेत् ।
शेषेण चन्दनेन स्वललाटे तिलकं विधाय स्वात्मानं श्रीचक्राभिन्नं भावयेत् ॥

मायान्ततत्त्वे सदहं शिवोऽहं शक्त्यन्ततत्त्वे चिदहं शिवोहम् ।
शिवान्ततत्त्वे सुखदः शिवोऽहमतः परं पूर्णमनुत्तरोऽहम् ॥

धर्माधर्म-हविर्दीप्ते स्वात्माग्नौ मनसा स्रुचा ।
सुषुम्ना-वर्त्मना नित्यमक्ष-वृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥
प्रकाशकाश-हस्ताभ्यामवलम्ब्योन्मनी-स्रुचम् ।
धर्माधर्म-कला-स्नेह-पूर्णवह्नौ जुहोम्यहम् ॥
देशिकवागुपदेशविनश्यद्देहमरुन्मय-शून्य-विकल्पः ।
अद्वयबोध-विमर्शसुखःसनद्य शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि ॥

अन्तर्निरन्तर-निरिन्धनमेधमाने, मोहान्धकारपरिपन्थिनि संविदग्नौ।
कस्मिश्चिदद्भुतमरीचिविकासभूमौ, विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम्॥

इति च विभाव्य—

(अतो यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत)।

श्रीषोडशानन्दनाथ (करपात्र स्वामि) सङ्कलितायां
श्रीविद्यावरिवस्यायां सपर्याविधिः समाप्तः।

श्रीचक्रे त्रिवृत्तार्चनम्

हयग्रीवानन्दभैरवदक्षिणामूर्तिसम्प्रदायत्रये पार्थक्यं मत्वा स्वसम्प्रदाय पुरस्सरं केचन त्रिवृत्तार्चनं न कुर्वन्ति, केचन च कुर्वन्ति तेभ्यस्त्रिवृत्तार्चन-विधिरपि लिख्यते।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राय नमः। (इति पुष्पाञ्जलिं दत्वा संहारक्रमेण शुक्लारुणकृष्णवर्णरेखात्रयस्य मायावीजप्रकृतिकस्य गुण-प्रकृति-परादि-वागात्मकस्य-प्रथमवृत्तरेखायां देव्यग्रमारभ्याप्रादक्षिण्येन—)

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कं कालरात्रि श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः।
(२) ,, ,, खं खण्डिता ,, ,, ।
(३) ,, ,, गं गायत्री ,, ,, ।
(४) ,, ,, घं घण्टाकर्षिणी ,, ,, ।
(५) ,, ,, ङं ङार्णा ,, ,, ।
(६) ,, ,, चं चण्डा ,, ,, ।
(७) ,, ,, छं छाया ,, ,, ।
(८) ,, ,, जं जया ,, ,, ।

(९) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं	झं झङ्कारिणी	श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामिनमः ।			
(१०) ,,	,,	ञं ज्ञानरूपा	,,	,,	।
(११) ,,	,,	टं टङ्कहस्ता	,,	,,	।
(१२) ,,	,,	ठं ठङ्कारिणी	,,	,,	।
(१३) ,,	,,	डं डामरी	,,	,,	।
(१४) ,,	,,	ढं ढङ्कारिणी	,,	,,	।
(१५) ,,	,,	णं णार्णा	,,	,,	।
(१६) ,,	,,	तं तामसी	,,	,,	।
(१७) ,,	,,	थं स्थाण्वी	,,	,,	।
(१८) ,,	,,	दं दाक्षायणी	,,	,,	।
(१९) ,,	,,	धं धात्री	,,	,,	।
(२०) ,,	,,	नं नारी	,,	,,	।
(२१) ,,	,,	पं पार्वती	,,	,,	।
(२२) ,,	,,	फं फट्कारिणी	,,	,,	।
(२३) ,,	,,	बं बन्धिनी	,,	,,	।
(२४) ,,	,,	भं भद्रकाली	,,	,,	।
(२५) ,,	,,	मं महामाया	,,	,,	।
(२६) ,,	,,	यं यशस्विनी	,,	,,	।
(२७) ,,	,,	रं रक्ता	,,	,,	।
(२८) ,,	,,	लं लम्बोष्ठी	,,	,,	।
(२९) ,,	,,	वं वरदा	,,	,,	।
(३०) ,,	,,	शं श्री	,,	,,	।

(३१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं षं षण्ढा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
(३२) ,, ,, सं सरस्वती ,, ,, ।
(३३) ,, ,, हं हंसवती ,, ,, ।
(३४) ,, ,, क्षं क्षमावती ,, ,, ।

द्वितीयवृत्तरेखायामप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं अं अमृता श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ।
(२) ,, ,, आं आकर्षिणी ,, ,, ।
(३) ,, ,, इं इन्द्राणी ,, ,, ।
(४) ,, ,, ईं ईशानी ,, ,, ।
(५) ,, ,, उं उमा ,, ,, ।
(६) ,, ,, ऊं ऊर्ध्वकेशी ,, ,, ।
(७) ,, ,, ऋं ऋद्धिदा ,, ,, ।
(८) ,, ,, ॠं ॠकारा ,, ,, ।
(९) ,, ,, ऌं ऌकारा ,, ,, ।
(१०) ,, ,, ॡं ॡंकारा ,, ,, ।
(११) ,, ,, एं एकपदा ,, ,, ।
(१२) ,, ,, ऐं ऐश्वर्यात्मिका ,, ,, ।
(१३) ,, ,, ओं ओङ्कारा ,, ,, ।
(१४) ,, ,, औं औषधि ,, ,, ।
(१५) ,, ,, अं अम्बिका ,, ,, ।
(१६) ,, ,, अः अक्षरा ,, ,, ।

तृतीयवृत्त-रेखायामप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		अं कामेश्वरी	श्रीपादुकां पूजयामि	तर्पयामि	नमः।
(२) ,,	,,	आं भगमालिनी	,,	,,	।
(३) ,,	,,	इं नित्यक्लिन्ना	,,	,,	।
(४) ,,	,,	ईं भेरुण्डा	,,	,,	।
(५) ,,	,,	उं वह्निवासिनी	,,	,,	।
(६) ,,	,,	ऊं महावज्रेश्वरी	,,	,,	।
(७) ,,	,,	ऋं शिवदूती	,,	,,	।
(८) ,,	,,	ॠं त्वरिता	,,	,,	।
(९) ,,	,,	ऌं कुलसुन्दरी	,,	,,	।
(१०) ,,	,,	ॡं नित्या	,,	,,	।
(११) ,,	,,	एं नीलपताका	,,	,,	।
(१२) ,,	,,	ऐं विजया	,,	,,	।
(१३) ,,	,,	ओं सर्वमङ्गला	,,	,,	।
(१४) ,,	,,	औं ज्वालामालिनी	,,	,,	।
(१५) ,,	,,	अं चित्रा	,,	,,	।
(१६) ,,	,,	अः ललितामहानित्या	,,	,,	।
(१७) ,,	,,	कामेश्वरी	,,	,,	।

एता मातृकायोगिन्यस्त्रिवर्गसाधकचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु इति, तासां समष्ट्यर्चनं विधाय कालरात्र्याः पुरतः ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुरेशिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

गं गरिमासिद्धिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ऐं महायोनिमुद्राशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। ऐं महायोनिमुद्रां प्रदर्श्य—

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि, शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं, द्वितीयावरणार्चनम्॥

एतद्रीत्या सर्वाशापरिपूरकचक्रे तृतीयावरणम्। तथा च दशावरणानि सम्पद्यन्ते।

अन्तश्चक्रन्यासेऽपि—

ॐ ऐं ह्रीं श्री त्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठत्र्यै कालरात्र्यादि-सहित-मातृकायोगिनीरूपायै त्रिपुरेशिनीदेव्यै नमः।

इति अधः सहस्रारोपरिभागे—सृष्टिस्थितिसंहारक्रमेण श्रीचक्रार्चन-मधिकारभेदेन भवति।[1]

अथ जपविधिः

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्द-भैरवाय ऋषये नमः (शिरसि), ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नमः (मुखे), ३ श्रीमहत्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदि) ३ ऐं बीजाय नमः (गुह्ये) ३—सौः शक्तये नमः (पादयोः)। क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), ३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः (करसम्पुटे)

ऐं ह्रीं श्रीं (मूलविद्यया, सर्वाङ्गे त्रिर्व्यापकम्।)

३ क ए ई ल ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

३ ह स क ह ल ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

---

१. अस्य विशदविवरणं "श्रीविद्यारत्नाकरे" द्रष्टव्यम्।

३ स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्।

३ क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं।

३ ह स क ह ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

३ स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

एवं हृदयादिन्यासः। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः।

३ ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा।

३ स क ल ह्रीं शिखायै वषट्।

३ क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम्।

३ ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।

३ स क ल ह्रीं अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरोम्

(इति दिग्बन्धः)।

(अथ ध्यानम्। तच्च पूर्वोक्तमेव।)

(षोडश्युपासकानान्तु षोडशीमन्त्रस्य ऋषिच्छन्ददेवताः षडङ्गन्यासाः)।

(श्रीषोडशाक्षर्यास्तु—दक्षिणामूर्तिः ऋषिः। तत्र करषडङ्गन्यासयोः तत्कूटषट्कमिति विशेषः)।

(ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरुदेवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत्)।

अथ 'ह्रीं' (मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य) ३ ऐं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा (इति द्वादशाक्षरीं कुल्लुकाविद्या), ततो (हृदयमुद्रया हृदि हस्तं दत्त्वा), ३ ॐ (इत्येकाक्षरं सेतुम्), (अथ कण्ठे न्यासमुद्रया) ३ ह्रीं (इत्येकक्षारं महासेतुम्), (तदनु नाभौ पूर्वमुद्रयैव) ३ ॐ अं····क्षं (५१)

ऐं (मूलं) ऐं अं…क्षं (५१) ॐ (इति एकविंशाधिकैकशताक्षरं निर्वाण-मन्त्रं च त्रिस्त्रिर्जपेत् ।) ऐं ह्लीं श्रीं क्लीं (इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिर्जपेत्) ।

३ ईं (इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिर्जपेत्) ।

३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरा-परातिरहस्ययोगिनीभ्यो नमः (इति समष्टिमन्त्रं जपेत्) ।

३ ई ए क ल ह्लीं ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्लीं

(इति पञ्चदशाक्षरमुत्कीलनं सप्तवारं जपेत्) ।

३ विद्युदक्षीं परां विद्यां, कालिकां देशभाषिणीम् ।
खड्गमुण्डविकाराख्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम् ॥
रक्तमाल्याम्बरधरां, घोररूपां चतुर्भुजाम् ।
खड्गं शूलं कपालं च दधतीं तीक्ष्णनासिकाम् ।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद्देवीं, सर्वविद्यासुजीविनीम् ॥

(इति सञ्जीविनीं ध्यात्वा पञ्चधोपचर्य), ३ श्रीं क्लीं क्लीं हैं हैं क ल ह्लीं सौः स क ल ह्लीं क्लीं क्लीं ह्लीं श्रीं (इति सप्तदशाक्षरं सञ्जीविनीमन्त्रं सप्तवारं जपेत्) ।

ऐं ह्लीं श्रीं ह्लीं श्रीं हं सः क ए ई ल ह्लीं, ह स क ह ल ह्लीं स क ल ह्लीं हं सः ह्लीं श्रीं (इति त्रयोविंशत्यक्षरं प्राणमन्त्रं सप्तवारं जपेत्) ।

३ ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्लीं क ए ई ल ह्लीं ॐ ह्लीं श्रीं क्लीं ऐं ह स क ह ल ह्लीं, ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्लीं ह क ल ए ह्लीं ह क ह ल ह्लीं ह ए क ल ह्लीं, ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्लीं क ह ल ए ह्लीं क ह ए ल ह्लीं क ह ह ल ह्लीं हं सः, ॐ ह्लीं श्रीं हं सः सोहं स क ल ह्लीं (इति त्रिसप्तत्यक्षरं दीपिनीमन्त्रं च सप्तवारं जपेत्) ।

(इमे मन्त्राः पञ्चदशीषोडशीनां साधारणाः) ।

(षोडशाक्षर्या असाधारणाः पञ्चमन्त्राः) । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, य र ल व क्ष म ल व र यूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं (इति महाकामेश्वरमन्त्रं दशवारं जपेत्) ।

३ (पञ्चदशी) क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं (त्रिवारं जपेत् ॥१॥)

३ (षोडशी) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं (त्रिवारं जपेत् ॥२॥)

३ ऐं क्लीं सौः बालायै नमः (त्रिवारं जपेत् ॥३॥)

३ ऐं क्लीं उच्छिष्टचण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा (त्रिवारं जपेत् ॥४॥)

३ ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा (त्रिवारं जपेत् ॥५॥)

(एते पञ्च मन्त्राः पञ्चरत्नपदेनोच्यन्ते ।)

(ततः सूतकनिवारणाय प्रणवसम्पुटितां मूलविद्यां (पञ्चदशीं) दशवारमावर्त्यानन्तरं विघ्नहरान् षण्मन्त्रान् त्रिस्त्रिर्जपेत् । यथा—)

ऐं ह्रीं श्रीं इ रि मि लि कि रि कि लि प रि मि रोम् ।

३ ॐ ह्रीं नमो भगवती महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु ।

३ संहर संहर विघ्नरक्षोविभीषकान् कालय हुं फट् स्वाहा ।

३ ब्लूं रक्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः ।

३ सां सारसाय बह्वाशनाय नमः ।

पूर्वकत्वं

ारसि,)
ारे),
निर्वाणं-
जपेत् ।
न्यतम-
मपाणौ

ावृत्तेन

ों तां
क्रमा-
एतेषां
स्पति-
ारयन्
ादव-

	मूलाधारः	स्वाधिष्ठानम्	मणिपूरकम्	अनाहतम्	विशुद्धिः	आज्ञा	सहस्रारम्
स्थानम्	गुदोपरिद्व्यङ्गुलोर्ध्वं	लिङ्गे	नाभौ	हृदि	कण्ठे	भ्रूमध्ये	ललाटमध्ये
	कुण्डलिनि कुल	भारती ब्रह्मा	विष्णुः भूमिः		भारती ब्रह्मा विष्णुः	ब्रह्मा भूमिः	भारती विष्णुः भूमिः / जागरः स्वप्नः
दलानि	४	६	१०	१२	१६	२	१०००
अक्षराणि	व-स	ब-ल	ड-फ	क-ठ	अ-अः	ह, क्ष	
परिवारः	वरदाऽऽदिः	बन्दिन्यादिः	डामर्यादिः	कालरात्र्यादिः	अमृतादिः	हंसवत्यादिः	अमृताऽऽदिः
योगिन्यः	साकिनी	काकिनी	लाकिनी	राकिणी	डाकिनी	हाकिनी	याकिनी
धातवः	अस्थि	मेदः	मांसम्	असृक्	त्वक्	मज्जा	शुक्रम्

Bindu stages: बिन्दुः, अर्धचन्द्रः, रोधिनी, नादः, नादान्तः, शक्तिः, व्यापिका, समना, उन्मनी, महाबिन्दुः — सुषुप्तिः, तुर्यावस्था, तुर्यातीता अवस्था

कृत्यानि	सृष्टिः	स्थितिः	संहारः	अनाख्या
त्रिपुटी	ज्ञाता	ज्ञानम्	ज्ञेयम्	सामरस्यम्
चक्राणि	अग्नि	सूर्य-	सोम-	ब्रह्म-
नाथाः	मित्रेश-	षष्ठीश-	उड्डीश-	चर्याऽऽनन्द-
अवस्था	जागरः	स्वप्नः	सुषुप्तिः	तुर्या
शक्तयः	वामा	ज्येष्ठा	रौद्री	शान्ता
	इच्छा	ज्ञान	क्रिया	अम्बिका
	कामेश्वरी	वज्रेश्वरी	भगमालिनी	महात्रिपुरसुन्दरी
आत्मानः	आत्मा	अन्तरात्मा	परमात्मा	ज्ञानात्मा
तत्त्वानि	आत्म-	विद्या-	शिव-	सर्व-
पीठानि	कामगिरिः	पूर्णगिरिः	जालन्धरः	ओड्याणम्
आम्नायाः	प्राक्-	दक्षिण-	पश्चिम-	उत्तर-
लिङ्गानि	स्वयंभू-	बाण-	इतर-	पर-
मातृकाः	परा, पश्यन्ति, वह्निकुण्डलिनी	मध्यमा, सूर्यकुण्डलिनी, वैखरी	सोमकुण्डलिनी	

श्रीविद्यामन्त्रार्थः

षड्दर्शनप्रकाशकवेदादिविद्यालाभ्यवनसमरणप्रयोजकबुद्धि-व्यापनलहरीयुक्तया स्वप्रकाशसंविदा, अनिष्टनिवारणभोग-भोग्यादिप्राप्त्याधिक्यकीर्तिजालप्रयोजकगुणसन्ततिरूपिणी, सर्व-तत्त्व सर्वकलाधिष्ठात्री विश्वोत्पत्तिस्थितिसंहृतिजनकसर्वस्वरूपा-पेतनिरतिशयानन्दानुभवप्रकाशिका निरतिशयानन्दात्मकहरा-काशस्वपरमात्मस्वरूपिणी स्वप्रकाशा चिच्छक्तिः ।

१. वाग्भवकूटम्

(९) भूपुरम्, त्रैलोक्यमोहनम्, (८) षोडशदलम्, सर्वाशापरिपूरकम्, (७) अष्टदलम् सर्वसंक्षोभणम्,

२. कामराजकूटम्

(६) चतुर्दशारम्, सर्वसौभाग्यदायकम्, (५) बहिर्दशारम्, सर्वार्थसाधकम्, (४) अन्तर्दशारम्, सर्वरक्षाकरम्,

३. शक्तिकूटम्

(३) अष्टारम्, सर्वरोगहरम्, (२) त्र्यस्रम्, सर्वसिद्धिप्रदम्, (१) बिन्दुः सर्वानन्दमयम्,

३ दु मु लु षु मु लु षु ह्रीं चामुण्डायै नमः ।

(एते कुल्लूकाद्या विघ्नहरान्ता जपस्य पूर्वाङ्गमन्त्राः । त्रितारीपूर्वकत्वं तु सर्वेषां सिद्धमेव) ।

ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति त्रिपुरसुन्दरि स्वाहा, (कुलुकां शिरसि,) ॐ, (सेतुं हृदि), द्रीं (महासेतुं कण्ठे), ह्रीं (महासेतुं सहस्रारे), औं श्रीं अं ऐं क्लीं सौः अं आं इं ईं उं ऊं……क्षं (इति निर्वाणं-नाभौ) क्लीं (कामबीजं लिङ्गे), जिह्वायां मूलविद्यां च विचिन्त्य जपेत् ।

ततः पेशीच्छन्नां सुवर्णरत्नस्फटिकमणिपुत्रजीवरुद्राक्षाद्यन्यतम-निर्मितां मालां संस्कारविधिना संस्कृतामादाय, क्वचित्पात्रे वामपाणौ वा निधाय, सामान्यार्घ्योदकेन शुद्धोदकेन वा मूलेनाभ्युक्ष्य,)

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

(इति प्रार्थ्य,) 'ह्रीं सिद्ध्यै नमः (इति मन्त्रेण पुनः पुनः आवृत्तेन गन्धादिभिः पञ्चभिः गन्धपुष्पाभ्यामेव वा सम्पूज्य, ।

ऐं ह्रीं श्रीं गं अविघ्नं कुरु माले त्वं, करे गृह्णामि दक्षिणे ।

जपकाले तु सततं, प्रसीद मम सिद्धये ॥

(इति दक्षिणहस्तेन मालां गृहीत्वा, मध्यमामध्यपर्वालम्बिनीं तां तर्जन्या वामहस्तेन चास्पृशन् एकमणिग्रहण-अन्यमनुपाददानः क्रमा-दङ्गुष्ठाग्रेण मणीन् परिवर्तयन्-जृम्भाक्षुताद्यकुर्वन् अनिद्राणः, एतेषां सम्भवे-आचम्य, देवतात्मत्वं भावयन्, मालामपातयन्, प्रमादपति-तायामुक्तसंस्कारं कृत्वा खटखटाशब्दमकुर्वाणः अश्लिष्टमनुमुच्चारयन् असम्भाषमाणो मालामप्रदर्शयन् अन्यदप्युक्तमाचरन् श्रीगुरुमुखादव-

गतं षडर्थाद्यन्यतममर्थं चतुर्विधैक्यशून्यषट्कावस्थापञ्चकविषुवत्सप्तकमन्त्रचैतन्यादिरहस्यजातं चानुसन्दधानो यथाऽधिकारं मानसोपांशुना वा सहस्रं त्रिशतं वा मूलविद्यामारम्भे प्रोक्तसंख्यावधौ च प्रणवपुटितां सकृज्जपित्वा उत्तराङ्गमन्त्रान् जपदशमांशमावर्तयेत्)।

जपोत्तराङ्गमन्त्राः

(ते तु त्रिपुराद्यष्टचक्रेश्वरीमन्त्रा अष्टौ—)

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः, ३ ऐं क्लीं सौः, ३ ह्रीं क्लीं सौः, ३ हैं ह्क्लीं ह्सौः, ३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः, ३ ह्रीं क्लीं ब्लें, ३ ह्रीं श्रीं सौः, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः।

(मूलमेकं) ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं।
(सपर्याक्रमे प्रोक्ताः तत्तत्तिथिनित्याविद्याः। ताश्च शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्रान्ताः। कृष्णपक्षे तु चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः। तिथिवृद्धावेकां नित्यां दिनद्वये, तिथिक्षये एकस्मिन् दिवसे नित्याद्वयम्, इति क्रमेण जप्याः।

(अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गीभूता बाला, अन्नपूर्णा, अश्वारूढा, इति त्रयो-वक्ष्यमाणाश्चेति मन्त्राः)।

३ ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः (इति श्रियोऽङ्गं बाला)

३ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा, (इति श्रिय उपाङ्गमन्नपूर्णा)।

३ ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा, (इति श्रीप्रत्यङ्गमश्वारूढा)

(कालनित्या तु सूत्रकृता नोपात्ता)।

(अथ पुनरपि ऋष्यादि मानसपूजान्तं विधाय, सबीजाः सर्वसंक्षोभिण्यादि-मुद्राः प्रदर्श्य,)

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं, गृहाणास्मत् कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि, त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

(इति देव्या वामकरे सामान्यर्घ्यप्रक्षेपेण जपं निवेद्य,)

त्वं माला सर्वदेवानां, प्रीतिदा शुभदा मम ।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे, यशो वीर्यं च सर्वदा ॥

(इति मालां सम्प्रार्थ्य, निगूढं निधाय, श्रीगुरुपादुकामन्त्रं मुहुर्मुहुरुच्चारयन् गुरुपरमगुरुपरमेष्ठीगुरून् तत्तन्नामपूर्वं प्रणमेत् ।)

इति जपविधिः ।

जपार्चनादिषु प्रणायामन्यासादिकानां विधानम्

प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम् ।
अतो यत्नेन कर्तव्याः प्राणायामाः शुभार्थिभिः ॥१॥

(इति दक्षिणामूर्तिकल्पे ।)

जपार्थं सर्वमन्त्राणां विन्यासेन लिपेर्विना ।
कृते तन्निष्फलं विद्यात्तस्मादादौ लिपि न्यसेत् ॥२॥

(इति कपिलपञ्चरात्रे ।)

ऋषिच्छन्दोदेवतानां विन्यासेन विना यदा ।
जप्यते साधितोऽप्येष तत्र तुच्छफलं भवेत् ॥३॥

(इति गौतमीये ।)

ध्यानं जपार्चना होमः सिद्धमन्त्रकृता अपि ।
अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलं त्वमी ॥१॥

अतः एव हितानानुष्ठाने दोषमाह याज्ञवल्क्यः—

विधिदृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः।
फलं न किञ्चिदाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तत् ॥१॥
(इति उत्तरतन्त्रे)

अथ होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नतं स्थण्डिलं परिकल्प्य, मूलेन निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य, कुशेन ताडयित्वा, हुं इत्यवगुण्ठ्य, स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणे नमः। ७ यमाय नमः। ७ सोमाय नमः। ७ रुद्राय नमः। ७ विष्णवे नमः। ७ इन्द्राय नमः। इत्यभ्यर्चयेत्।

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात्। यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।
७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। ७ धूमव्यापिने कवचाय हुँ।
७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

अनेनैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात्—

७ पीतायै नमः। ७ श्वेतायै नमः। ७ अरुणायै नमः।
७ कृष्णायै नमः। ७ धूम्रायै नमः। ७ तीव्रायै नमः।
७ स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ७ रुचिरायै नमः ७ ज्वालिन्यै नमः।

(इति पीठशक्तीः समर्चयेत्)

(ततः पीठमध्ये)—७ त तमसे नमः। ७ रं रजसे नमः। ७ सं सत्त्वाय नमः। ७ आं आत्मने नमः। ७ अं अन्तरात्मने नमः। ७ पं परमात्मने नमः। ७ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। (इति पूजयेत्।)

(ततः त्रिकोणे)— ७ ॐ ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः।—(इति मन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वह्नेः पितरौ वागीश्वरीवागीश्वरौ—संपूज्य) तयोर्मिथुनीभावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वह्नि मुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वाग्नि स्थण्डिलाद्बहिराग्नेय्यां ऐशान्यां नैर्ऋत्यां वा दिशि निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं 'फट्' इति अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्यां निरस्य अग्नि (मूलेन) निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा, कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य ततः ७ ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मूलाधारोद्गतं संविदग्नि ललाटनेत्रद्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरबीजस्य वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्ध्या बाह्याग्नौ संयोजयेत्।

ततः ७ कवचाय हुँ इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य
७ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्। (इत्युपस्थाय)

७ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा' (इति वह्निमुत्थाप्य ततः) 'ॐ ह्रीं' इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्डिले स्थापयेत् । ७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा (इति प्रज्वाल्य, ज्वालिनी-मुद्रां प्रदर्श्य, प्राक्तोयं निधाय, वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा '७ ऐं नमः' अस्य होमाग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, ललिताग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः, । '७ ऐं नमः' अस्य ललिताग्नेः अन्नप्राशनकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः—इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत् ।

ततः सामान्यार्घ्योदकेनाऽग्निं मूलेन परिषिच्य अग्निमलङ्कृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य त्रिभिः परिधिभिः परिधानं कृत्वा —वा यथा सम्प्रदायं कुशण्डिकां विधाय—)

त्रिनयनमरुणाब्जबद्धमौलिं सुशुक्लां,
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
अभिमतवरशक्ति स्वस्तिकाभीतिहस्तं,
नमत कनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम् ॥

शारदातिलके—

वैश्वानरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः ।
शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु ॥

(अथ अष्टकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन)

७ जातवेदसे नमः । ७ सप्तजिह्वाय नमः । ७ हव्यवाहनाय नमः । ७ अश्वोदराय नमः । ७ वैश्वानराय नमः । ७ कौमारतेजसे नमः ।

७ विश्वमुखाय नमः। देवमुखाय नमः।

इत्यभिपूज्य—

षट्कोणे षडङ्गं, यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः

७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा।

७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्

७ धूमव्यापिने कवचाय हुम्।

७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्

७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

(इत्यभ्यर्च्य।)

त्रिकोणे—

७ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा' इति मन्त्रेणाग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत्।

(अथ आज्यं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणेन संशोध्य पुरतोदर्भेषु निधाय स्रुवञ्च मूलेन प्रक्षाल्य तदुत्तरतोनिवेश्य)—

अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैकां आज्याहुतिं कुर्यात्। यथा—

हिरण्यायै नमः स्वाहा—	हिरण्याया इदं न मम		(ऐशान्यां)
७ कनकायै ,,	कनकाया	,,	(प्राच्यां)
७ रक्तायै ,,	रक्ताया	,,	(आग्नेय्यां)
७ कृष्णायै ,,	कृष्णाया	,,	(नैर्ऋत्यां)
७ सुप्रभायै ,,	सुप्रभाया	,,	(पश्चिमायां)
७ अतिरक्तायै ,,	अतिरक्ताया	,,	(वायव्यायां)
७ बहुरूपाया ,,	वहुरूपाया	,,	(मध्ये)

(ततस्तिस्र आहुतीर्जुहुयात् यथा—)

७ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा—अग्नय इदम् । ७ उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष—सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा—अग्नय इदम् । ७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा—अग्नय इदम् । (अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थितायां दक्षिणोत्तरायतायां बहुरूपाख्यजिह्वायां)—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः ।

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे ।

सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥ (इति श्रीदेवीमावाह्य उपचार-मन्त्रैः गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात्) । यथा—

४ "गणपतिमूलं" महागणपतये स्वाहा (त्रिः) ।

४ 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (दशकृत्वः) ।

क-५ हृदयाय नमः हृदयदेव्यै, ह-६ शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै, स-४ शिखायै वषट् शिखादेव्यै, क-५ कवचाय हुं कवचदेव्यै, ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै, स-४ अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा ।

अः क-१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा (त्रिः) ।

तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तिथिनित्यायै ।

अः क १५ अः ललितामहानित्यायै० ।

४ अं ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्यायै० । ४ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे शर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय

अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्त्वान् भगेश्वरी ऐं ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आं भगमालिनीनित्यायै स्वाहा ।

४ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इं नित्यक्लिन्नानित्यायै स्वाहा ।

,, ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्यायै स्वाहा ।

,, उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्यायै स्वाहा ।

,, ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊं महावज्रेश्वरीनित्यायै स्वाहा ।

,, ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋं शिवदूती नित्यायै स्वाहा ।

,, ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्यायै स्वाहा ।

,, ऌं ऐं क्लीं सौः ऌं कुलसुन्दरीनित्यायै स्वाहा ।

,, ॡं ह्स्क्लर्डैं ह्स्क्लर्डीं ह्स्क्लर्डौः ॡं नित्यानित्यायै स्वाहा ।

,, एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं एं नीलपताकानित्यायै स्वाहा ।

,, ऐं भ्म्र्यूं ऐं विजयानित्यायै स्वाहा ।

,, ओं स्वौं ओं सर्वमङ्गलानित्यायै स्वाहा ।

,, औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्यायै स्वाहा ।

४ अं चक्रौं अं चित्रानित्यायै स्वाहा ।

४ अः (पञ्चदशी) अः ललितामहानित्यायै स्वाहा ।

४ ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा, उड्डीशानन्दनाथाय, प्रकाशानन्दनाथाय, विमर्शानन्दनाथाय, आनन्दानन्दनाथाय, षष्ठीशानन्दनाथाय, ज्ञानानन्दनाथाय, सत्यानन्दनाथाय, पूर्णानन्दनाथाय,

मित्रेशानन्दनाथाय, स्वभावानन्दनाथाय, प्रतिभानन्दनाथाय, सुभगानन्दनाथाय स्वाहा ।

४ परप्रकाशानन्दनाथाय, परशिवानन्दनाथाय, पराशक्त्यम्बायै, कौलेश्वरानन्दनाथाय, शुक्लदेव्यम्बायै, कुलेश्वरानन्दनाथाय, कामेश्वर्यम्बायै, भोगानन्दनाथाय, क्लिन्नानन्दनाथाय, समयानन्दनाथाय, सहजानन्दनाथाय, गगनानन्दनाथाय, विश्वानन्दनाथाय, विमलानन्दनाथाय, मदनानन्दनाथाय, भुवनानन्दनाथाय, लीलाम्बायै, स्वात्मानन्दनाथाय, प्रियानन्दनाथाय, (परमेष्ठिगुरवे) अमुकानन्दनाथाय, (परमगुरवे) अमुकानन्दनाथाय, (स्वगुरवे) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा ।

४ अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय, अं अणिमासिद्ध्यै, लं—लघिमासिद्ध्यै, मं महिमासिद्ध्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, प्रं प्राकाम्यसिद्ध्यै, भुं भुक्तिसिद्ध्यै, इं इच्छासिद्ध्यै, पं प्राप्तिसिद्ध्यै, सं सर्वकामसिद्ध्यै, आं ब्राह्मीमात्रे, ईं माहेश्वरीमात्रे, ऊं कौमारीमात्रे, ॠं वैष्णवीमात्रे, ॡं वाराहीमात्रे, ऐं माहेन्द्रीमात्रे, औं चामुण्डामात्रे अः महालक्ष्मीमात्रे, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, सः सर्वोन्मादिनी-मुद्राशक्त्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्त्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, प्रकटयोगिनीभ्यः, अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वर्यै, अणिमासिद्ध्यै, द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय, अं कामाकर्षिण्यै, आं बुद्ध्याकर्षिण्यै, इं अहङ्काराकर्षिण्यै, ईं शब्दाकर्षिण्यै, उं स्पर्शाकर्षिण्यै,

ऊं रूपाकर्षिण्यै, ॠं रसाकर्षिण्यै, ॠं गन्धाकर्षिण्यै, लृं चित्ताकर्षिण्यै, ॡं धैर्याकर्षिण्यै, एं स्मृत्याकर्षिण्यै, ऐं नामाकर्षिण्यै, ओं बीजाकर्षिण्यै, औं आत्माकर्षिण्यै, अं अमृताकर्षिण्यै, अः शरीराकर्षिण्यै, गुप्तयोगिनीभ्यः, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशिचक्रेश्वर्यै, लं लघिमासिद्ध्यै, द्रीं सर्वविद्राविणी-मुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय, कं ५ अनङ्गकुसुमायै, चं ५ अनङ्गमेखलायै, टं-५ अनङ्गमदनायै, तं-५ अनङ्गमदनातुरायै, पं-५ अनङ्गरेखायै, यं-४ अनङ्गवेगिन्यै, शं-४ अनङ्गाङ्कुशायै, ळं क्षं अनङ्ग-मालिन्यै, गुप्ततरयोगिनीभ्यः, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, महिमासिद्ध्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, "मूलं" ललितामहात्रिपुर-सुन्दर्यै स्वाहा ।

४ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय, कं सर्वसङ्क्षोभिण्यै खं सर्वविद्राविण्यै, गं सर्वाकर्षिण्यै, घं सर्वाह्लादिन्यै, ङं सर्वसंमोहिन्यै, चं सर्वस्तम्भिन्यै, छं सर्वजृम्भिण्यै, जं सर्ववशङ्कर्यै, झं सर्वरञ्जिन्यै, ञं सर्वोन्मादिन्यै, टं सर्वार्थसाधिन्यै, ठं सर्वसम्पत्तिपूरण्यै, डं सर्वमन्त्रमय्यै, ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै, संम्प्रदाययोगिनीभ्यः, हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी-चक्रेश्वर्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय, णं सर्वसिद्धिप्रदायै, तं सर्वसम्पत्प्रदायै, थं सर्वप्रियङ्कर्यै, दं सर्वमंगलकारिण्यै, धं सर्वकाम-प्रदायै, नं सर्वदुःखविमोचिन्यै, पं सर्वमृत्युप्रशमन्यै, फं सर्वविघ्ननि-वारिण्यै, बं सर्वाङ्गसुन्दर्यै, भं सर्वसौभाग्यदायिन्यै, कुलोत्तीर्णयोगिनीभ्यः-

ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै, वं वशित्वसिद्ध्यै, सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै, स्वाहा ।

४ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय. मं सर्वज्ञायै, यं सर्वशक्त्यै, रं सर्वैश्वर्यप्रदायै, लं सर्वज्ञानमय्यै, वं सर्वव्याधिविनाशिन्यै, शं सर्वाधारस्वरूपायै, षं सर्वपापहरायै, सं सर्वानन्दमय्यै, हं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै, निगर्भयोगिनीभ्यः ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी—चक्रेश्वर्यै, पं प्राकाम्यसिद्ध्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै स्वाहा । (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय, अं + + अः (१६) ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै, कं-५ क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै, चं-५ न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै, टं-५ य्लूं विमलावाग्देवतायै, तं-५ ज्म्रीं अरुणा वाग्देवतायै, पं-५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै, यं-४ झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै, शं-६ क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै, रहस्ययोगिनीभ्यः, ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै, भुं भुक्तिसिद्ध्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः: कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यः स्वाहाः ।

,, थं धं सर्वसम्मोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां स्वाहा ।

;, ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां स्वाहा ।

,, क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां स्वाहा ।

,, ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय, ऐं क-५ महाकामेश्वर्यै, क्लीं ह-६ महावज्रेश्वर्यै, सौः स-४ महाभगमालिन्यै, ऐं क-५-

क्लीं ह-६ सौः स-४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै, अतिरहस्योगिनीभ्यः, ह्स्त्रैं हस्क्लरीं ह्स्त्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै, इं इच्छासिद्ध्यै ह्सौः सर्वबीजा-मुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

(पञ्चदशी) सर्वानन्दमयचक्राय, (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा । (इतिदशवारं) परापरातिरहस्ययोगिन्यै, (मूलं) त्रिपुरसुन्दरी चक्रेश्वर्यै, पं प्राप्तिसिद्धये, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, (मूलं) ललितामहा-त्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ षोडश्युपासकानां—(तुरीयविद्या) तुरीयाम्बायै, सं सर्वकामसिद्ध्यै, ह्स्त्रैं हस्क्लरीं ह्स्त्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै,
(महाषोडशी) महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा ।

(पञ्चपञ्चिकादिहोमे तत्तन्मन्त्रेण प्रदर्शितरीत्या होमः कर्त्तव्यः ।)

(ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलं अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य (मूलं) वौषट् इति उत्थितो जुहुयात् । ततो बलिदानम् ।)

(ततो महाव्याहृतिहोमः यथा—)

७ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै महत इदम् । ७ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम् । ७ स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा । आदित्याय दिवे महत इदम् । ७ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा । चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम् ।
(इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा) ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्

स्मृतं यत्कृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। परब्रह्मण इदम्।
(इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात्।)

अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोप-तन्त्रलोप-द्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यासप्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि। ॐ भूर्भुवस्स्वः स्वाहा। प्रजापतय इदम्। श्रीविष्णवे स्वाहा। विष्णवे परमात्मन इदम्। नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा। रुद्राय पशुपतय इदम्। आप उपस्पृश्य।

सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि।
सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा॥

अग्नये सप्तवत इदम्। (आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय, प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषिञ्चति।) अदितेऽन्वमँस्थाः। अनुमतेऽन्वमँस्थाः। सरस्वतेऽन्वमँस्थाः। देव सवितः प्रासावीः॥

ततः प्रणीतापात्रं स्वस्य पुरत आदाय,

पूर्णमसि पूर्णं मे भूयाः। सदसि सन्मे भूयाः। सर्वमसि सर्वं मे भूयाः।

(इति अन्यजलं निनीय तज्जलं प्रागादिप्रदक्षिणं प्राच्यां दिशि देवा ऋत्विजो मार्जयन्ताम्। दक्षिणस्यां दिशि मासाः पितरो मार्जयन्ताम्। प्रतीच्यां दिशि गृहाः पशवो मार्जयन्ताम्। उदीच्यां दिश्याप ओषधयो वनस्पतयो मार्जयन्ताम्। ऊर्ध्वायां दिशि यज्ञः संवत्सरो यज्ञपतिर्मार्जयताम् (इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तात् निस्राव्य, तेन) 'ब्रह्मणेष्वमृतं हितं येन देवाः पवित्रेणात्मानं पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्यः पुनन्तु मा' (इत्यात्मानं प्रोक्ष्य, प्रागादिपरिस्तरणमुत्तरे विसृजेत्।)

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।
सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ (इत्युपस्थाय)

चिदग्निं, उपावरोह जातवेदः पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह नः प्रजानन् ।
आयुः प्रजाँ रयिमस्मासु धेहि अजस्रोः दीदिहि नो दुरोणे ॥

'ललिताग्निमात्मन्युद्वासयामि नमः' । (इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलिं दद्यात्) ।

तद्भूतितिलकं— त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् । (इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत् ।)

इति होमप्रकरणं समाप्तम् ॥

(जपप्रकरणे सूत्रकृता पुरश्चरणादिकं न विधित्सितम् काम्यकर्मण्येव तस्यावश्यकत्वात् । युक्तं चैतत्)

शुभं वाऽप्यशुभं वाऽपि काम्यं कर्म करोति यः ।
तस्यारित्वं व्रजेन्मन्त्रो न तस्मात् तत्परो भवेत् ॥
काम्यकर्मप्रसक्तानां तावन्मात्रं फलं भवेत् ।
निष्कामं भजतां देवमखिलाभीष्टसिद्धयः ॥

(देवेत्युपलक्षणं देव्या अपि । काम्यकर्मविधिश्च दुःसाध्यश्चेत् कस्यचित् काम्यफललिप्सा, तेन तदा "श्रीविद्यारत्नाकरे" श्यामाक्रमोक्तं पुरश्चरणादिकं काम्यहोम-द्रव्यं चानुसन्धेयम् । अन्यच्च नित्यार्चनरतो नैमित्तिकार्चनं कुर्यात् । तेन सकलेप्सितसिद्धिर्भवति ।)

पर्व-पूजनादि-निर्देशः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासंक्रान्तिसंज्ञेषु पर्वसु पञ्चसु सविशेषैः साधनैराराधयेत् । तत्प्रकारस्तु "श्रीविद्यारत्नाकरे" द्रष्टव्यः ।

नित्यनैमित्तिकक्रमौ च शिष्यसुतादिभिरपि कारयितुं शक्येते ।

नित्यं नैमित्तिकं काम्यं सापेक्षं पूर्वपूर्वतः ।
अन्यथा भजनं चेच्छन् करोत्यापत्परम्पराम् ॥१॥
नित्यार्चनरतै सिद्धैः कार्यं नैमित्तिकार्चनम् ।
तद्विधानमतो वक्ष्ये चैत्राद्यं फाल्गुनावधि ॥२॥ इति ॥

विशेषदिवसेषु क्रियमाणा महापूजा विशेषपूजेत्युच्यते चैत्रादिफाल्गुनावधि क्रियमाणा या पूजा सा तु नैमित्तिकीपूजा । केचित्तु 'विशेषपूजाया नैमित्तिकेऽन्तर्भाव' इति वदन्ति । इमां नैमित्तिकपूजां रात्रावेव कुर्यात् । तदुक्तं कुलार्णवे—

नित्यार्चनं दिवा कुर्याद्रात्रौ नैमित्तिकार्चनम् ।
उभयोः काम्यकर्माणि चेति शास्त्रस्य निर्णयः ॥१॥ इति ॥

विशेषदिवसास्तु तन्त्रराजादिग्रन्थेषूक्तानि दिनानि तानि तु गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरूणां जन्मवारतिथिनक्षत्राणि स्वजन्मवारतिथिनक्षत्राणि विद्याप्राप्तिदिनं गुरोः क्षयदिनम्, अष्टमीचतुर्दशीपूर्णिमामावस्यारविसंक्रमणयुगादिदिनानि पुष्यनक्षत्र—रविवार-पीठोपपीठगमनदेशिकागमनवीरमहायोगिनीदर्शनतीर्थगमन-व्रतदीक्षाद्युत्सवदिनानि, विशेषक्षेत्रगमनदेवतादर्शनाक्षरत्रयपातदिनानि च (अक्षरत्रयसम्पातदिनमित्येकस्याक्षरस्य दिनाक्षरत्वेनोदयाक्षरत्वेन युगाक्षरत्वेन च दर्शनं यस्मिन् दिने तद्दिनं विशेषपर्व) । एतेषु दिनेषु नित्यपूजानन्तरं यथाबलं यथाविभवविस्तरं यथाश्रद्धं यथा-

कालं यथादेशं वित्तशाठ्यरहितो यथोक्तद्रव्यैर्यथागुरूपदेशं शक्तिसामयिकैः सार्द्धं विशेषपूजां कृत्वा यथाशास्त्रं गुरुं सामयिकांश्च तोषयेत्। अत्र गुरुपर्वदिनेषु गुरुपङ्क्तिपूजोक्तमानवौघगुरुसंख्याकान् साधकान् तत्तन्नाम्ना सर्वोपचारैः समभ्यर्च्य यथाशक्ति दक्षिणादानादिभिः परितोषयेत्। तेषु पर्वसु गुरुमण्डलपूजापि विधेया।

सिद्ध्यर्थं नियमाः

श्रीललितोपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। वीरस्त्रियं न गच्छेत्। न तां हन्यात्। न तद्द्रव्यमपहरेत्। नात्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात्। कुलभ्रष्टैः सह नासीत। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत्। कुलपुस्तकानि गोपायेत्। एते क्रत्वर्थंनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः। अन्यांश्च दीक्षाक्रमोक्तान् सामयिकानाचाराननुतिष्ठेत्। अनिशमात्मानं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता। शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नान्तरम्। स एव जीवन्मुक्तः सुखी विहरेदिति।

श्यामादीनामुपासनाकालः

ललिता प्राह्णे,[1] अपराह्णे श्यामा, रात्रौ दण्डिनी, ब्राह्मे मुहूर्ते परा, श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्याः प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा तदुपासनद्वारा श्रीविद्या प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ

१. सूर्यपरावृत्तिप्राक्कालः प्राह्णः।

प्रधानसचिवमुपसेव्य तद्द्वारा राजदर्शनं कुर्वन्ति तथैव श्यामायाः प्रथममुपासनं न्याय्यम्। 'प्रधानद्वारा राजप्रसादनं हि न्याय्यम्' इति परशुरामसूत्रात्।

साङ्गां सङ्गीतमातृकां श्यामामिष्ट्वा सिंहासनरूढाया ललितायाः महाराज्ञ्या दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञां चन्द्रां कोलमुखीं वरिवस्येत्। इयञ्च महारात्रे पूज्या। ततश्च श्रीविद्याया महाराज्ञ्या हृदयात्मिकां परां पूजयेत्। तत्प्रीतौ श्रीविद्या-प्रीतिः सुतरां सम्पद्यते 'प्रभुहृदयज्ञातुः पदे पदे सुखानि' भवन्तीति परशुरामसूत्रात्।

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः

दीक्षाप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे कृताह्निकः साधको गणपतिमाराध्य ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा-आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्मवर्मादिरहं महात्रिपुरसुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराज-प्रतिष्ठापनं करिष्य इति, दुग्धदधिघृतगोमयगोमूत्रात्मकं पञ्चगव्यमानीय सम्मिश्र्य 'ह्रौं' इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्र्य, तत्र प्रणवेन यन्त्रं निक्षिप्य तत उद्धृत्य पात्रान्तरे निधाय, मिश्रितेन गोदुग्धदधि-घृतमधुशर्करात्मकेन पञ्चामृतेन संस्नाप्य धूपयेत्। अथ प्रत्येकं दुग्धादिभिः क्रमेण अन्तरान्तरा धूपनपूर्वकं स्नपयित्वा पुनर्मिश्रि-तैश्च तैः स्नपयेत्। ततोऽष्टासु दिक्षु शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहितै-र्नूतनवसनवेष्टितैः गन्धपुष्पार्चितैः कुङ्कुमरोचनाचन्दनकस्तूरीसुरभिल-शीतलसलिलपूर्णैः कुशाग्रेण स्पृष्ट्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रितैः सौवर्णादिमार्त्तिकान्तान्यतमैरष्टभिः कलशैरभिषिञ्चेत्। इह सर्वमपि

पञ्चगव्यादिकं स्नानं मूलमन्त्रकरणकमेव। अथ यन्त्रं धौतेन वाससा परिमृज्य पीठे निधाय कुशाग्रैः स्पृशन्—'ऐं ह्रीं श्रीं ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि। तन्नो यन्त्रः प्रचोदयात्' इति यन्त्रगायत्री-मष्टोत्तरशतवारानावर्त्यात्मनो भूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासान्तं कृत्वा यन्त्रं करेण संस्पृश्य प्राणप्रतिष्ठां कुर्य्यात्। यथा—

अस्य श्रीयन्त्रराजस्य प्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, चैतन्यं देवता। आं बीजम्, ह्रीं शक्तिः क्रों कीलकम् मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठायै जपे विनियोगः।

ऐं ह्रीं श्रीं अं कं खं गं घं ङं, पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

३ इं चं छं जं झं ञं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्यां नमः।

,, उं टं ठं डं ढं णं श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊं मध्यमाभ्यां ,,।

,, एं तं थं दं धं नं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्यां ,,।

,, ओं पं फं बं भं मं वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

३ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तान्तःकरणात्मने अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। (एवं हृदयादिन्यासः।) ध्यानम्—

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः,
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या,
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः, ३ ॐ आं···सः श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः, ३ ओं ···सः श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ ॐ आं···सः श्रीचक्रस्य वाङ्मनश्चक्षुः-श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा' इति ।

(यन्त्रान्तरप्राणप्रतिष्ठायां तत्तन्नाम्न ऊहः कार्यः । अथ तत्र श्रीक्रमोक्तेन विधिना देवीमावाह्याभ्यर्च्य यन्त्रं कुशाग्रैः स्पृशन् मूल-मष्टोत्तरसहस्रं शतं वा वारानावर्त्य होमप्रकरणोक्तेन क्रमेणाष्टोत्तरशत-माज्याहूतीमूलेन हुत्वा सम्पाताज्यं मध्ये मध्ये यन्त्रे-अवनीय, सव्यञ्जने-नान्नेन सर्वभूतबलिं प्रदाय होमशेषं समाप्य गुरवे सुवर्णशृङ्गालङ्कृतां गां वसनाभरणानि च प्रदाय देवीमुद्वास्य कुमारीं योगिनीं ब्राह्मणांश्च भोजयेत् । इमाञ्च यन्त्रप्रतिष्ठां गुर्वादिना वा कारयेदिति वामकेश्वर-तन्त्रीयो यन्त्रप्रतिष्ठापनविधिः) ।

इति श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः समाप्तः ॥

तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्

समस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च ।
चौरसिंहद्वीपिगजगवयादि भयानके ॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा ।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे ॥
प्रजप्य नित्याकवचं सकृत्सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो निःसपत्नो जितेन्द्रियः ॥

श्रृणु तत्कवचं देवि ! वक्ष्ये तव तदात्मकम् ।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी सदा ॥

सर्वतः सर्वदाऽऽत्मानं ललिता पातु सर्वदा ।
कामेशी पुरतः पातु भगमाला त्वनन्तरम् ॥

दिशं पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा ।
नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिशं पातु सदा मम ॥

तथैव पश्चिमं भागं रक्षेत्सा वह्निवासिनी ।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥

वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता ततः ।
पालयेत्तु दिशं वात्यां रक्षेन्मां कुलसुन्दरी ॥

नित्या मामूर्ध्वतः पातु साऽधो मे पातु सर्वदा ।
नित्या नीलपताकाख्या विजया सर्वतश्च माम् ॥

करोतु मे मङ्गलानि सर्वदा सर्वमङ्गला ।
देहेन्द्रियमनःप्राणान् ज्वालामालिनिविग्रहा ॥

पालयेदनिशं चित्रा चित्तं मे पातु सर्वदा ।
कामात् क्रोधात् तथा लोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥

पापान्मत्सरतः शोकात् संशयात्सर्वतः सदा ।
स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥

असत्यात् क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा ।
रक्षन्तु मां सर्वदा ताः कुर्वन्त्विच्छां शुभेषु च ॥

नित्याः षोडश मां पान्तु गजारूढाः स्वशक्तिभिः ।
तथा हयसमारूढाः पान्तु मां सर्वतः सदा ॥

सिंहारूढास्तथा पान्तु मां तरक्षुगता अपि।
रथारूढाश्च मां पान्तु सर्वतः सर्वदा रणे॥

तार्क्ष्यारूढाश्च मां पान्तु तथा व्योमगतास्तु ताः।
भूगताः सर्वदा पान्तु मां सर्वत्र च सर्वदा॥

भूत-प्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् गदान्।
द्रावयन्तु स्वशक्तीनां भीषणैरायुधैर्मम॥

गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारूढाखिलायुधाः।
असंख्याः शक्तयो देव्यः पान्तु मां सर्वतः सदा॥

सायं प्रातर्जपन्नित्याकवचं सर्वरत्नकम्।
कदाचिन्नाशुभं पश्येन्न शृणोति च तत्समः॥

इति तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचं समाप्तम्।

अथ वाञ्छाकल्पलता

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीक्षेत्रपालाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। (मूलमुच्चार्य)। तालत्रयं कृत्वा। मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा)।

ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलताविद्यागणेशस्य मनोर्नानासूक्तसमूहस्य, आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवनना ऋषयः देवी-गायत्रीनिचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमन्महा-गणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रदेवताः, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्ति, क्लीं कीलकम्, मम श्रीमहागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रप्रसाद-

वाञ्छितार्थफलप्रसिद्धये वाञ्छाकल्पलतोपस्थाने विनियोगः। (इति सङ्कल्प्य)।

आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवसिष्ठविश्वामित्रसंवननऋषिभ्यो नमः (शिरसि), देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपंक्त्यनुष्टुब्जगतीछन्दोभ्यो नमः (मुखे), श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसम्वादाग्न्यमृतरुद्रदेवताभ्यो नमः (हृदये), श्रीं बीजाय नमः (नाभौ), ह्रीं शक्तये नमः (गुह्ये), क्लीं कीलकाय नमः (आधारे) इति न्यस्य मूलेन व्यापकं चरेत्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं क ए ई ल ह्रीं गणपतये हसकहलह्रीं वरवरद सकलह्रीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। 'मूलं' (इति त्रिचत्वारिंशदर्णो मनुः)।

ऐं क्लीं सौः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ११ ह्रीं सर्वज्ञायै ह्रां गां ब्रह्मात्मने (अङ्गुष्ठाभ्यां नमः) ऐं ११ ह्रीं नित्यतृप्तायै ह्रीं गीं विष्ण्वात्मने (तर्जनीभ्यां स्वाहा) ऐं ११ ह्रीं अनादिबोधितायै ह्रीं गीं रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं ११ ह्रीं स्वतन्त्रायै ह्रैं गैं ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम्। ऐं ११ ह्रीं नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ऐं ११ ह्रीं अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। (एवं हृदयादिन्यासं विधाय पुनर्मूलेन त्रिर्व्याप्य ध्यायेत्।) यथा—

हेमाद्रौ हेमपीठस्थितममरगणैरीड्यमानां विराजत्—
पुष्पेष्विक्ष्वासिपाशाङ्कुशकरकमलां रक्तवेषातिरक्ताम्।
दिक्षूद्यद्भिश्चतुर्भिर्मणिमयकलशैः पञ्चशक्त्यैकविद्यां,
स्वस्थां क्लृप्ताभिषेकां भजत भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे॥१॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल—
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।

ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाऽऽश्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥२॥

धवलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णं, करधृतवरपाशं साभयं साङ्कुशञ्च ।
अमृतवपुशमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रं, प्रणमत सुरवन्द्यं मङ्क्षु संवादयन्तम् ॥३॥

स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा-गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरकलितमुद्रा-वेदपाशाक्षमालं, स्फटिकरजतमुक्तागौरीमीशं नमामि ॥४॥

(इति ध्यात्वा, सर्वसंक्षोभिण्यादि दशमुद्राः प्रदर्श्य)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्याम्) ।

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः (इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम् ।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम् ।)

श्रीमन्महागणपति महात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम् ।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरी संवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः (इति अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम् ।)

श्रीमन्महागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसंवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्यः सं सर्वात्मकं ताम्बूलादि-सर्वोपचारं समर्पयामि नमः (इति संहताभिः सर्वाङ्गुलीभिर्दद्यात्) । एवं मानसोपचारैः संपूज्य, गुरुदेवतात्मनामैक्यं भावयित्वा । रात्री अन्त्ययामे सूर्योदयात्पूर्वं शनैः शनैः जपेत् ।)

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं "इं",

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं "परोरजसे सावदोम्",

(३) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं "हसकल हसकहल सकलह्रीं", (प्रत्येकं दशवारं जपित्वा)

(पुनः) ॐ ऐं श्रीं ह्रीं लं क्लीं ग्लौं गं गुगुरीं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐं क्लीं सौः २९। यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगा। अभिसूर्यं सर्वं तदिन्द्र ते वशे २३। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वर वरद आं ह्रीं क्रों सर्वंजनं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं ३६ ॥१॥

ॐ ऐं···सौः २९। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् २३। गं··· ऐं ३६ ॥२॥

ॐ ऐं···सौः २९। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ३२। गं···ऐं ३६ ॥३॥

ॐ ऐं···सौः २९। जातवेदसे सुनवाम सोममराति यतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ४३। गं··· ऐं। ३६ ॥४॥

ॐ ऐं··· सौः २९। समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्। समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ४४। गं··· ऐं ३६ ॥५॥

ॐ ऐं··· सौः २९। सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वानर्यं आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ३०। गं··· ऐं ३६ ॥६॥

ॐ ऐं···· सौ २९। समानो····जुहोमि ४४॥ गं····ऐं ३६ ॥७॥

ॐ ऐं···· सौः ,,। जात····त्यग्निः ४३॥ गं···ऐं ३६ ॥८॥

ॐ ऐं···· सौः ,,। त्र्यम्ब···मृतात् ३३॥ गं··· ऐं ३६ ॥९॥

ॐ ऐं....सौः २९ । तत्स....यात् २३ ॥ गं....ऐं ॥ ३६ ॥१०॥
„ ऐं....सौः „ । यदद्य....वशे २३ ॥ गं....ऐं ॥ ३६ ॥११॥
„ ऐं....सौः „ । गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तमम् । ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आनः शृण्वन्नूतिभिः सीदसादनम् ४८ गं....ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भूः भद्रं नो अपि वातय मनः । ॐ ह्लीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्लीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥१३॥

दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

इति प्रथमः पर्यायः

ॐ ऐं...सौः २९ । यदद्य...वशे २३ ॥ गं...ऐं ३६ ॥१॥
„ ऐं...सौः „ । तत्स...यात् २३ ॥ गं...ऐं ३६ ॥२॥
„ ऐं...सौः „ । त्र्यम्ब...मृतात् ३२ ॥ गं...ऐं ३६ ॥३॥
„ ऐं...सौः „ । जात...त्यग्निः ४३ ॥ गं...ऐं ३६ ॥४॥
„ ऐं...सौः „ । समा...होमि ४४ ॥ गं...ऐं ३६ ॥५॥
„ ऐं...सौः „ । संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम् । देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते ३६ ॥ गं...ऐं ३६ ॥६॥
ॐ ऐं...सौः २९ । समा...होमि ४४ ॥ गं...ऐं „ ॥७॥
„ ऐं... सौः २९ । जात...त्यग्निः २३ ॥ गं...ऐं „ ॥८॥
„ ऐं....सौः २९ । त्र्यम्ब...मृतात् ३२ ॥ गं....ऐं ३६ ॥९॥

ॐ ऐं····सौः २९ । तत्स····यात् २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१०॥

„ ऐं····सौः २९ । यदद्य···वशे २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥११॥

„ ऐं····सौः २९ । अग्ने मन्युं प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपाः परिपाहि नस्त्वम् । प्रत्यञ्चो यन्तु निगुतः पुनस्ते मैषां चित्तं प्रबुधां विनेशत् ४३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भुवः मरुतामोजसे स्वाहा ॥१३॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥

दमयन्तीनलाभ्यां च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् ॥
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

इति द्वितीयः पर्यायः

ॐ ऐं····सौः २९ । यदद्य····वशे २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१॥

„ ऐं····सौः „ । तत्स····यात् २३ ॥ गं···ऐं ३६ ॥२॥

„ ऐं···सौः „ । त्र्यम्ब···मृतात् ३६ ॥ गं····ऐं ३६ ॥३॥

„ ऐं····सौः „ । जात···त्यग्निः ४३ ॥ गं···ऐं ३६ ॥४॥

„ ऐं···सौः „ । समा···होमि ४४ ॥ गं···ऐं ३६ ॥५॥

„ ऐं···सौः „ । समा····होमि ४४ ॥ गं····ऐं ३६ ॥६॥

„ ऐं····सौः „ । समा····होमि ४४ ॥ गं···ऐं ३६ ॥७॥

„ ऐं···सौः „ । जात····त्यग्निः ४३ ॥ गं···ऐं ३६ ॥८॥

„ ऐं····सौः „ । त्र्यम्ब····मृतात् ३२ ॥ गं····ऐं ३६ ॥९॥

„ ऐं····सौः „ । तत्स····यात् २३ ॥ गं····ऐं ३६ ॥१०॥

ॐ ऐं····सौः २९। यदद्य···वशे २३॥ गं···ऐं ३६॥११॥

,, ऐं···सौः ,,। यो मामग्ने भागिनं सन्तं यथाभागं चिकीर्षति। अभागमग्ने तं कुरु मामग्ने भागिनं कुरु स्वाहा ३५॥ गं···ऐं ३६॥१२॥

ॐ स्वः इन्द्रो विश्वस्य राजति॥१३॥ ॐ ह्लीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्लीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने! प्रसीद मे॥

इति तृतीयः पर्यायः

ॐ ऐं···सौः २९। यदद्य··वशे २३॥ गं···ऐं ३६॥१॥
,, ऐं···सौः ,,। तत्स···यात् २३॥ गं···ऐं ३६॥२॥
,, ऐं···सौः ,,। त्र्यम्ब···मृतात् ३२॥ गं···ऐं ३६॥३॥
,, ऐं···सौः ,,। जात···त्यग्निः ४३॥ गं····ऐं ३६॥४॥
,, ऐं···सौः ,,। समा···होमि ४४॥ गं···ऐं ३६॥५॥
,, ऐं···सौः ,,। समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः। समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३१॥ गं···ऐं ३६॥६॥
ॐ ऐं····सौः ,,। समा···होमि ४४॥ गं···ऐं ३६॥७॥
,, ऐं···सौः ,,। जात···त्यग्निः ४३॥ गं···ऐं ३६॥८॥
,, ऐं···सौः ,,। त्र्यम्ब···मृतात् ३२॥ गं···ऐं ३६॥९॥
,, ऐं···सौः ,,। तत्स····यात् २३॥ गं···ऐं ३६॥१०॥
,, ऐं···सौः ,,। यदद्य···वशे २३॥ गं···ऐं ३६॥११॥

,, ऐं'''सौः ,, । अजैष्माद्या, सनामचा भूमानागसो वयम् । जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ४० ॥ गं'''ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भूर्भूवः स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१३॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय ओं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः ॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने प्रसीद मे ॥

इति चतुर्थः पर्यायः

इति जपित्वा,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु देवेशि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि ॥

इति जपं निवेदयेत् ।

एवं प्रत्यहं निशान्ते चतुर्वारं पठेत् । सर्वैश्वर्यं भवति । सर्ववेदान्तफलमश्नुते । इति शम् ।

॥ इति वाञ्छाकल्पलताप्रयोगः समाप्तः ॥

अथ श्रीवाञ्छाकल्पलता-विधानम्

प्रजपेदिष्टसिद्ध्यर्थं विद्याग्रहणसंयुतः ।
तद्भवेद् वेदिकामन्त्रो भेदेनेत्यर्थविद्यया ॥१॥
अष्टवारं जपेन्नित्यं सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ।
जपेत् षोडशसाहस्रं तर्पणाहुतियोगतः ॥२॥
श्रीविद्यायास्तु साधर्म्यं साधयेत्साधितो मनुः ।
पुरश्चर्याविधानेन साधकः सर्वदा जपेत् ॥३॥
तत्सर्वं लभते नित्यं वाञ्छाकल्पलतामनोः ।
इत्येतत्कथितं गुह्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥४॥
जपेत्षोडशसाहस्रं षट्साहस्रमथापि वा ।
पायसेन हुनेद्देवि नारिकेलफलैस्तिलैः ॥५॥
असाध्यं साधयेल्लोके अवश्यं वशमाप्नुयात् ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥६॥

(इति कुमारसंहितायाम्)

(तन्त्रान्तरे)

वाञ्छाकल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम् ।
स्मरणादेव सिद्धिः स्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ॥१॥
एकावृत्त्या वशे लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत् ।
दशावृत्त्या तथा विष्णुरुद्रशक्तिर्भवेदिह ॥२॥
सार्वभौमः शतावृत्त्या भवत्येव न संशयः ।

(प्रयोग पारिजाते)

आवर्तनत्रयाल्लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत् ।
दशावृत्त्या शिवादीनां देवानां शक्तिभाग्भवेत् ॥१॥
लक्षावृत्त्या सार्वभौमो दरिद्रोऽपि न संशयः ।
नार्थवादोऽथर्वणस्य वसिष्ठवचनं यथा ॥२॥
एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ यामत्रयावधि ।
रात्रेश्चतुर्थप्रहरात् तथा सूर्योदयावधि ॥३॥

दैवात् प्रमादाद्वा एकस्मिन् दिने जपलोपे सति अनशनेन वाञ्छाकल्पलतामन्त्रस्य अष्टोत्तरशतावृत्तिपाठाः कर्तव्याः ।

श्रीललितासहस्रनामावलिः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य वशिन्यादिभ्यो वाग्देवताभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे) श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये) । 'क' ५ बीजाय नमः (गुह्ये) । स० ४ शक्तये नमः (पादयोः) । ह० ६ कीलकाय नमः (नाभौ) चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे (श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थं) जपे (पूजने) विनियोगाय नमः (करसम्पुटे) । (कूटत्रयं द्विरावृत्य बालाया वा षडङ्गद्वयम् ।)

ध्यानश्लोकः

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥१॥

(मानसैः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य)

श्रीललितसहस्रनामावलिः

[ऐं ह्रीं श्रीं]

३ श्रीमात्रे नमः
श्रीमहाराज्ञ्यै
श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतायै
देवकार्यसमुद्यतायै
उद्यद्भानुसहस्राभायै

३ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
रागस्वरूपपाशाढ्यायै
क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै
मनोरूपेक्षुकोदण्डायै १०
पञ्चतन्मात्रसायकायै नमः

३ निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डलाय नमः
चम्पकाशोकपुन्नागसौगंधिक-लसत्कचायै
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डितायै
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभितायै
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषकायै
वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिकायै
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचनायै
नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजितायै
ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरायै २०
कदम्बमञ्जरीक्लृप्त-कर्णपूरमनोहरायै
ताटङ्कयुगलीभूत-तपनोडुपमण्डलायै

३ पद्मरागशिलादर्श-परिभाविकपोलभुवे नमः
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिरदनच्छदायै
शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वलायै
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरायै
निजसंल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छप्यै
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसायै
अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजितायै
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरायै ३०
कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्वितायै
कामेश्वरप्रेमरत्न-मणिप्रतिपणस्तन्यै
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वय्यै
लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमायै
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रयायै
अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतट्यै
रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषितायै
कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्वितायै
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजितायै ४०
इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिकायै
गूढगुल्फायै
कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्वितायै
नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणायै
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहायै

३ शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजायै नमः

३ मरालीमन्दगमनायै नमः
महालावण्यशेवधये
सर्वारुणायै
अनवद्याङ्ग्यै ५०
सर्वाभरणभूषितायै
शिवकामेश्वराङ्कस्थायै
शिवायै
स्वाधीनवल्लभायै

३ सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै
श्रीमन्नगरनायिकायै
चिन्तामणिगृहान्तस्थायै
पञ्चब्रह्मासनस्थितायै
महापद्माटवीसंस्थायै
कदम्बवनवासिन्यै ६०
सुधासागरमध्यस्थायै
कामाक्ष्यै
कामदायिन्यै

३ देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवायै नमः
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्वितायै
सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेवितायै
अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृतायै
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृतायै
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवितायै
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृतायै ७०
ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगायै
भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षितायै
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुकायै
भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दितायै
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषङ्गवधतोषितायै नमः

३ विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दितायै नमः
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरायै
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षितायै
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिण्यै
कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृत्यै ८०
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिकायै
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभाण्डासुरशून्यकायै
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवायै
हरनेत्राग्निसंदग्धकामसञ्जीवनौषध्यै
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजायै
कण्ठाधः कटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिण्यै
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिण्यै

मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
मूलकूटत्रयकलेवरायै
कुलामृतैकरसिकायै ९०
कुलसङ्केतपालिन्यै
कुलाङ्गनायै
कुलान्तस्थायै
कौलिन्यै
कुलयोगिन्यै
अकुलायै
समयान्तस्थायै
समयाचारतत्परायै

मूलाधारैकनिलयायै नमः
ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै १००
मणिपूरान्तरुदितायै
विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै
आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै
रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै
सहस्राराम्बुजारूढायै
सुधासाराभिवर्षिण्यै
तटिल्लतासमरुच्यै
षट्चक्रोपरिसंस्थितायै
महासक्त्यै

कुण्डलिन्यै नमः ११०
विसतन्तुतनीयस्यै
भवान्यै
भावनागम्यायै
भवारण्यकुठारिकायै
भद्रप्रियायै
भद्रमूर्तये
भक्तसौभाग्यदायिन्यै
भक्तिप्रियायै
भक्तिगम्यायै
भक्तिवश्यायै १२०
भयापहायै
शाम्भव्यै
शारदाराध्यायै
शर्वाण्यै
शर्मदायिन्यै
शाङ्कर्यै
श्रीकर्यै
साध्व्यै
शरच्चन्द्रनिभाननायै
शातोदर्यै १३०
शान्तिमत्यै
निराधारायै नमः
निरञ्जनायै
निर्लेपायै
निर्मलायै
नित्यायै
निराकारायै
निराकुलायै
निर्गुणायै
निष्कलायै १४०
शान्तायै
निष्कामायै
निरुपप्लवायै
नित्यमुक्तायै
निर्विकारायै
निष्प्रपञ्चायै
निराश्रयायै
नित्यशुद्धायै
नित्यबुद्धायै
निरवद्यायै १५०
निरन्तरायै
निष्कारणायै
निष्कलङ्कायै

३ निरुपाधये नमः
निरीश्वरायै
नीरागायै
रागमथन्यै
निर्मदायै
मदनाशिन्यै
निश्चिन्तायै १६०
निरहङ्कारायै
निर्मोहायै
मोहनाशिन्यै
निर्ममायै
ममताहन्त्र्यै
निष्पापायै
पापनाशिन्यै
निष्क्रोधायै
क्रोधशमन्यै
निर्लोभायै १७०
लोभनाशिन्यै
निःसंशयायै
संशयघ्न्यै
निर्भवायै
भवनाशिन्यै
निर्विकल्पायै

३ निराबाधायै नमः
निर्भेदायै
भेदनाशिन्यै
निर्नाशायै १८०
मृत्युमथन्यै
निष्क्रियायै
निष्परिग्रहायै
निस्तुलायै
नीलचिकुरायै
निरपायायै
निरत्ययायै
दुर्लभायै
दुर्गमायै
दुर्गायै १९०
दुःखहन्त्र्यै
सुखप्रदायै
दुष्टदूरायै
दुराचारशमन्यै
दोषवर्जितायै
सर्वज्ञायै
सान्द्रकरुणायै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वशक्तिमय्यै

३ सर्वमङ्गलाय नमः २००
सद्गतिप्रदायै
सर्वेश्वर्यै
सर्वमय्यै
सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै
सर्वयन्त्रात्मिकायै
सर्वतन्त्ररूपायै
मनोन्मन्यै
माहेश्वर्यै
महादेव्यै
महालक्ष्म्यै २१०
मृडप्रियायै
महारूपायै
महापूज्यायै
महापातकनाशिन्यै
महामायायै
महासत्त्वायै
महाशक्त्यै
महारत्यै
महाभोगायै
महैश्वर्यायै २२०
महावीर्यायै

३ महाबलायै नमः
महाबुद्ध्यै
महासिद्ध्यै
महायोगीश्वरेश्वर्यै
महातन्त्रायै
महामन्त्रायै
महायन्त्रायै
महासनायै
महायागक्रमाराध्यायै २३०
महाभैरवपूजितायै
महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिण्यै
महाकामेशमहिष्यै
महात्रिपुरसुन्दर्यै
चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै
चतुःषष्टिकलामय्यै
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनीगणसेवितायै
मनुविद्यायै
चन्द्रविद्यायै
चन्द्रमण्डलमध्यगायै २४०
चारुरूपायै
चारुहासायै
चारुचन्द्रकलाधरायै

३ चराचरजगन्नाथायै नमः
चक्रराजनिकेतनायै
पार्वत्यै
पद्मनयनायै
पद्मरागसमप्रभायै
पञ्चप्रेतासनासीनायै
पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै २५०
चिन्मय्यै
परमानन्दायै
विज्ञानघनरूपिण्यै
ध्यानध्यातृध्येयरूपायै
धर्माधर्मविवर्जितायै
विश्वरूपायै
जागरिण्यै
स्वपन्त्यै
तैजसात्मिकायै
सुप्तायै २६०
प्राज्ञात्मिकायै
तुर्यायै
सर्वावस्थाविवर्जितायै
सृष्टिकर्त्र्यै
ब्रह्मरूपायै

३ गोप्त्र्यै नमः
गोविन्दरूपिण्यै
संहारिण्यै
रुद्ररूपायै
तिरोधानकर्य्यै २७०
ईश्वर्यै
सदाशिवायै
अनुग्रहदायै
पञ्चकृत्यपरायणायै
भानुमण्डलमध्यस्थायै
भैरव्यै
भगमालिन्यै
पद्मासनायै
भगवत्यै
पद्मनाभसहोदर्यै २८०
उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्नभुवनावल्यै
सहस्रशीर्षवदनायै
सहस्राक्ष्यै
सहस्रपदे
आब्रह्मकीटजनन्यै
वर्णाश्रमविधायिन्यै
निजाज्ञारूपनिगमायै

३ पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः
श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्ज-
धूलिकायै
सकलागमसन्दोहशुक्ति-
सम्पुटमौक्तिकायै २९०
पुरुषार्थप्रदायै
पूर्णायै
भोगिन्यै
भुवनेश्वर्यै
अम्बिकायै
अनादिनिधनायै
हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै
नारायण्यै
नादरूपायै
नामरूपविवर्जितायै ३००
ह्रींकार्यै
ह्रीमत्यै
हृद्यायै
हेयोपादेयवर्जितायै
राजराजार्चितायै
राज्ञ्यै
रम्यायै

३ राजीवलोचनायै नमः
रञ्जन्यै
रमण्यै ३१०
रस्यायै
रणत्किङ्किणिमेखलायै
रमायै
राकेन्दुवदनायै
रतिरूपायै
रतिप्रियायै
रक्षाकर्यै
राक्षसघ्न्यै
रामायै
रमणलम्पटायै ३२०
काम्यायै
कामकलारूपायै
कदम्बकुसुमप्रियायै
कल्याण्यै
जगतीकन्दायै
करुणारससागरायै
कलावत्यै
कलालापायै
कान्तायै

३ कादम्बरीप्रियायै नमः ३३०
वरदायै
वामनयनायै
वारुणीमदविह्वलायै
विश्वाधिकायै
वेदवेद्यायै
विन्ध्याचलनिवासिन्यै
विधात्र्यै
वेदजनन्यै
विष्णुमायायै
विलासिन्यै ३४०
क्षेत्रस्वरूपायै
क्षेत्रेश्यै
क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै
क्षेत्रपालसमर्चितायै
विजयायै
विमलायै
वन्द्यायै
वन्दारुजनवत्सलायै
वाग्वादिन्यै ३५०
वामकेश्यै नमः

३ वह्निमण्डलवासिन्यै नमः
भक्तिमत्कल्पलतिकायै
पशुपाशविमोचिन्यै
संहृताशेषपाखण्डायै
सदाचारप्रवर्तिकायै
तापत्रयाग्निसन्तप्तसमह्लादन-
चन्द्रिकायै
तरुण्यै
तापसाराध्यायै
तनुमध्यायै ३६०
तमोपहायै
चित्यै
तत्पदलक्ष्यार्थायै
चिदेकरसरूपिण्यै
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्या-
नन्दसन्तत्यै
परायै
प्रत्यक्चितीरूपायै
पश्यन्त्यै
परदेवतायै
मध्यमायै ३७०
वैखरीरूपायै नमः

३ भक्तमानसहंसिकायै नमः
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कृतज्ञायै
कामपूजितायै
शृङ्गाररसम्पूर्णायै
जयायै
जालन्धरस्थितायै
ओड्याणपीठनिलयायै
बिन्दुमण्डलवासिन्यै ३८०
रहोयागक्रमाराध्यायै
रहस्तर्पणतर्पितायै
सद्यःप्रसादिन्यै
विश्वसाक्षिण्यै
साक्षिवर्जितायै
षडङ्गदेवतायुक्तायै
षाड्गुण्यपरिपूरितायै
नित्यक्लिन्नायै
निरुपमायै
निर्वाणसुखदायिन्यै ३९०
नित्याषोडशिकारूपायै
श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै
प्रभावत्यै नमः

३ प्रभारूपायै नमः
प्रसिद्धायै
परमेश्वर्यै
मूलप्रकृत्यै
अव्यक्तायै
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै
व्यापिन्यै ४००
विविधाकारायै
विद्याविद्यास्वरूपिण्यै
महाकामेशनयनकुमुदाह्लाद-
कौमुद्यै
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानु-
सन्तत्यै
शिवदूत्यै
शिवाराध्यायै
शिवमूर्त्यै
शिवङ्कर्यै
शिवप्रियायै
शिवपरायै ४१०
शिष्टेष्टायै
शिष्टपूजितायै
अप्रमेयायै नमः

३ स्वप्रकाशायै नमः
मनोवाचामगोचरायै
चिच्छक्त्यै
चेतनारूपायै
जडशक्त्यै
जडात्मिकायै
गायत्र्यै ४२०
व्याहृत्यै
सन्ध्यायै
द्विजवृन्दनिषेवितायै
तत्त्वासनायै
तस्मै
तुभ्यं
अय्यै
पञ्चकोशान्तरस्थितायै
निःसीममहिम्ने
नित्ययौवनायै ४३०
मदशालिन्यै
मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै
मदपाटलगण्डभुवे
चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै
चाम्पेयकुसुमप्रियायै नमः

३ कुशलायै नमः
कोमलाकारायै
कुरुकुल्लायै
कुलेश्वर्यै
कुलकुण्डालयायै ४४०
कौलमार्गतत्परसेवितायै
कुमारगणनाथाम्बायै
तुष्ट्यै
पुष्ट्यै
मत्यै
धृत्यै
शान्त्यै
स्वस्तिमत्यै
कान्त्यै
नन्दिन्यै ४५०
विघ्ननाशिन्यै
तेजोवत्यै
त्रिनयनायै
लोलाक्षीकामरूपिण्यै
मालिन्यै
हंसिन्यै
मात्रे नमः

३ मलयाचलवासिन्यै नमः
सुमुख्यै
नलिन्यै ४६०
सुभ्रुवे
शोभनायै
सुरनायिकायै
कालकण्ठ्यै
कान्तिमत्यै
क्षोभिण्यै
सूक्ष्मरूपिण्यै
वज्रेश्वर्यै
वामदेव्यै
वयोवस्थाविवर्जितायै ४७०
सिद्धेश्वर्यै
सिद्धविद्यायै
सिद्धमात्रे
यशस्विन्यै
विशुद्धिचक्रनिलयायै
आरक्तवर्णायै
त्रिलोचनायै
खट्वाङ्गादिप्रहरणायै
वदनैकसमन्वितायै नमः

३ पायसान्नप्रियायै नमः ४८०
त्वक्स्थायै
पशुलोकभयङ्कर्यै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
डाकिनीश्वर्यै
अनाहताब्जनिलयायै
श्यामाभायै
वदनद्वयायै
दंष्ट्रोज्ज्वलायै
अक्षमालादिधरायै
रुधिरसंस्थितायै ४९०
कालरात्र्यादिशक्त्योघवृतायै
स्निग्धौदनप्रियायै
महावीरेन्द्रवरदायै
राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै
मणिपूराब्जनिलयायै
वदनत्रयसंयुतायै
वज्रादिकायुधोपेतायै
डामर्यादिभिरावृतायै
रक्तवर्णायै
मांसनिष्ठायै ५००
गुडान्नप्रीतमानसायै नमः

३ समस्तभक्तसुखदायै नमः
लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै
चतुर्वक्त्रमनोहरायै
शूलाद्यायुधसम्पन्नायै
पीतवर्णायै
अतिगर्वितायै
मेदोनिष्ठायै
मधुप्रीतायै ५१०
बन्धिन्यादिसमन्वितायै
दध्यन्नासक्तहृदयायै
काकिनीरूपधारिण्यै
मूलाधाराम्बुजारूढायै
पञ्चवक्त्रायै
अस्थिसंस्थितायै
अङ्कुशादिप्रहरणायै
वरदादिनिषेवितायै
मुद्गौदनासक्तचित्तायै
साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै ५२०
आज्ञाचक्राब्जनिलयायै
शुक्लवर्णायै
षडाननायै नमः

३ मज्जासंस्थायै नमः
हंसवतीमुख्यशक्तिसमन्वितायै
हरिद्रान्नैकरसिकायै
हाकिनीरूपधारिण्यै
सहस्रदलपद्मस्थायै
सर्ववर्णोपशोभितायै
सर्वायुधधरायै ५३०
शुक्लसंस्थितायै
सर्वतोमुख्यै
सर्वौदनप्रीतचित्तायै
याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाहा
स्वधा
अमत्यै
मेधायै
श्रुत्यै
स्मृत्यै ५४०
अनुत्तमायै
पुण्यकीर्त्यै
पुण्यलभ्यायै
पुण्यश्रवणकीर्तनायै
पुलोमजार्चितायै नमः

३ बन्धमोचन्यै नमः
बर्बरालकायै
विमर्शरूपिण्यै
विद्यायै
वियदादिजगत्प्रसुवे ५५०
सर्वव्याधिप्रशमन्यै
सर्वमृत्युनिवारिण्यै
अग्रगण्यायै
अचिन्त्यरूपायै
कलिकल्मषनाशिन्यै
कात्यायन्यै
कालहन्त्र्यै
कमलाक्षनिषेवितायै
ताम्बूलपूरितमुख्यै
दाडिमीकुसुमप्रभायै ५६०
मृगाक्ष्यै
मोहिन्यै
मुख्यायै
मृडान्यै
मित्ररूपिण्यै
नित्यतृप्तायै
भक्तनिधये नमः

३ नियन्त्र्यै नमः
निखिलेश्वर्यै
मैत्र्यादिवासनालभ्यायै ५७०
महाप्रलयसाक्षिण्यै
परस्यै शक्त्यै
परायै निष्ठायै
प्रज्ञानघनरूपिण्यै
माध्वीपानालसायै
मत्तायै
मातृकावर्णरूपिण्यै
महाकैलासनिलयायै
मृणालमृदुदोर्लतायै
महनीयायै ५८०
दयामूर्त्यै
महासाम्राज्यशालिन्यै
आत्मविद्यायै
महाविद्यायै
श्रीविद्यायै
कामसेवितायै
श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै
त्रिकूटायै
कामकोटिकायै नमः

३ कटाक्षकिङ्करीभूतकमला-
कोटिसेवितायै नमः ५९०
शिरःस्थितायै
चन्द्रनिभायै
भालस्थायै
इन्द्रधनुःप्रभायै
हृदयस्थायै
रविप्रख्यायै
त्रिकोणान्तरदीपिकायै
दाक्षायण्यै
दैत्यहन्त्र्यै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै ६००
दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै
दरहासोज्ज्वलन्मुख्यै
गुरुमूर्तये
गुणनिधये
गोमात्रे
गुहजन्मभुवे
देवेश्यै
दण्डनीतिस्थायै
दहराकाशरूपिण्यै
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथि-
मण्डलपूजितायै नमः ६१०

३ कलात्मिकायै नमः
कलानाथायै
काव्यालापविनोदिन्यै
सचामररमावाणीसव्यदक्षिण-
सेवितायै
आदिशक्त्यै
अमेयायै
आत्मने
परमायै
पावनाकृतये
अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै ६२०
दिव्यविग्रहायै
क्लींकार्यै
केवलायै
गुह्यायै
कैवल्यपददायिन्यै
त्रिपुरायै
त्रिजगद्वन्द्यायै
त्रिमूर्तये
त्रिदशेश्वर्यै
त्र्यक्षर्यै नमः ६३०

३	दिव्यगन्धाढ्यायै	नमः	३	योगिन्यै	नमः
	सिन्दूरतिलकाञ्चितायै			योगदायै	
	उमायै			योग्यायै	
	शैलेन्द्रतनयायै			योगानन्दायै	
	गौर्यै			युगन्धरायै	
	गन्धर्वसेवितायै			इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया-	
	विश्वगर्भायै			शक्तिस्वरूपिण्यै	
	स्वर्णगर्भायै			सर्वाधारायै	
	अवरदायै			सुप्रतिष्ठायै	६६०
	वागधीश्वर्यै	६४०		सदसद्रूपधारिण्यै	
	ध्यानगम्यायै			अष्टमूर्त्यै	
	अपरिच्छेद्यायै			अजाजेत्र्यै	
	ज्ञानदायै			लोकयात्राविधायिन्यै	
	ज्ञानविग्रहायै			एकाकिन्यै	
	सर्ववेदान्तसंवेद्यायै			भूमरूपायै	
	सत्यानन्दस्वरूपिण्यै			निर्द्वैतायै	
	लोपामुद्रार्चितायै			द्वैतवर्जितायै	
	लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डलायै			अन्नदायै	
	अदृश्यायै			वसुदायै	
	दृश्यरहितायै	६५०		वृद्धायै	
	विज्ञात्र्यै			ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिण्यै	
	वेद्यवर्जितायै नमः			बृहत्यै नमः	

ॐ ब्राह्मण्यै नमः
ब्राह्म्यै
ब्रह्मानन्दायै
बलिप्रियायै
भाषारूपायै
बृहत्सेनायै
भावाभावविवर्जितायै ६८०
सुखाराध्यायै
शुभकर्यै
शोभनायै सुलभायै गत्यै
राजराजेश्वर्यै
राज्यदायिन्यै
राज्यवल्लभायै
राजत्कृपायै
राजपीठनिवेशितनिजाश्रितायै
राज्यलक्ष्म्यै
कोशनाथायै ६९०
चतुरङ्गबलेश्वर्यै
साम्राज्यदायिन्यै
सत्यसन्धायै
सागरमेखलायै
दीक्षितायै नमः

ॐ दैत्यशमन्यै नमः
सर्वलोकवशङ्कर्यै
सर्वार्थदात्र्यै
सावित्र्यै
सच्चिदानन्दरूपिण्यै ७००
देशकालापरिच्छिन्नायै
सर्वगायै
सर्वमोहिन्यै
सरस्वत्यै
शास्त्रमय्यै
गुहाम्बायै
गुह्यरूपिण्यै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै
सदाशिवपतिव्रतायै
सम्प्रदायेश्वर्यै ७१०
साधुने
यै
गुरुमण्डलरूपिण्यै
कुलोत्तीर्णायै
भगाराध्यायै
मायायै
मधुमत्यै नमः

३ मह्यै नमः	३ लज्जायै नमः	७४०
गणाम्बायै	रम्भादिवन्दितायै	
गुह्यकाराध्यायै ७२०	भवदावसुधावृष्ट्यै	
कोमलाङ्ग्यै	पापारण्यदवानलायै	
गुरुप्रियायै	दौर्भाग्यतूलवातूलायै	
स्वतन्त्रायै	जराध्वान्तरविप्रभायै	
सर्वतन्त्रेश्यै	भाग्याब्धिचन्द्रिकायै	
दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै	भक्तचित्तकेकिघनाघनायै	
सनकादिसमाराध्यायै	रोगपर्वतदम्भोलये	
शिवज्ञानप्रदायिन्यै	मृत्युदारुकुठारिकायै	
चित्कलायै	महेश्वर्यै	७५०
आनन्दकलिकायै	महाकाल्यै	
प्रेमरूपायै ७३०	महाग्रासायै	
प्रियङ्कर्यै	महाशनायै	
नामपारायणप्रीतायै	अपर्णायै	
नन्दिविद्यायै	चण्डिकायै	
नटेश्वर्यै	चण्डमुण्डासुरनिषूदन्यै	
मिथ्याजगदधिष्ठानायै	क्षराक्षरात्मिकायै	
मुक्तिदायै	सर्वलोकेश्यै	
मुक्तिरूपिण्यै	विश्वधारिण्यै	
लास्यप्रियायै	त्रिवर्गदात्र्यै	७६०
लयकर्यै नमः	सुभगायै नमः	

३ त्र्यम्बकायै नमः
त्रिगुणात्मिकायै
स्वर्गापवर्गदायै
शुद्धायै
जपापुष्पनिभाकृतये
ओजोवत्यै
द्युतिधरायै
यज्ञरूपायै
प्रियव्रतायै ७७०
दुराराध्यायै
दुराधर्षायै
पाटलीकुसुमप्रियायै
महत्यै
मेरुनिलयायै
मन्दारकुसुमप्रियायै
वीराराध्यायै
विराड्रूपायै
विरजसे
विश्वतोमुख्यै ७८०
प्रत्यग्रूपायै
पराकाशायै
प्राणदायै नमः

३ प्राणरूपिण्यै नमः
मार्तण्डभैरवाराध्यायै
मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधुरे
त्रिपुरेश्यै
जयत्सेनायै
निस्त्रैगुण्यायै
परापरायै ७९०
सत्यज्ञानानन्दरूपायै
सामरस्यपरायणायै
कपर्दिन्यै
कलामालायै
कामदुहे
कामरूपिण्यै
कलानिधये
काव्यकलायै
रसज्ञायै
रसशेवधये ८००
पुष्टायै
पुरातनायै
पूज्यायै
पुष्करायै
पुष्करेक्षणायै नमः

३ परस्मै ज्योतिषे नमः		३ आज्ञायै नमः	
परस्मै धाम्ने		प्रतिष्ठायै	
परमाणवे		प्रकटाकृतये	८३०
परात्परायै		प्राणेश्वर्यै	
पाशहस्तायै	८१०	प्राणदात्र्यै	
पाशहन्त्र्यै		पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै	
परमन्त्रविभेदिन्यै		विशृङ्खलायै	
मूर्तायै		विविक्तस्थायै	
अमूर्तायै		वीरमात्रे	
अनित्यतृप्तायै		वियत्प्रसुवे	
मुनिमानसहंसिकायै		मुकुन्दायै	
सत्यव्रतायै		मुक्तिनिलयायै	
सत्यरूपायै		मूलविग्रहरूपिण्यै	८४०
सर्वान्तर्यामिण्यै		भावज्ञायै	
सत्यै	८२०	भवरोगघ्न्यै	
ब्रह्माण्यै		भवचक्रप्रवर्तिन्यै	
ब्रह्मणे		छन्दःसारायै	
जनन्यै		शास्त्रसारायै	
बहुरूपायै		मन्त्रसारायै	
बुधार्चितायै		तलोदर्यै	
प्रसवित्र्यै		उदारकीर्तये	
प्रचण्डायै नमः		उद्दामवैभवायै नमः	

ॐ वर्णरूपिण्यै नमः ८५०
जन्ममृत्युजरातप्तजन-
विश्रान्तिदायिन्यै
सर्वोपनिषदुद्घुष्टायै
शान्त्यतीतकलात्मिकायै
गम्भीरायै
गगनान्तस्थायै
गर्वितायै
गानलोलुपायै
कल्पनारहितायै
काष्ठायै
अकान्तायै ८६०
कान्तार्धविग्रहायै
कार्यकारणनिर्मुक्तायै
कामकेलितरङ्गितायै
कनत्कनकताटङ्कायै
लीलाविग्रहधारिण्यै
अजायै
क्षयविनिर्मुक्तायै
मुग्धायै
क्षिप्रप्रसादिन्यै
अन्तर्मुखसमाराध्यायै नमः ८७०

ॐ बहिर्मुखसुदुर्लभायै नमः
त्रय्यै
त्रिवर्गनिलयायै
त्रिस्थायै
त्रिपुरमालिन्यै
निरामयायै
निरालम्बायै
स्वात्मारामायै
सुधासृत्यै
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरण-
पण्डितायै ८८०
यज्ञप्रियायै
यज्ञकर्त्र्यै
यजमानस्वरूपिण्यै
धर्माधारायै
धनाध्यक्षायै
धनधान्यविवर्धिन्यै
विप्रप्रियायै
विप्ररूपायै
विश्वभ्रमणकारिण्यै
विश्वग्रासायै ८९०
विद्रुमाभायै नमः

३ वैष्णव्यै नमः
विष्णुरूपिण्यै
अयोन्यै
योनिनिलयायै
कूटस्थायै
कुलरूपिण्यै
वीरगोष्ठीप्रियायै
वीरायै
नैष्कर्म्यायै ९००
नादरूपिण्यै
विज्ञानकलनायै
कल्यायै
विदग्धायै
बैन्दवासनायै
तत्त्वाधिकायै
तत्त्वमय्यै
तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै
सामगानप्रियायै
सौम्यायै ९१०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सव्यापसव्यमार्गस्थायै
सर्वापद्विनिवारिण्यै
स्वस्थायै नमः

३ स्वभावमधुरायै नमः
धीरायै
धीरसमर्चितायै
चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै
चैतन्यकुसुमप्रियायै
सदोदितायै ९२०
सदातुष्टायै
तरुणादित्यपाटलायै
दक्षिणादक्षिणाराध्यायै
दरस्मेरमुखाम्बुजायै
कौलिनीकेवलायै
अनर्घ्यकैवल्यपददायिन्यै
स्तोत्रप्रियायै
स्तुतिमत्यै
श्रुतिसंस्तुतवैभवायै
मनस्विन्यै ९३०
मानवत्यै
महेश्यै
मङ्गलाकृतये
विश्वमात्रे
जगद्धात्र्यै
विशालाक्ष्यै
विरागिण्यै नमः

३ प्रगल्भायै नमः
परमोदारायै ९४०
परमोदायै
मनोमय्यै
व्योमकेश्यै
विमानस्थायै
वज्रिण्यै
वामकेश्वर्यै
पञ्चयज्ञप्रियायै
पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिन्यै
पञ्चम्यै
पञ्चभूतेश्यै
पञ्चसङ्ख्योपचारिण्यै ९५०
शाश्वत्यै
शाश्वतैश्वर्यायै
शर्मदायै
शम्भुमोहिन्यै
धरायै
धरसुतायै
धन्यायै
धर्मिण्यै
धर्मवर्धिन्यै नमः

३ लोकातीतायै नमः ९६०
गुणातीतायै
सर्वातीतायै
शमात्मिकायै
बन्धूककुसुमप्रख्यायै
बालायै
लीलाविनोदिन्यै
सुमङ्गल्यै
सुखकर्यै
सुवेषाढ्यायै
सुवासिन्यै ९७०
सुवासिन्यर्चनप्रीतायै
आशोभानायै
शुद्धमानसायै
बिन्दुतर्पणसन्तुष्टायै
पूर्वजायै
त्रिपुराम्बिकायै
दशमुद्रासमाराध्यायै
त्रिपुराश्रीवशङ्कर्यै
ज्ञानमुद्रायै
ज्ञानगम्यायै ९८०
ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै नमः

३ योनिमुद्रायै नमः
त्रिखण्डेश्यै
त्रिगुणायै
अम्बायै
त्रिकोणगायै
अनघायै
अद्भुतचारित्रायै
वाञ्छितार्थप्रदायिन्यै
अभ्यासातिशयज्ञातायै ९९०
षडध्वातीतरूपिण्यै

३ अव्याजकरुणामूर्तये नमः
अज्ञानध्वान्तदीपिकायै
आबालगोपविदितायै
सर्वानुल्लङ्घ्यशासनायै
श्रीचक्रराजनिलयायै
श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै
श्रीशिवायै
शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै
श्रीललिताम्बिकायै १०००

पुनरपि पूर्ववत् न्यासध्यानादिकं कुर्यात् ।

इति श्रीललितासहस्रनावमालिः सम्पूर्णा ।

श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः

ऐं ह्रीं श्रीं

३ रजताचलशृङ्गाग्रमध्यस्थायै नमः
हिमाचलमहावंशपावनायै
शङ्करार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरायै
लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै
महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै
शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै
सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै

३ वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै नमः
कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटिलायै
भस्मरेखाङ्कितलसन्मस्तकायै
विकचाम्भोरुहदललोचनायै
शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै
लसत्काञ्चनताटङ्कयुगलायै
मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै

३ ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै नमः
सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै
कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै
स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै
गिरीशबद्धमाङ्गल्यमङ्गलायै
पद्मपाशङ्कुशलसत्कराब्जायै
पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै
सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै
रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै
कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै
बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै
बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै
सौभाग्यजातशृङ्गारमध्यमायै
दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै
पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै
सुपद्मरागसङ्काशचरणायै
कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै
श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै
सचामररमावाणीवीजितायै
भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै
भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्ग्यै
अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै

३ ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै नमः
शचीमुख्यामरवधूसेवितायै
लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै
सनकादिसमाराध्यपादुकायै
देवर्षिभिः स्तूयमानवैभवायै
कलशोद्भवदुर्वासःपूजितायै
मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै
चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्तिन्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै
शशाङ्कखण्डसम्भूतसुदेहायै
मत्तहंसवधूमन्दगमनायै
वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै
अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै
पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै
अव्याजकरुणापूरपूरितायै
नितान्तसच्चिदानन्दसंयुक्तायै
सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै
रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै
ह्रानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै
महापद्माटवीमध्यनिवासायै

३ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै नमः
महापापौघपापानां विनाशिन्यै
दुष्टभीतिमहाभीतिभञ्जनायै
समस्तदेवदनुजप्रेरकायै
समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै
अनाहतमहापद्मेन्दिरायै
सहस्रारसरोजातवासितायै
पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै
वाणीगायत्रीसन्नुतायै
रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै
लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै
सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै
भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै
सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै
श्रीलोचनकृतोल्लासफलदायै
श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै
दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै
श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै
चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै
नामपारायणाभीष्टफलदायै
सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै
श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै

३ अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै नमः
भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै
मातृमण्डलसंयुक्तललितायै
भण्डदैत्यमहासत्वनाशनायै
क्रूरभण्डशिरश्छेदनिपुणायै
धात्रच्युतसुराधीशसुखदायै
चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै
रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै
महिषासुरदोर्वीर्यनिग्रहायै
अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै
महेशयुक्तनटनतत्परायै
निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै
वृषभध्वजविज्ञानभावनायै
जन्ममृत्युजरारोगभञ्जनायै
विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धिदायै
कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै
राजराजार्चितपदसरोजायै
सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै
श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधानायै
अशेषदुष्टदनुजसूदनायै
साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै
हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै
दक्षप्रजापतिसुरवेषाढ्यायै

३ सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै नमः ३ महादेवसमायुक्तशरीरायै नमः
नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै

॥ श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा ॥

———

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य हयग्रीवऋषये नमः (शिरसि) अनुष्टुप्छन्दसे नमः (मुखे), श्रीललिताम्बादेवतायै नमः हृदये, क० ५ बीजाय नमः गुह्ये, स० ४ शक्तये नमः (पादयोः) ह० ६ कीलकाय नमः (नाभौ) श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धये जपे (पूजने) विनियोगाय नमः (सर्वाङ्गे)। कूटत्रयं द्विरावृत्य बालया वा षडङ्गद्वयम्।

अथ ध्यानम्

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥१॥

(लमिति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य—)

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

ऐं ह्रीं श्रीं

३ ककाररूपायै नमः
कल्याण्यै
कल्याणगुणशालिन्यै
कल्याणशैलनिलयायै
कमनीयायै
कलावत्यै
कमलाक्ष्यै
कल्मषघ्न्यै
करुणामृतसागरायै
कदम्बकाननावासायै १०
कदम्बकुसुमप्रियायै
कन्दर्पविद्यायै
कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणायै
कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित-
ककुप्तटायै
कलिदोषहरायै
कञ्जलोचनायै
कम्रविग्रहायै
कर्मादिसाक्षिण्यै
३ कारयित्र्यै नमः
कर्मफलप्रदायै २०
एकाररूपायै
एकाक्षर्यै
एकानेकाक्षराकृत्यै
एतत्तदित्यनिर्देश्यायै
एकानन्दचिदाकृत्यै
एवमित्यागमाबोध्यायै
एकभक्तिमदर्चितायै
एकाग्रचित्तनिर्ध्यातायै
एषणारहितादृतायै
एलासुगन्धिचिकुरायै ३०
एनःकूटविनाशिन्यै
एकभोगायै
एकरसायै
एकैश्वर्यप्रदायिन्यै
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै
एकान्तपूजितायै
एधमानप्रभायै

३ एजदनेकजगदीश्वर्यै नमः
एकवीरादिसंसेव्यायै
एकप्राभवशालिन्यै ४०
ईकाररूपायै
ईशित्र्यै
ईप्सितार्थप्रदायिन्यै
ईदृगित्यविनिर्देश्यायै
ईश्वरत्वविधायिन्यै
ईशानादिब्रह्ममय्यै
ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदायै
ईक्षित्र्यै
ईक्षणसृष्टाण्डकोट्यै
ईश्वरवल्लभायै
ईडितायै ५०
ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै
ईशाधिदेवतायै
ईश्वरप्रेरणकर्यै
ईशताण्डवसाक्षिण्यै
ईश्वरोत्सङ्गनिलयायै
ईतिबाधाविनाशिन्यै
ईहाविरहितायै
ईशशक्त्यै

३ ईषत्स्मिताननायै नमः
लकाररूपायै ६०
ललितायै
लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै
लाकिन्यै
ललनारूपायै
लसद्दाडिमपाटलायै
ललन्तिकालसत्फालायै
ललाटनयनार्चितायै
लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्ग्यै
लक्षकोट्यण्डनायिकायै ७०
लक्ष्यार्थायै
लक्षणागम्यायै
लब्धकामायै
लतातनवे
ललामराजदलिकायै
लम्बिमुक्तालताञ्चितायै
लम्बोदरप्रसुवे
लभ्यायै
लज्जाढ्यायै
लयवर्जितायै ८०
ह्रींकाररूपायै

३ ह्लींकारनिलयायै नमः
ह्लींपदप्रियायै
ह्लींकारबीजायै
ह्लींकारमन्त्रायै
ह्लींकारलक्षणायै
ह्लींकारजपसुप्रीतायै
ह्लींमत्यै
ह्लींविभूषणायै
ह्लींशीलायै ९०
ह्लींपदाराध्यायै
ह्लींगर्भायै
ह्लींपदाभिधायै
ह्लींकारवाच्यायै
ह्लींकारपूज्यायै
ह्लींकारपीठिकायै
ह्लींकारवेद्यायै
ह्लींकारचिन्त्यायै
ह्लीं
ह्लींशरीरिण्यै १००
हकाररूपायै
हलधृक्पूजितायै
हरिणेक्षणायै

३ हरिप्रियायै नमः
हराराध्यायै
हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै
हयारूढासेविताङ्घ्र्यै
हयमेधसमर्चितायै
हर्यक्षवाहनायै
हंसवाहनायै ११०
हतदानवायै
हत्यादिपापशमन्यै
हरिदश्वादिसेवितायै
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै
हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनायै
हरिद्राकुङ्कुमादिग्धायै
हर्यश्वाद्यमरार्चितायै
हरिकेशसख्यै
हादिविद्यायै
हालामदालसायै १२०
सकाररूपायै
सर्वज्ञायै
सर्वेश्यै
सर्वमङ्गलायै
सर्वकर्त्र्यै

३ सर्वभर्त्र्यै नमः
सर्वहन्त्र्यै
सनातन्यै
सर्वानवद्यायै
सर्वाङ्गसुन्दर्यै १३०
सर्वसाक्षिण्यै
सर्वात्मिकायै
सर्वसौख्यदात्र्यै
सर्वविमोहिन्यै
सर्वाधारायै
सर्वगतायै
सर्वावगुणवर्जितायै
सर्वारुणायै
सर्वमात्रे
सर्वभूषणभूषितायै १४०
ककारार्थायै
कालहन्त्र्यै
कामेश्यै
कामितार्थदायै
कामसञ्जीवन्यै
कल्यायै
कठिनस्तनमण्डलायै

३ करभोरवे नमः
कलानाथमुख्यै
कचजिताम्बुदायै १५०
कटाक्षस्यन्दिकरुणायै
कपालिप्राणनायिकायै
कारुण्यविग्रहायै
कान्तायै
कान्तिधूतजपावल्यै
कलालापायै
कम्बुकण्ठ्यै
करनिर्जितपल्लवायै
कल्पवल्लीसमभुजायै
कस्तूरीतिलकाञ्चितायै १६०
हकारार्थायै
हंसगत्यै
हाटकाभरणोज्ज्वलायै
हारहारिकुचाभोगायै
हाकिन्यै
हल्यवर्जितायै
हरित्पतिसमाराध्यायै
हठात्कारहतासुरायै
हर्षप्रदायै

३ हविर्भोक्त्र्यै नमः १७०
हार्दसन्तमसापहायै
हल्लीसलास्यसन्तुष्टायै
हंसमन्त्रार्थरूपिण्यै
हानोपादाननिर्मुक्तायै
हर्षिण्यै
हरिसोदर्यै
हाहाहूहूमुखस्तुत्यायै
हानिवृद्धिविवर्जितायै
हय्यङ्गवीनहृदयायै
हरिगोपारुणांशुकायै १८०
लकाराख्यायै
लतापूज्यायै
लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै
लास्यदर्शनसन्तुष्टायै
लाभालाभविवर्जितायै
लङ्घ्येतराज्ञायै
लावण्यशालिन्यै
लघुसिद्धिदायै
लाक्षारससवर्णाभायै
लक्ष्मणाग्रजपूजितायै १९०
लभ्येतरायै

३ लब्धभक्तिसुलभायै नमः
लाङ्गलायुधायै
लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरिवीजितायै
लज्जापदसमाराध्यायै
लम्पटायै
लकुलेश्वर्यै
लब्धमानायै
लब्धरसायै
लब्धसम्पत्समुन्नत्यै २००
ह्रींकारिण्यै
ह्रींकाराद्यायै
ह्रींमध्यायै
ह्रींशिखामणये
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखायै
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै
ह्रींकारभास्कररुच्यै
ह्रींकाराम्भोदचञ्चलायै
ह्रीङ्कारकन्दाङ्कुरिकायै
ह्रींकारैकपरायणायै २१०
ह्रींकारदीर्घिकाहंस्यै
ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै

३ ह्रीङ्कारारण्यहरिण्यै नमः
ह्रीकारावालवल्लर्यै
ह्रीङ्कारपञ्जरशुक्यै
ह्रीङ्काराङ्गणदीपिकायै
ह्रीङ्कारकन्दरासिंह्यै
ह्रींकाराम्भोजभृङ्गिकायै
ह्रीङ्कारसुमनोमाध्व्यै
ह्रीङ्कारतरुमञ्जर्यै २२०
सकाराख्यायै
समरसायै
सकलागमसंस्तुतायै
सर्ववेदान्ततात्पर्यभूम्यै
सदसदाश्रयायै
सकलायै
सच्चिदानन्दायै
साध्व्यै
सद्गतिदायिन्यै
सनकादिमुनिध्येयायै २३०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सकलाधिष्ठानरूपायै
सत्यरूपायै
समाकृत्यै

३ सर्वप्रपञ्चनिर्मात्र्यै नमः
समानाधिकवर्जितायै
सर्वोत्तुङ्गायै
सङ्गहीनायै
सगुणायै
सकलेष्टदायै २४०
ककारिण्यै
काव्यलोलायै
कामेश्वरमनोहरायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कामेशोत्सङ्गवासिन्यै
कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै
कामेश्वरसुखप्रदायै
कामेश्वरप्रणयिन्यै
कामेश्वरविलासिन्यै
कामेश्वरतपस्सिद्ध्यै २५०
कामेश्वरमनः प्रियायै
कामेश्वरप्राणनाथायै
कामेश्वरविमोहिन्यै
कामेश्वरब्रह्मविद्यायै
कामेश्वरगृहेश्वर्यै
कामेश्वराह्लादकर्यै

३ कामेश्वरमहेश्वर्यै नमः
कामेश्वर्यै
कामकोटिनिलयायै
काङ्क्षितार्थदायै २६०
लकारिण्यै
लब्धरूपायै
लब्धधिये
लब्धवाञ्छितायै
लब्धपापमनोदूरायै
लब्धाहङ्कारदुर्गमायै
लब्धशक्त्यै
लब्धदेहायै
लब्धैश्वर्यसमुन्नत्यै
लब्धवृद्धये २७०
लब्धलीलायै
लब्धयौवनशालिन्यै
लब्धातिशयसर्वाङ्गसौन्दर्यायै
लब्धविभ्रमायै
लब्धरागायै
लब्धपत्यै
लब्धनानागमस्थित्यै
लब्धभोगायै
लब्धसुखायै

३ लब्धहर्षाभिपूरितायै नमः २८०
ह्रींकारमूर्तये
ह्रींकारसौधशृङ्गकपोतिकायै
ह्रींकारदुग्धाब्धिसुधायै
ह्रींकारकमलेन्दिरायै
ह्रींकारमणिदीपार्चिषे
ह्रींकारतरुशारिकायै
ह्रींकारपेटकमणये
ह्रींकारादर्शबिम्बितायै
ह्रींकारकोशासिलतायै
ह्रींकारास्थाननर्तक्यै २९०
ह्रींकारशुक्तिकामुक्तामणये
ह्रींकारबोधितायै
ह्रींकारमयसौवर्णस्तम्भविद्रुम-पुत्रिकायै
ह्रींकारवेदोपनिषदे
ह्रींकाराध्वरदक्षिणायै
ह्रींकारनन्दनारामनवकल्पक-वल्लर्यै
ह्रींकारहिमवद्गङ्गायै
ह्रींकारार्णवकौस्तुभायै
ह्रींकारमन्त्रसर्वस्वायै
ह्रींकारपरसौख्यदायै ३००

ऐं, ह्रीं, श्रीं, श्रीमद्राजराजेश्वर्यै नमः
समाप्तेयं त्रिशतीस्तोत्रनामावलिः।

परिशिष्टम्

१—श्रीविद्यार्णवोक्तं सङ्क्षेपतः श्रीचक्रार्चनम्

तत्र प्रातःकृत्यादिप्राणायामान्तं विधाय, मातृकादिन्यासांश्च विधाय, स्वेष्टमन्त्रस्य ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् । ततः—

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशशरांश्चापं धारयन्तीं शिवां भजे ॥

इति ध्यात्वा मानसोपचारैः सम्पूज्य आनन्दोऽहमिति विभाव्य सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण कलशं संस्थाप्य तेनोदकेन पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्ष्य, शङ्खस्थापनं कुर्यात् ।

तद्यथा— श्रीचक्रपुरतः स्ववामे त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रं मत्यमुद्रया निर्माय मूलषडङ्गैरभ्यर्च्य "फट्" इति शङ्खं प्रक्षाल्य तत्र गन्धपुष्पादिकं निक्षिप्य 'मूलेन' जलेनापूर्य मण्डलादिकं पूजयेत् ।

"अं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः" (इति त्रिपादिकायाम् ।)
"उं सूर्यमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः" (इति शङ्खे ।)
"मं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः" (इति जले ।)

ततः "गङ्गे च यमुने चैव" इत्यादिना तीर्थमावाह्य "हुँ" इत्यवगुण्ठ्य षडङ्गेन सम्पूज्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलमष्टधा जपित्वा तज्जलं किञ्चित् प्रोक्षणीतोये निक्षिप्य तेनोदकेनात्मानं पूजोपकरणं चाभ्युक्षयेत् । तद्दक्षिणे पाद्यादिपात्रं संस्थाप्यासनपूजामारभेत् । यथा—

उपर्युपरि यन्त्रस्य

३ आधारशक्तये नमः। "एवं" प्रकृतये० कूर्माय०, अनन्ताय० पृथिव्यै०, रसाम्बुधये०, रत्नद्वीपाय०, नन्दनोद्यानाय०, रत्नमण्डपाय०, कल्पवृक्षाय० रत्नवेदिकायै०, रत्नसिंहासनाय नमः।

पीठोपरि बैन्दवचक्रे :—

ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः।

वैन्दवे "ह्स्रैं ह्सक्ल्रीं ह्स्रौः" इति मन्त्रेण मूर्ति सङ्कल्प्य त्रिखण्डा-मुद्रां बद्ध्वा पूर्ववद् ध्यात्वा प्रवहन्नासापुटेन तेजोमयं पुष्पाञ्जलावानीय।

"३ महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥

इति मूर्तौ संस्थाप्यावाहनादि-यथाशक्त्युपचारेण पूजां विधाय श्रीचक्रे लयाङ्गादिपूजां विदध्यात्।

षडङ्गार्चनम्

३ (मूलं) श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजायामि नमः ("इति बिन्दौ देवीं त्रिः" सम्पूजयेत्।)

देव्यङ्गे (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा शिरःशक्तिश्रीपादुकां पू० नमः।

३ सौः स-४ शिखायै वषट् शिखाशक्तिश्रीपादुकां पू० नमः।

३ ऐं क-५ कवचाय हुं कवचशक्तिश्रीपादुकां पू० नमः।

३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पू० नमः।

३ सौः स-४ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पू० नमः।

ततो मध्यप्राक्त्र्यस्रमध्येषु गुरुपङ्क्ति पूजयेत्—तद्यथा :—

ऐं ह्रीं श्रीं गुरुपङ्क्तिभ्यो नमः।

३ गुरुपादुकाभ्यो नमः, परमगुरुपादुकाभ्यो नमः, परापरगुरु-पादुकाभ्यो नमः, तत आचार्यं तत्पादुकाञ्च पूजयेत्।

अथावरणपूजा

चतुरस्रे त्रैलोक्यमोहनचक्रे—

(तत्र चतुरस्रस्य प्रथमरेखायां) ऐं ह्रीं श्रीं अणिमादिदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(मध्यरेखायां)— ३ ब्राह्म्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(अन्त्यरेखायां)— ३ सर्वसङ्क्षोभिण्यादिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(चक्राग्रे)— ३ त्रिपुराचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहनचक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

ततः षोडशदले सर्वाशापरिपूरके चक्रे—

३ अं·····अः कामाकर्षिण्यादिषोडशनित्याकलाश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरेशीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ एता गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

अष्टदले सर्वसङ्क्षोभणचक्रे —

अनङ्गकुसुमाद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

अत्र सर्वसङ्क्षोभणचक्रे अनङ्गकुसुमाद्या गुप्ततरयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यंजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्) ।

चतुर्दशारे सर्वसौभाग्यदायके चक्रे —

३ सर्वसङ्क्षोभिण्यादिचतुर्दशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

अत्र सर्वसौभाग्यदायके चतुर्दशारचक्रे सम्प्रदाययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यंजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्) ।

सर्वार्थसाधके बहिर्दशारचक्रे —

३ सर्वसिद्धिप्रदादिदशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

अत्र सर्वार्थसाधके बहिर्दशारचक्रे कुलोत्तीर्णयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यंजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्) ।

सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशारचक्रे— ३ सर्वज्ञादिदशदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

३ अत्र सर्वरक्षाकरे अन्तर्दशारचक्रे निगर्भयोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वरोगहरे अष्टारचक्रे— ३ वशिन्याद्यष्टदेवीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।

अत्र सर्वरोगहरे चक्रे वशिन्याद्यष्टरहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वसिद्धिप्रदे अन्तरालत्रिकोणे—

(अग्रकोणे) ३ महाकामेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(दक्षिणकोणे) ३ महावज्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(वामकोणे) ३ महाभगमालिनीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

(चक्राग्रे) ३ त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ अत्र सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे कामेश्वर्याद्या अतिरहस्ययोगिन्यः समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

सर्वानन्दमये बिन्दुचक्रे—

३ महात्रिपुरसुन्दरीश्रीविद्यापादुकां पूजयामि नमः (त्रिवारम्)।

३ (वामे) योनिमुद्राश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

चक्राग्रे— ३ त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः।

३ अत्र सर्वानन्दमये बैन्दवचक्रे सच्चिदानन्दस्वरूपिणी परापरातिरहस्ययोगिनी समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टाऽस्तु नमः (इत्यर्घ्यजलेन मूलदेव्यै समर्पयेत्)।

ततः सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण धूपदीपनैवद्यारार्तिक्यं कुर्यात् ।

पुनर्यथाशक्ति मूलमन्त्रं जपित्वा सहस्रनामादिभिर्जगन्मातरं संस्तूय [1]पूजासमर्पणादि-पात्रोद्वासनान्तं कर्म समापयेत् ।

इति श्रीषोडशानन्दनाथ (करपात्र स्वामि) सङ्कलितायां श्रीविद्यावरिवस्यायां सङ्क्षेपतः श्रीचक्रार्चनं समाप्तम् ।

卐

१. पूजा-समर्पणादि पात्रोद्वासनान्तं कर्म १४२ पृष्ठे द्रष्टव्यम् ।

सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला-मन्त्रः

अस्य श्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्ध्यन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्यऋषये नमः (शिरसि) गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे)। सात्त्विकककारभट्टारकपीठस्थितशिवकामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरी-ललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः (हृदये)।

ऐं वीजय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), खड्गसिद्धौ विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

ह्रां इत्यादि दीर्घषट्केन करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्—

तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड् भोक्ता भविष्यति॥
(लमित्यादि पञ्चपूजा।)

ऐं ह्रीं श्रीं नमस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमा-

सिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि (२९६) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६५) कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणि धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि (४५९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णयोगिनि (७१२) सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि

सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुरसुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते (त्रिः) स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥१०३१॥

एकत्रिंशदधिकसहस्राक्षराणि । इति सम्बुद्धयन्तखड्गमाला ।

(३)

चतुर्थ्यन्त–खड्गमालामन्त्रः

अस्य खड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्यऋषये नमः (शिरसि), गायत्रीच्छन्दसे नमः (मुखे), ललितादेवतायै नमः (हृदये), क ५ बीजाय नमः (गुह्ये), ह ६ शक्तये नमः (पादयोः) स ४ कीलकाय नमः (नाभौ), श्रीललिताप्रसादसिद्ध्यर्थे पूजने विनियोगाय नमः (करसम्पुटे) । कूटत्रयद्विरावृत्त्या करहृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्शेखराम् ।
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं,
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

(इति ध्यात्वा मानसोपचारैःसम्पूज्य ।)

ऐंह्लींश्रीं त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
३ हृदयदेव्यै नमः
,, शिरोदेव्यै नमः
,, शिखादेव्यै नमः
,, कवचदेव्यै नमः
,, नेत्रदेव्यै नमः
,, अस्त्रदेव्यै नमः
,, कामेश्वर्यै नमः
,, भगमालिन्यै नमः
,, नित्यक्लिन्नायै नमः
,, भेरुण्डायै नमः
,, वह्निवासिन्यै नमः
,, महावज्रेश्वर्यै नमः
,, शिवदूत्यै नमः
,, त्वरितायै नमः
,, कुलसुन्दर्यै नमः
,, नित्यायै नमः
,, नीलपताकायै नमः
,, विजयायै नमः
,, सर्वमङ्गलायै नमः
,, ज्वालामालिन्यै नमः
,, चित्रायै नमः

ऐंह्रींश्रीं महानित्यायै नमः
,, परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
,, मित्रेशमय्यै नमः
,, षष्ठीशमय्यै नमः
,, उड्डीशमय्यै नमः
,, चर्यानाथमय्यै नमः
,, लोपामुद्रामय्यै नमः
,, अगस्त्यमय्यै नमः
,, कालतापनमय्यै नमः
,, धर्माचार्यमय्यै नमः
,, मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः
,, दीपकलानाथमय्यै नमः
,, विष्णुदेवमय्यै नमः
,, प्रभाकरदेवमय्यै नमः
,, तेजोदेवमय्यै नमः
,, मनोजदेवमय्यै नमः
,, कल्याणदेवमय्यै नमः
,, रत्नदेवमय्यै नमः
,, वासुदेवमय्यै नमः
,, श्रीरामानन्दमय्यै नमः
,, अणिमासिद्ध्यै नमः
,, लघिमासिद्ध्यै नमः

ऐंह्लींश्रीं महिमासिद्ध्यै	नमः	ऐंह्लींश्रीं सर्वखेचर्यै	नमः
,, ईशित्वसिद्ध्यै	नमः	,, सर्वबीजायै	नमः
,, वशित्वसिद्ध्यै	नमः	,, सर्वयोन्यै	नमः
,, प्राकाम्यसिद्ध्यै	नमः	,, सर्वत्रिखण्डायै	नमः
,, भुक्तिसिद्ध्यै	नमः	,, त्रैलोक्यमोहनचक्र-स्वामिन्यै	नमः
,, इच्छासिद्ध्यै	नमः		
,, प्राप्तिसिद्ध्यै	नमः	,, प्रकटयोगिन्यै	नमः
,, सर्वकामसिद्ध्यै	नमः	,, कामाकर्षिण्यै	नमः
,, ब्राह्म्यै	नमः	,, बुद्ध्याकर्षिण्यै	नमः
,, माहेश्वर्यै	नमः	,, अहङ्काराकर्षिण्यै	नमः
,, कौमार्यै	नमः	,, शब्दाकर्षिण्यै	नमः
,, वैष्णव्यै	नमः	,, स्पर्शाकर्षिण्यै	नमः
,, वाराह्यै	नमः	,, रूपाकर्षिण्यै	नमः
,, माहेन्द्र्यै	नमः	,, रसाकर्षिण्यै	नमः
,, चामुण्डायै	नमः	,, गन्धाकर्षिण्यै	नमः
,, महालक्ष्म्यै	नमः	,, चित्ताकर्षिण्यै	नमः
,, सर्वसंक्षोभिण्यै	नमः	,, धैर्याकर्षिण्यै	नमः
,, सर्वविद्राविण्यै	नमः	,, स्मृत्याकर्षिण्यै	नमः
,, सर्वाकर्षिण्यै	नमः	,, नामाकर्षिण्यै	नमः
,, सर्ववशङ्कर्यै	नमः	,, बीजाकर्षिण्यै	नमः
,, सर्वोन्मादिन्यै	नमः	,, आत्माकर्षिण्यै	नमः
,, सर्वमहाङ्कुशायै	नमः	,, अमृताकर्षिण्यै	नमः

ऐंह्लींश्रीं शरीराकर्षिण्यै नमः
,, सर्वाशापरिपूरकचक्र-
स्वामिन्यै नमः
,, गुप्तयोगिन्यै नमः
,, अनङ्गकुसुमायै नमः
,, अनङ्गमेखलायै नमः
,, अनङ्गमदनायै नमः
,, अनङ्गमदनातुरायै नमः
,, अनङ्गरेखायै नमः
,, अनङ्गवेगिन्यै नमः
,, अनङ्गाङ्कुशायै नमः
,, अनङ्गमालिन्यै नमः
,, सर्वसंक्षोभणचक्र-
स्वामिन्यै नमः
,, गुप्ततरयोगिन्यै नमः
,, सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
,, सर्वविद्राविण्यै नमः
,, सर्वाकर्षिण्यै नमः
,, सर्वाह्लादिन्यै नमः
,, सर्वसम्मोहिन्यै नमः
,, सर्वस्तम्भिन्यै नमः
,, सर्वजृम्भिण्यै नमः

ऐंह्लींश्रीं सर्ववशङ्कर्यै नमः
,, सर्वरञ्जिन्यै नमः
,, सर्वोन्मादिन्यै नमः
,, सर्वार्थसाधिन्यै नमः
,, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः
,, सर्वमन्त्रमय्यै नमः
,, सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
,, सर्वसौभाग्यदायकचक्र-
स्वामिन्यै नमः
,, सम्प्रदाययोगिन्यै नमः
,, सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
,, सर्वसम्पत्प्रदायै नमः
,, सर्वप्रियङ्कर्यै नमः
,, सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः
,, सर्वकामप्रदायै नमः
,, सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः
,, सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नमः
,, सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः
,, सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः
,, सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः
,, सर्वार्थसाधकचक्र-
स्वामिन्यै नमः

ऐंह्रींश्रीं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः
,, सर्वज्ञायै नमः
,, सर्वशक्त्यै नमः
,, सर्वैश्वर्यप्रदायै नमः
,, सर्वज्ञानमय्यै नमः
,, सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः
,, सर्वाधारस्वरूपायै नमः
,, सर्वपापहरायै नमः
,, सर्वानन्दमय्यै नमः
,, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
,, सर्वेप्सितप्रदायै नमः
,, सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः
,, निगर्भयोगिन्यै नमः
,, वशिन्यै नमः
,, कामेश्वर्यै नमः
,, मोदिन्यै नमः
,, विमलायै नमः
,, अरुणायै नमः
,, जयिन्यै नमः
,, सर्वेश्वर्यै नमः
,, कौलिन्यै नमः
,, सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः

ऐंह्रींश्रीं बाणिन्यै नमः
,, चापिन्यै नमः
,, पाशिन्यै नमः
,, अङ्कुशिन्यै नमः
,, महाकामेश्वर्यै नमः
,, महावज्रेश्वर्यै नमः
,, महाभगमालिन्यै नमः
,, महाश्रीसुन्दर्यै नमः
,, सर्वसिद्धिप्रदचक्र-
स्वामिन्यै नमः
,, अतिरहस्ययोगिन्यै नमः
,, श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै नमः
,, सर्वानन्दमयचक्र-
स्वामिन्यै नमः
,, परापररहस्ययोगिन्यै नमः
,, त्रिपुरायै नमः
,, त्रिपुरेश्यै नमः
,, त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
,, त्रिपुरवासिन्यै नमः
,, त्रिपुराश्रियै नमः
,, त्रिपुरमालिन्यै नमः
,, त्रिपुरासिद्धायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं त्रिपुराम्बमहात्रिपुर-
सुन्दर्यै नमः
,, महामहेश्वर्यै नमः
,, महामहाराज्ञ्यै नमः
,, महामहाशक्त्यै नमः
,, महामहागुप्तायै नमः
,, महामहाज्ञप्तायै नमः

ऐं ह्रीं श्रीं महामहानन्दायै नमः
,, महामहाशयायै नमः
,, महामहाश्रीचक्रनगर-
साम्राज्यै नमस्ते नमस्ते
,, नमस्ते स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं

श्रीपरदेवतार्पणमस्तु ।

इति चतुर्थ्यन्तखड्गमालामन्त्रः

(४)

अथ योग-पीठ-न्यासः

(तत्रांसद्वयोरुद्वयकल्पित-पादचतुष्टयं मुख-नाभि-पार्श्वद्वयकल्पित-गात्र-चतुष्टयं योगपीठं निजदेहे ध्यात्वा न्यसेत् ।)

(मूलाधारे)—ऐं ह्रीं श्रीं महाकालाय रक्तवर्णाय मण्डूकाधाराय नमः ।

(उपरि स्वाधिष्ठान-पर्यन्तं)—३ पञ्चवक्त्र-दशभुजाय रक्तकृष्णवर्ण-वाम-दक्षिणपार्श्वाय कालाग्निरुद्राय नमः ।

(तदुपरि नाभिपर्यन्तं)—३ बन्धूकरुचिरायै मूलप्रकृतये नमः ।

(तदुपरि हृदयपर्यन्तं)—३ शरच्चन्द्रप्रभायै पङ्कजद्वयधारिण्ये आधार-शक्तये नमः ।

(तदुपरि हृदय एव)—३ कूर्माय नमः । ३ अनन्ताय० । ३ वराहाय० । ३ पृथिव्यै० । अमृतार्णवाय० । ३ (अं आं इत्यादि-क्षान्तं मातृका-मुच्चार्य) नवखण्डविराजिताय नवरत्नमयद्वीपाय नमः ।

(तत्रैव नवखण्डेषु ईशानादिमध्यान्तं प्रादक्षिण्यक्रमेण नवरत्नानि न्यसेत्)—३ पुष्परागरत्नाय०, ३ नीलरत्नाय०, ३ वैडूर्यरत्नाय०, विद्रुमरत्नाय०, ३ मौक्तिकरत्नाय०, ३ मरकतरत्नाय०, ३ वज्ररत्नाय०, ३ गोमेदरत्नाय०, (मध्ये) ३ पद्मरागरत्नाय० ।

(तत्रैव)—३ सुवर्णपर्वताय०, ३ नन्दनोद्यानाय०, ३ कल्पकोद्यानाय० ।

(तत्रैव)—३ वसन्तादिषड्ऋतुभ्यो नमः । (पश्चिमे) ३ इन्द्रियाश्वेभ्यो नमः (पूर्वे) ३ इन्द्रियार्थगजेभ्यो०, ३ विचित्ररत्नभूमिकायै० ।

(तत्र पश्चिमादि-मध्यान्तं विलोमेन नव चक्राणि न्यसेत् ।) ३ कालचक्रेश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः । ३ मुद्राचक्रेश्वरी० । ३ मातृचक्रेश्वरी० । ३ रत्नचक्रेश्वरी० । ३ देशचक्रेश्वरी० । ३ गुरुचक्रेश्वरी० । ३ तत्त्वचक्रेश्वरी० । ३ ग्रहचक्रेश्वरी० । (मध्ये) ३ मूर्तिचक्रेश्वरी० । (३ कारणतोयपरिधये० । ३ माणिक्यमण्डपाय० । (तस्य नैर्ऋत्यादि कोणेषु)—३ देशरूपिणी शक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः । ३ कालरूपिणीशक्तिश्री० । ३ आकाररूपिणीशक्तिश्री० । ३ शब्दरूपिणीशक्तिश्री० । (मध्ये) ३ सङ्गीतयोगिनीरूपिणीशक्तिश्री० । (तन्मध्ये) ३ समस्तगुप्त-प्रकटयोगिनीशक्ति० (तन्मध्ये) ३ कल्पतरुभ्यो० । (तदधः) ३ रत्नवेदिकायै नमः, (तदुपरि) ३ श्वेतच्छत्राय नमः, (तस्याधः) ३ रत्नसिंहासनाय नमः ।

(एतत्सर्वं मानसपङ्कजे विन्यस्य यथायथं तत्तत्स्थानान्यध्यवस्य रत्नसिंहासनत्वेनात्मदेहं ध्यायेत् । तत्र सिंहासनदेवता न्यसेत् ।

(दक्षांसे)—३ रक्तवर्णाय ऋषभरूपाय धर्माय नमः ।

(वामांसे)—३ श्यामवर्णाय सिंहरूपाय ज्ञानाय नमः ।

(वामोरौ)—३ पीतवर्णाय भूताकाराय वैराग्याय नमः ।
(दक्षोरौ)—३ इन्द्रनीलप्रभाय गजरूपाय ऐश्वर्याय नमः ।
(एते सिंहासन-पादरूपिणः ।)
(मुखे)—३ अधर्माय० । (वामपार्श्वे)—३ अज्ञानाय० ।
(नाभौ)—३ अवैराग्याय० । (दक्षपार्श्वे)—३ अनैश्वर्याय० ।
(एते सिंहासनगात्ररूपिणः ।)
(मध्ये)—३ मायायै नमः । ३ विद्यायै० । (तदुपरि) ३ आनन्दकन्दाय० ।
३ संविन्नालाय० । ३ प्रकृतिमयपत्रेभ्यः० । ३ विकारमयकेसरेभ्यः० ।
३ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यसर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै नमः ।
(तस्यां)—३ अं सूर्यमण्डलाय नमः । ३ उं सोममण्डलाय० । ३ मं वह्नि-
मण्डलाय० । ३ सं सत्त्वाय० । ३ रं रजसे० । ३ तं तमसे० । ३ आं
आत्मने० । ३ अं अन्तरात्मने० । ३ पं परमात्मने० । ३ ह्रीं
ज्ञानात्मने० ।
(ततः केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च श्रीचक्राधारपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत् ।)
३ दूतर्यम्बाश्री० । ३ सुन्दर्यम्बाश्री० । ३ सुमुख्यम्बाश्री० । ३ विरू-
पाम्बाश्री० । ३ विमलाम्बाश्री० । ३ अन्तर्यम्बाश्री० । ३ बदर्यम्बाश्री० ।
३ पुरन्दर्यम्बाश्री० । (मध्ये कर्णिकायां) ३ पुष्पमर्दन्यम्बाश्री० ।
(एता वराभयधारिण्यो रक्तवर्णा ध्येयाः । तदुपरि—)
३ क्लीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः । (इति सिंहासनमन्त्रं विन्यस्य तदुपरि श्रीचक्रं ध्यात्वा) —
३ (मूलं) समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्ण निगर्भरहस्यातिरहस्य
परापराति रहस्ययोगिनी श्रीचक्रपादुकाभ्यो नमः

(इति व्यापकेन विन्यस्य, हृदि त्रिकोणं विभाव्य तन्मध्ये) ३ (मूलं) ॐ ह्रीं क्लीं भगवति ब्लूं नित्याकामेश्वरि स्त्रीं सर्वसत्त्ववशङ्करि सः त्रिपुरभैरवि, ऐं विच्चे ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्री० (इति विन्यस्य प्रणवादि नमोऽन्तं मूलविद्यां विन्यस्य श्रीचक्रं पुरत्रयात्मकं ध्यात्वा तत्रारोहणक्रमेण) ३ वाग्भवमुच्चार्य चतुरस्र-षोडशदलाष्ट दलात्मने शरीरात्मकाय प्रथमपुराय नमः (इति व्यापकं न्यसेत् । (ततः) ३ कामराजमुच्चार्य चतुर्दशारद्विदशारात्मने बुद्ध्यात्मकाय द्वितीयपुराय नमः । (इति व्यापकम्) ।

३ शक्तिकूटमुच्चार्याष्टार-त्रिकोण-बिन्दुचक्रात्मने प्राणात्मकाय तृतीयपुराय नमः (इति व्यापकम् विन्यस्य —)

४ इच्छाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्त्यादि समस्तत्रितयात्मने श्रीचक्रस्य पुरत्रयाय नमः (इत्यपि व्यापकम्) ।

(ततो) हृदयत्रिकोणस्याग्रादिकोणत्रयमपि पुरत्रयात्मकं वाग्भवादि-पुरत्रयात्मकं च ध्यात्वा, तत्र प्रणवादि-नमोऽन्तं वाग्भवादि कूटत्रयं न्यसेत् ।

(ततो) नादबिन्दुकलाज्येष्ठारौद्रीवामाविषघ्नीदूतरीसर्वानन्दाभ्यः श्रीचक्रस्य त्रैलोक्यमोहनादिनवचक्रशक्तिभ्यो नमः (इत्यनेन व्यापकं कुर्यात् ।)

(तत हृदयकमलकेसरेषु कामेश्वरीपीठस्य नव शक्तीर्न्यसेत् ।)

३ मोहिन्यै नमः । ३ क्षोभिण्यै० । ३ वशिन्यै० । ३ स्तम्भिन्यै० ।

३ आकर्षिण्यै० । ३ द्राविण्यै० । ३ आह्लादिन्यै० । ३ क्लिन्नायै० ।

(मध्ये) ३ क्लेदिन्यै नमः (इति विचिन्त्य, त्रिकोणमध्ये) ३ बालामूलं पञ्चदशीं चोच्चार्य, त्रिकोणरक्तवर्णोड्डियानपीठश्री० ।

(त्रिकोणाग्रे) ३ बालामूलयोर्वाग्भवद्वयमुच्चार्य चतुरस्रपीतवर्णकामरूप-पीठश्री० । (दक्षिण कोणे) ३ कामराज द्वयमर्धचन्द्रनिभश्वेतवर्णजालन्धर-पीठश्री० । (वामकोणे) ३ शक्तिबीजद्वयं षड्बिन्दुलाञ्छित-वृत्त-धूम्र-वर्णपूर्ण-गिरिपीठ श्री० । (इति पीठचतुष्टयं विन्यस्य, पुनर्बैन्दवे आग्नेयादि-कोणेषु) ३ लां ह्लां ब्रह्मणे पृथिव्यधिपतये नमो ब्रह्मप्रेतासनश्री० । ३ वां ह्वीं विष्णवेऽपामधिपतये नमो विष्णुप्रेतासनश्री० । ३ रां ह्रूं रुद्राय तेजोऽधिपतये नमो रुद्रप्रेतासनश्री० । ३ यां ह्यैं ईश्वराय वाय्वधिपतये ईश्वरप्रेतासनश्री० । ३ ह्सौः वियदधिपतये पञ्चवक्त्राय सदाशिवाय प्रेतपद्मासनाय नमः । सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनश्री० । (इति पञ्चप्रेतासनं न्यस्य, तदुपरि रक्तपद्मकर्णिकायां चतुरस्रगर्भित षट्कोणपीठे षडासनानि विन्यसेत् ।)

३ अं आं सौः त्रिपुरासुधार्णवासनाय नमः । ३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेश्वरीपोताम्बुजासनाय० । ३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय० । ३ हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नमः । ३ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्यसिद्धासनाय नमः (इति विन्यस्य, मध्ये चतुरस्रे चतुरासनं न्यसेत् ।)

(ऐशाने)—३ (वाग्भवद्वयमुच्चार्य) अग्निचक्रे कामगिर्यालये मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मक-रुद्रात्मक-शक्तिकामेश्वरीदेवी ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय नमः ।

(वायव्यकोणे)—३ (कामराजद्वयमुच्चार्य) सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठेशनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मविष्ठवात्मकशक्ति-श्रीवज्रेश्वरी हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नमः ।

(नैऋते)—३ शक्तिद्वयमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मशक्ति श्रीभगमालिनी-देवी ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय० ।

(आग्नेये)—३ (समस्तद्वयमुच्चार्य) ब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे श्रीचर्या-नाथात्मकतुर्यतुर्यातीतदशाधिष्ठायके परब्रह्मशक्त्यात्मकश्रीत्रिपुर-सुन्दरीदेवी ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीसाध्यसिद्धासनाय नमः ।

(मध्ये)—३ ऐं क्लीं सौः क १५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसर्वमन्त्रासनाय नमः ।

(इति विन्यस्य) ३ अं ५१ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामाया-काल-नियति-कलाविद्यारागपुरुषप्रकृतिबुद्ध्यऽहङ्कारमनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्रजिह्वा घ्राणवाक् पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाश-वायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या योगपीठासनाय नमः (इति व्यापकं कुर्यात् । ततो मूलमुच्चार्य)

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीश्री०

(इति षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मके देहमये महायोगपीठे निजष्टदेवतां हृदि न्यसेत् ।

"इति देहमये पीठे चिन्तयेत् परदेवताम् ।"

—श्रीविद्यार्णवे षष्ठः श्वासे ।

इति योगपीठन्यासः ।

५

श्रीमहागणपति-महामन्त्र-जपविधिः

विनियोगः—

अस्य श्रीमहागणपति-महामन्त्रस्य गणक-ऋषिः, निचृद्गायत्री-छन्दः महागणपतिर्देवता श्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं सिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

ऋष्यादि न्यासः

गणकऋषये नमः (शिरसि), निचृद्गायत्रीछन्दसे नमः (मुखे), महागणपतिदेवतायै नमः (हृदये) श्रीं बीजाय नमः (गुह्ये), ह्रीं शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ), विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

कर-षडङ्ग-न्यासौ

		(प्रथमवारम्)		(द्वितीयवारम्)
श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां।		अङ्गुष्ठाभ्यां	नमः।	हृदयाय नमः।
३	श्रीं गीं।	तर्जनीभ्यां	नमः।	शिरसे स्वाहा।
३	ह्रीं गूं।	मध्यमाभ्यां	नमः।	शिखायै वषट्।
३	क्लीं गैं।	अनामिकाभ्यां	नमः।	कवचाय हुम्।
३	ग्लौं गौं।	कनिष्ठिकाभ्यां	नमः।	नेत्रत्रयाय वौषट्।
३	गं गः।	करतल करपृष्ठाभ्यां	नमः।	अस्त्राय फट्।

'भूर्भुवः स्वरोम्'—इति दिग्बन्धः।

ध्यानम्—

बीजापूर-गदेक्षुकार्मुकरुजा चन्द्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाण-रत्नकलश-प्रोद्यत्कराम्भोरुहः।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्ति-विपत्ति-संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः॥

मूलमन्त्रजपः— ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा।

---

१. यथाधिकारं पात्रासादनपूर्वकमावरणपूजादिकं "श्रीविद्यारत्नाकरे" द्रष्टव्यम्।

जपनिवेदनम्— गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवः त्वत्प्रसादाद् गणेश्वर ॥

सहस्रनामार्चन-फलप्रद-सिद्धलक्ष्मीसहित महागणपतेः—

एकविंशति-नामार्चनम्

१. गं	गणञ्जयाय	नमः
२. गं	गणपतये	नमः
३. गं	हेरम्बाय	नमः
४. गं	धरणीधराय	नमः
५. गं	महागणपतये	नमः
६. गं	लक्षप्रदाय	नमः
७. गं	क्षिप्रप्रसादनाय	नमः
८. गं	अमोघसिद्धये	नमः
९. गं	अमिताय	नमः
१०. गं	मन्त्राय	नमः
११. गं	चिन्तामणये	नमः
१२. गं	निधये	नमः
१३. गं	सुमङ्गलाय	नमः
१४. गं	बीजाय	नमः
१५. गं	आशापूरकाय	नमः
१६. गं	वरदाय	नमः
१७. गं	शिवाय	नमः
१८. गं	काश्यपाय	नमः
१९. गं	नन्दनाय	नमः
२०. गं	वाचासिद्धाय	नमः

२१. गं ढुण्ढिविनायकाय नमः ।

प्रार्थना-स्तोत्रम्

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

नमो नमः सुरवरपूजिताङ्घ्रये, नमो नमो निरुपममङ्गलात्मने ।
नमो नमो विपुलपदैकसिद्धये, नमो नमः करिकलभाननाय ते ॥

६

श्री बालात्रिपुरसुन्दरी-वरिवस्या

प्रातः कृत्यादि-मातृकान्यासान्तं कर्म विधाय (त्रितारीस्थाने बाला-मन्त्रयोजनम्) । ततः पीठन्यासं कुर्यात् । तं च मूलाधारे 'मण्डूकाय नमः' इत्यारभ्य 'ह्रीं ज्ञानात्मने नम' इत्यन्तं योगपीठन्यासोक्तरीत्या विधाय हृत्पद्मस्य पूर्वादि केसरेषु—

ऐं क्लीं सौः इच्छायै नमः	३ कामदायिन्यै नमः
३ ज्ञानायै ,,	३ रत्यै ,,
३ क्रियायै ,,	३ रतिप्रियायै ,,
३ कामिन्यै ,,	३ नन्दायै ,,

(मध्ये) ३ मनोन्मन्यै नमः ।

तदुपरि —

३ परायै नमः ३ अपरायै नमः ३ परापरायै नमः

सदाशिव-महाप्रेतपद्मासनाय नमः

इति विन्यस्य 'ऋष्यादि-न्यासं' कुर्यात् । यथा—दक्षिणामूर्तिऋषये नमः (शिरसि), पङ्क्तिच्छन्दसे नमः (मुखे), बालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमः (हृदये), ऐं बीजाय नमः (गुह्ये), सौः शक्तये नमः (पादयोः), क्लीं कीलकाय नमः (नाभौ) विनियोगाय नमः (करसम्पुटे) ।

कर-न्यासः

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ऐं अनामिकाभ्यां नमः ।
क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
सौः मध्यमाभ्यां नमः । सौः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि न्यासः

ऐं हृदयाय नमः । ऐं कवचाय हुम् ।
क्लीं शिरसे स्वाहा । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।
सौः शिखायै वषट् । सौः अस्त्राय फट् ।

बीज-न्यासः

(नाभ्यादि-चरणपर्यन्तं) ऐं नमः (हृदयान्नाभिपर्यन्तं) क्लीं नमः ।
(शिरसो हृदयान्तं) सौः नमः (दक्षिणकरे) ऐं नमः ।
(वामकरे) क्लीं नमः (उभयकरयोः) सौः नमः ।
(मूर्ध्नि) ऐं नमः (मूलाधारे) क्लीं नमः ।
(हृदि) सौः नमः । (इति विन्यसेत् ।)

ततो नवयोनिन्यासः

ऐं (दक्षकर्णे), क्लीं (वामकर्णे), सौः (चिबुके),
ऐं (दक्षशङ्खे), क्लीं (वामशङ्खे), सौः (वदने),
ऐं (दक्षनेत्रे), क्लीं (वामनेत्रे), सौः (नासिकायाम्)
ऐं (दक्षांसे), क्लीं (वामांसे), सौः (जठरे),
ऐं (दक्षकूर्परे), क्लीं (वामकूर्परे), सौः (कुक्षौ),
ऐं (दक्षजानुनि), क्लीं (वामजानुनि), सौः (लिङ्गे),
ऐं (दक्षपादे), क्लीं (वामपादे), सौः (गुह्ये),

ऐं (दक्षपार्श्वे), क्लीं (वामपार्श्वे), सौः (हृदि),
ऐं (दक्षस्तने), क्लीं (वामस्तने), सौः (कण्ठे)।

अथ रत्यादिन्यासः

ऐं रत्यै नमः (मूलाधारे)। सौः अमृतेश्यै नमः (पुनर्भ्रूमध्ये)
क्लीं प्रीत्यै नमः (हृदि)। क्लीं योगेश्यै नमः (हृदि)
सौः मनोन्मन्यै नमः (भ्रूमध्ये)। ऐं विश्वयोन्यै नमः (मूलाधारे)

अथ मूर्तिन्यासः

ऐं ईशान-मनोभवाय नमः (मूर्ध्नि),
क्लीं तत्पुरुष-मकरध्वजाय नमः (वक्त्रे),
सौः अघोर-कन्दर्पकुमाराय नमः (हृदि),
ऐं वामदेव-मन्मथाय नमः (गुह्ये),
क्लीं सद्योजात-कामदेवाय नमः (पादयोः),

ततो बाणन्यासः

द्रां द्राविण्यै नमः (अङ्गुष्ठयोः)। द्रीं क्षोभिण्यै नमः (तर्जन्योः)। क्लीं वशीकरिण्यै नमः (मध्यमयोः)। ब्लूं आकर्षिण्यै नमः (अनामिकयो) सः उन्मादिन्यै नमः (कनिष्ठिकयोः)। तथा च—

ह्रीं कामाय नमः। क्लीं मन्मथाय नमः। ऐं कन्दर्पाय नमः। ब्लूं मकरध्वजाय नमः। स्त्रीं मीनकेतनाय नमः (इति सबीजकामपञ्चकमपि पञ्चाङ्गुलिषु न्यसेत्।)

पुनर्बालामन्त्रस्य कराङ्गन्यासौ विधाय—

ततः पञ्चाङ्गेषु बाणन्यासः

द्रां द्राविण्यै नमः (मूर्ध्नि) द्रीं क्षोभिण्यै नमः (पादयोः)।

क्लीं वशीकरिण्यै नमः (वक्त्रे) । ब्लूं आकर्षिण्यै नमः (गुह्ये) । सः उन्मादिन्यै नमः (हृदि) । तथा चैतेष्वे व स्थानेषु—

ह्रीं कामाय नमः । क्लीं मन्मथाय नमः । ऐं कन्दर्पाय नमः ।

ब्लूं मकरध्वजाय नमः । स्त्रीं मीनकेतनाय नमः ।

इति सबीजं काम-पञ्चकं न्यसेत् ।

अथ सुभगादि-न्यासः

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः सुभगायै नमः (भाले) । ५ भगायै नमः (भ्रूमध्ये) । ५ भगसर्पिण्यै नमः (वदने) । ५ भगमालिन्यै नमः (लम्बिकायां) । ५ अनङ्गायै नमः (कण्ठे) । ५ अनङ्गकुसुमायै नमः (हृदि) । ५ अनङ्गमेखलायै नमः (नाभौ) । ५ अनङ्गमदनायै नमः (उपस्थ-मूले) । इति न्यसेत् ।

अथ भूषणन्यासः

शिरसि	अं	नमः ।	वामगण्डे	एं	,, ।
भाले	आं	,, ।	ऊर्ध्वोष्ठे	ऐं	,, ।
दक्षभ्रुवि	इं	,, ।	अधरोष्ठे	ओं	,, ।
वामभ्रुवि	ईं	,, ।	ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ	औं	,, ।
दक्षकर्णे	उं	,, ।	अधोदन्तपङ्क्तौ	अं	,, ।
वामकर्णे	ऊं	,, ।	मुखे	अः	,, ।
दक्षनेत्रे	ऋं	,, ।	चिबुके	कं	,, ।
वामनेत्रे	ॠं	,, ।	गले	खं	,, ।
नासिकायां	ऌं	,, ।	कण्ठे	गं	,, ।
दक्षगण्डे	ॡं	,, ।	दक्षपार्श्वे	घं	,, ।

वामपार्श्वे	ङं	,, ।	वामजानुनि	पं	,, ।
दक्षस्तने	चं	,, ।	दक्षजङ्घायां	फं	,, ।
वामस्तने	छं	,, ।	वामजङ्घायां	बं	,, ।
दक्षबाहूमूले	जं	,, ।	दक्षस्फिचि	भं	,, ।
वामबाहुमूले	झं	,, ।	वामस्फिचि	मं	,, ।
दक्षकूर्परे	ञं	,, ।	पादतलयोः	यं	,, ।
वामकूर्परे	टं	,, ।	चरणाङ्गुष्ठयोः	रं	,, ।
दक्षकरे	ठं	,, ।	काञ्च्यां	वं	,, ।
वामकरे	डं	,, ।	ग्रीवायां	लं	,, ।
दक्षकरपृष्ठे	ढं	,, ।	कटके	ळं	,, ।
वामकरपृष्ठे	णं	,, ।	हृदि	षं	,, ।
नाभौ	तं	,, ।	गुह्ये	क्षं	,, ।
गुह्ये	थं	,, ।	दक्षकर्णकुण्डले	सं	,, ।
दक्षोरौ	दं	,, ।	वामकर्णकुण्डले	शं	,, ।
वामोरौ	धं	,, ।	मोलौ	•	,, ।
दक्षजानुनि	नं	,, ।			

ततस्त्रिखण्डां बद्ध्वा ध्यायेत्

अरुण-किरणजाले रञ्जिता साऽवकाशा,
विधृत-जपवटीका पुस्तकाभीति-हस्ता ।
इतर-कर-वराढ्या फुल्ल-कह्लार-संस्था,
निवसतु हृदि बाला नित्य-कल्याणशीला ॥

ततो मानसोपचारैः सम्पूजयेत् ।

अथावरणार्चनम्

(श्रीक्रमानुसारेण बालामन्त्रपूर्वकं पात्रासादनमथवा वर्धनी-शङ्ख-पाद्यार्घ्याचमनीयपात्राणि संस्थाप्य—)

पद्मं वसुदलोपेतं नवयोन्याढ्य-कर्णिकम् ।
चतुर्द्वार-समायुक्तं भूगृहं विलिखेत् ततः ॥

(इत्यनुसारमष्टदल-नवयोनि-चतुर्द्वारयुक्तभूपूर-समन्वितं रत्न-स्फटिक-सुवर्ण-रजतादि-विनिर्मितं बालायन्त्रं प्रतिष्ठाप्य, योगपीठन्यासे प्रतिपादितम्-'आधार-शक्त्यादि-ह्रीं ज्ञानात्मने नम' इत्यन्तं पुष्पाक्षतैः सम्पूज्य पूर्वादि-केसरेषु मध्ये च—)

ऐं इच्छायै नमः ऐं ज्ञानायै नमः ऐं क्रियायै नमः ।
ऐं कामिन्यै नमः ऐं कामदायिन्यै नमः ऐं रत्यै नमः ।
ऐं रतिप्रियायै नमः ऐं नन्दायै नमः ऐं नवम्यै नमः ।
ऐं मनोन्मन्यै नमः ऐं परायै नमः ऐं अपरायै नमः ।
ऐं परापरायै नमः ह्सौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः ।

(इति सम्पूजयेत् । ततः योनि-मध्ययोन्योरन्तराले श्रीक्रमोक्तगुरु-मण्डलं तदशक्तौ—)

ऐं गुरुभ्यो नमः । ऐं गुरुपादुकाभ्यो नमः । ऐं परमगुरुभ्यो नमः ।
ऐं परमगुरुपादुकाभ्यो नमः । ऐं परापरगुरुभ्यो नमः ।
ऐं परापरगुरुपादुकाभ्यो नमः । ऐं परमेष्ठिगुरुभ्यो नमः ।
ऐं परमेष्ठिगुरुपादुकाभ्यो नमः ऐं आचार्येभ्यो नमः ।
ऐं आचार्यपादुकाभ्यो नमः ।

(इति सम्पूज्य—)

ऐं क्लीं सौः 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह्सौः'

(इति मन्त्रेण चक्रे मूर्ति सङ्कल्प्य त्रिखण्डामुद्रयादेवीं ध्यात्वा—)

देवेशि भक्तिसुलभे परिवार-समन्विते ।

यावत् त्वां पूजयिष्यामि तावत् त्वं सुस्थिरा भव ॥

इत्यादिनाऽऽवाहयेत् । तत आवाहनादि-षोडशोपचारैर्यथासम्भवोपचारैर्वा पूजयित्वाऽऽवरणपूजामारभेत । यथा —

ऐं क्लीं सौः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुकां पूजयामि नमः[1] (इति मध्ये त्रिवारं पुष्पाक्षतैः सम्पूज्य—)

देव्यङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च षडङ्गार्चनं विदध्यात् (यथा—)

ऐं क्लीं सौः ऐं हृदयाय नमः	। हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
३ क्लीं शिरसे स्वाहा	। शिरःशक्ति श्रीपादुकां ,, ।
३ सौः शिखायै वषट्	। शिखाशक्ति श्रीपादुकां ,, ।
३ ऐं कवचाय हुं	। कवचशक्ति श्रीपादुकां ,, ।
३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्	। नेत्रशक्ति श्रीपादुकां ,, ।
३ सौः अस्त्राय फट्	। अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां ,, ।

मध्ये त्रिकोणं विभाव्य—

वामकोणे—	३ ऐं रत्यै नमः	रति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
दक्षिणकोणे—	३ क्लीं प्रीत्यै नमः	प्रीति श्रीपादुकां ,, ।
अग्रे—	३ सौः मनोभवाय नमः	मनोभव श्रीपादुकां ,, ।

---

१. पात्रासादने विशेषार्घ्य-सम्पादकैस्तर्पयामीति पदेन तर्पणमपि कार्यम् ।

ततः केसरेष्वग्नीशासुरवायव्यमध्ये दिक्षु च—

३ इच्छायै नमः। इच्छा श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ ज्ञानायै ,,। ज्ञाना ,, ,, ।
३ क्रियायै ,,। क्रिया ,, ,, ।
३ कामिन्यै ,,। कामिनी ,, ,, ।
३ कामदायिन्यै ,,। कामदायिनी ,, ,, ।
३ रत्यै ,,। रति ,, ,, ।
३ रतिप्रियायै ,,। रतिप्रिया ,, ,, ।
३ नन्दायै ,,। नन्दा ,, ,, ।
३ नवम्यै ,,। नवमी ,, ,, ।
३ मनोन्मन्यै ,,। मनोन्मनी ,, ,, ।

ततः पञ्चबाणान् पञ्चकामांश्च त्रिकोणबाह्येऽन्तराले उत्तर-दक्षिण-पार्श्वद्वये द्वयं द्वयम् अग्रे चैकमिति क्रमेण पूजयेत्। यथा—

उत्तरे— ३ द्रां द्राविण्यै नमः। द्राविणी श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ द्रीं क्षोभिण्यै ,,। क्षोभिणी ,, ,, ।
दक्षिणे—३ क्लीं वशीकरिण्यै ,,। वशीकरिणी ,, ,, ।
३ ब्लूं आकर्षिण्यै ,,। आकर्षिणी ,, ,, ।
अग्रे ३ सः सम्मोहिन्यै ,,। सम्मोहिनी ,, ,, ।
उत्तरे— ३ ह्रीं कामाय नमः। काम श्रीपादुकां पूजयामि नमः।
३ क्लीं मन्मथाय ,,। मन्मथ ,, ,, ।
दक्षिणे—३ ऐं कन्दर्पाय ,,। कन्दर्प ,, ,, ।
३ ब्लूं मकरध्वजाय ,,। मकरध्वज ,, ,, ।
अग्रे— ३ स्त्रीं मीनकेतनाय ,,। मीनकेतन ,, ,, ।

ततोऽष्टयोनिषु पूर्वादि-प्रादक्षिण्येन —

ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं सः	सुभगायै	नमः ।	सुभगा	श्रीपादुकां	पूजयामि	नमः ।
५	भगायै	,, ।	भगा	,,	,,	।
५	भगसर्पिण्यै	,, ।	भगसर्पिणी	,,	,,	।
५	भगमालिन्यै	,, ।	भगमालिनी	,,	,,	।
५	अनङ्गायै	,, ।	अनङ्गा	,,	,,	।
५	अनङ्गकुसुमायै	,, ।	अनङ्गकुसुमा	,,	,,	।
५	अनङ्गमेखलायै	,, ।	अनङ्गमेखला	,,	,,	।
५	अनङ्गमदनायै	,, ।	अनङ्गमदना	,,	,,	।

ततोऽष्टपत्रेषु पूर्वादि —

३ असिताङ्ग-ब्राह्मीभ्यां	नमः ।	असिताङ्ग-ब्राह्मीश्रीपादुकां	पूजयामि	नमः	।
३ रुरु-माहेश्वरीभ्यां	,, ।	रुरु-माहेश्वरी	,,	,,	।
३ चण्ड-कौमारीभ्यां	,, ।	चण्ड कौमारी	,,	,,	।
३ क्रोध-वैष्णवीभ्यां	,, ।	क्रोध-वैष्णवी	,,	,,	।
३ उन्मत्त-वाराहीभ्यां	,, ।	उन्मत्त-वाराही	,,	,,	।
३ कपालीन्द्राणीभ्यां	,, ।	कपालीन्द्राणी	,,	,,	।
३ भीषणचामुण्डाभ्यां	,, ।	भीषण-चामुण्डा	,,	,,	।
३ संहार-महालक्ष्मीभ्यां	,, ।	संहार-महालक्ष्मी	,,	,,	।

ततस्तद्बहि चतुरस्रस्य रेखायां प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण—

ऐं क्लीं सौः लां इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय
सपरिवाराय नमः । इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।

३ रां अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय
सपरिवाराय नमः । अग्निश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ टां यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय
सपरिवाराय नमः । यमश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ क्षां निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय
सपरिवाराय नमः । निर्ऋतिश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ वां वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय
सपरिवाराय नमः । वरुणश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ यां वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय
सपरिवाराय नमः । वायुश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ सां सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय
सपरिवाराय नमः । सोमश्रीपादुकां पू० नमः ।

३ हां ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहनाय
सपरिवाराय नमः । ईशानश्रीपादुकां पू० नमः ।

इत्यावरणं विधाय श्रीक्रमोक्तविधानेन धूप-दीप-नैवेद्य नीराजनपुष्पाञ्जलिप्रभृतिकर्माणि निर्वर्तयेत् । ततः सर्वविघ्नकृद्भूतबलिं विदध्यात् ।

अत्र केचन बलिचतुष्टयमपि प्रतिपादयन्ति, तद् यथोपदेशं कुर्यात् । ततो मूलमन्त्रस्य जपं विधाय स्तोत्रादि-पारायणं कुर्यात् ।

अस्य बाला-मन्त्रस्य पुरश्चरणं द्वादशलक्षजपः । होमस्तु पलाशपुष्पैर्द्वादशसहस्रकम् । एवमेव त्रिपुरभैरवीपूजनमपि ।

'यथाऽसौ त्रिपुरा बाला तथा त्रिपुरभैरवी' ति ।[1]

समाप्तेयं बालात्रिपुरसुन्दरी वरिवस्या

---

१. एतत् सर्वं गुरुमुखादवगम्यैवानुष्ठानं श्रेयस्करं भवति ।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी-मानसपूजास्तोत्रम्

श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्यविरचितम्

उषसि मागधमङ्गलगायनैर्झटिति जागृहि जागृहि जागृहि ।
अतिकृपार्द्रकटाक्षनिरीक्षणैर्जगदिदं जगदम्ब सुखीकुरु ॥१॥
कनकमयवितर्दिशोभमानं दिशि-दिशि पूर्णसुवर्णकुम्भयुक्तम् ।
मणिमयमण्डपमध्यमेहि मातर्मयि कृपया हि समर्चनं गृहीतुम् ॥२॥
कनककलशशोभमानशीर्षं जलधरचुम्बिसमुल्लसत्पताकम् ।
भगवति तव सन्निवासहेतोर्मणिमयमन्दिरमेतदर्पयामि ॥३॥
तपनीयमयी सतूलिका कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा ।
नवरत्नविभूषिता मया शिविकेयं जगदम्ब तेऽर्पिता ॥४॥

कनकमयवितर्दिस्थापिते तूलिकाढ्ये-
विविधकुसुमकीर्णे कोटिबालार्कवर्णे ।
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मिन्-
उपविश पदयुग्मं हेमपीठे निधेहि ॥५॥

मणिमयमौक्तिकनिर्मितं महान्तं कनकस्तम्भचतुष्टयेन युक्तम् ।
कमनीयतमं भवानि तुभ्यं नवमुल्लोचमहं समर्पयामि ॥६॥
दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् ।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मात ! ॥७॥
गन्धपुष्पयवसर्षपदूर्वासम्मितं तिलकुशाक्षतमिश्रम् ।
हेमपात्रनिहितं सह रत्नैरर्घ्यमेतदुररीकुरुमातः ! ॥८॥

जलजद्युतिनाकरेण जातीफलकङ्कोललवङ्गगन्धयुक्तैः ।
अमृतैरमृतैरिवाहृतैर्भगवत्याचमनं विधीयताम् ॥९॥
निहितः कनकस्य सम्पुटे पिहितो रत्नपिधानकेन सः ।
तदयं भवतीकरेऽर्पितो मधुपर्को भवति प्रगृह्यताम् ॥१०॥
एतच्चम्पकतैलमेव विविधैर्पुष्पैर्मुहुर्वासितम्
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृङ्गैर्भ्रमद्भिर्वृतम् ।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरभितो हस्ते धृतं यन्मया
केशेषु भ्रमरप्रभेषु सकलेष्वङ्गेषु चालिप्यताम् ॥११॥
मातःकुङ्कुमपङ्कनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनम्
भक्त्याऽहङ्कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केशरम् ।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकाद्यन्वितम्
स्नानं ते नवरत्नकुम्भसहितैः संवासितोष्णोदकैः ॥१२॥
दधिदुग्धघृतैः समाक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः ।
स्नपयामि तवाहमादृतो जननि ! त्वां पुनरुष्णवारिभिः ॥१३॥
एलोशीरसुवासितैः सुकुसुमैर्गङ्गादितीर्थोदकै-
र्माणिक्यामलमौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः ।
मन्त्रान् वैदिकतान्त्रिकान् परिपठन् सानन्दमत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमङ्गीकुरु ॥१४॥
बालार्कद्युतिदाडिमीयकुसुमप्रस्पर्धि सर्वोत्तमं
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम् ।
मुक्ताभिर्ग्रथितं सकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम्
तप्तस्वर्णसमानवर्णबहुलं प्रावर्णमङ्गीकुरु ॥१५॥

नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके-
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि ! तयोर्निधीयताम् ॥१६॥

बहुभिरगुरुधूपैः सादरं धूपयित्वा ।
भगवति ! तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिरविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा
झटिति कनकसूत्रैर्जूटमावेष्टयामि ॥१७॥

सौवीराञ्जनमिदमम्ब ! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत् ।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय ॥१८॥

मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरे विन्यस्य काञ्चीं कटौ
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले ।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीः करेषु क्रमात्
ताटङ्के तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूड़ामणिम् ॥१९॥

धम्मिल्ले तव देवि हेमकुसुमान्याधाय भालस्थले
मुक्ताराजिविराजिहेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम् ।
मातर्मौक्तिकजालिकाञ्च कुचयोः सर्वाङ्गुलीषूर्मिकाः
कट्यां काञ्चनकिङ्किणीर्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ ॥२०॥

मातर्भालतले तवातिविमले काश्मीरकस्तूरिका
कर्पूरागुरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः ।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसै- सितकाञ्चपुष्पद्रवैः
पादौ कुङ्कुमलेपनादिभिरहं सम्पूजयामि क्रमात् ॥२१॥

रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैश्चारुरुचैर्विचित्रैः ।
अखण्डितैर्देवि ! यवादिभिर्वा काश्मीरपङ्काङ्किततण्डुलैर्वा ॥२२॥

जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमम् सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम् ॥२३॥

सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत्
सिन्दूरं मे हृदयकमले देवि हर्षं तनोतु ।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिता यस्य कान्ति-
रन्तर्ध्वान्तं हरतु सकलं चेतसा चिन्तयामि ॥२४॥

मन्दारकुन्दकरवीरलवङ्गपुष्पै-
स्त्वां देवि सन्ततमहं परिपूजयामि ।
जातीजपावकुलचम्पककेतकादि-
नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि ॥२५॥

मालतीबकुलहेमपुष्पिकाकाञ्चनारकरवीरचम्पकैः ।
कर्णिकारगिरिकर्णिकादिभिः पूजयामि जगदम्ब ते वपुः ॥२६॥

पारिजातशतपत्रपाटलैर्मल्लिकाबकुलचम्पकादिभिः ।
अम्बुजैश्च कुसुमैश्च सादरं पूजयामि जगदम्ब ! ते वपुः ॥२७॥

लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवाससम्मिश्रितैः
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषालोडितैः ।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलुप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः
धूपं ते परिकल्पयामि जननि ! त्वं धूपमङ्गीकुरु ॥२८॥

रत्नालङ्कृतहेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितै
र्दीपैर्दीर्घतरान्धकारभिदुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः ।
आताम्रज्ज्वलदुज्ज्वलज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः ॥२९॥

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्-
डमरुसदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान् ॥
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै-
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारात्रिकन्ते ॥३०॥
सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां-
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य ।
मुखकमलसमीपे तेऽम्बसार्धंत्रिवारं-
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः ॥३१॥
मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसन्तानकान्-
सूपापूपसिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्ररभाफलैः ।
एलाजीरकहिङ्गुनागरनिशाकौस्तुम्बरीसंयुतैः-
शाकैःसाकमहं सुधाधिकरसैः सन्तर्पयाम्यर्पयन् ॥३२॥
सापूपसूपदधिदुग्धसिताघृतानि
सुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरःसराणि ।
साकोल्लसन्मरिचजीरकवल्लिकानि
भक्ष्याणि भुङ्क्ष्व जगदम्ब मयार्पितानि ॥३३॥
क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥३४॥
उष्णोदकैः पाणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥३५॥
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम् ।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गंगामृतमम्ब पीयताम् ॥३६॥

आताम्ररम्भाफलसंयुतानि द्राक्षाफलाक्षोटसमन्वितानि ।
सबीजपूराणि सदाडिमानि फलानि ते देवि ! समर्पयामि ॥ ३८॥

कर्पूरेण युतैर्लवङ्गसहितैःकङ्कोलचूर्णान्वितैः
सुस्वादुक्रमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजातीफलैः ।
मातः ! केतकिपत्रपाडुरुचिरैस्ताम्बूलवल्लीदलैः
सानन्दं मुखमण्डनार्थमतुलं ताम्बूलमङ्गीकुरु ॥ ३९॥

एलालवङ्गादिसमन्वितानि कङ्कोलकर्पूरविमिश्रितानि ।
ताम्बूलवल्लीदलसंयुतानि फलानि ते देवि समर्पितानि ॥४०॥

ताम्बूलवल्लीदलनिर्जितहेमवर्ण-
स्वर्णाक्तपूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम् ।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं
ताम्बूलमम्ब वदनाम्बुरुहे ! गृहाण ॥४१॥

अथ बहु मणमिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य-
त्रिभुवनकमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः ।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां-
जननि कनकवृष्टि दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥४२॥

मातः काञ्चनदण्डमण्डितमिदं पूर्णेन्दुविम्बप्रभं-
नानारत्नविशोभिहेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम् ॥
भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतं-
छत्रन्ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् ॥४३॥

शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णैर्मणियुक्तैर्विलसत्सुवर्णदण्डैः ।
जगदम्ब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण बीजयामि ॥४४॥

मार्त्तण्डमण्डलनिभो जगदम्ब ! योऽयं-
भक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते ।
पूर्णेन्दुबिम्बरुचिरं वदनं स्वकीय-
मस्मिन् विलोकय विलोलविलोचने त्वम् ॥४५॥
इन्द्रादयो नतिनतैर्मुकुटप्रदीपै-
र्नीराजयन्ति सततं तव पादपीठम् ।
तस्मादहं तव शरीरमशेषमेतन्-
नीराजयामि जगदम्ब सहस्रदीपैः ॥४६॥
प्रियगतिरतितुङ्गो रत्नपल्लाणयुक्तः-
कनकमयविभूषःस्निग्धगम्भीरघोषः ।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते-
तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरङ्गः ॥४७॥
मधुकरवृतकुम्भो न्यस्तसिन्दूररेणुः-
कनककलितघण्टः किङ्किणीशोभिकण्ठः ।
श्रवणयुगलचञ्चच्चामरो मेघतुल्यो-
जननि तव मुदे स्यान्मत्तमातङ्ग एषः ॥४८॥
द्रुततरतुरगैर्विराजमानं, मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ।
कनकमयमहं वितानवन्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ॥४९॥
हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुन्दुभिमेघनादयुक्तम् ।
अभिनवचतुरङ्गसैन्यमेतत् भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ॥५०॥
परिधिकृतसप्तसागरं बहुसम्पत्सहितं मयाम्ब ते ।
विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबलं दुर्गमिदं समर्पितम् ॥५१॥

शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः ।
भ्रमरीमुखरीकृतैरनेकैर्व्यजनैस्त्वां जगदम्ब बीजयामि ॥५२॥
भ्रमविलुलितलोलकुन्तलालिविगलितमाल्यविकीर्णरङ्गभूमिः ।
इयमतिचतुरा नटी नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः ! ॥५३॥
मुखचलनविलासलोलवेणीविलसितनिर्णितलोलभृङ्गमालाः ।
युवजनसुखकारिचारुलीला भगवति ! ते पुरतो नटन्ति बालाः ॥५४॥

रुचिरकुचतटीनां नाट्यकाले नटीनां-
प्रतिगृहमथ तत्र प्रत्यहं प्रादुरासीत् ।
धिमिक धिमिकि धिद्धी धिद्धि धिद्धेति धिद्ध-
धिकिति धिकिति तत्थै त्थै यथेथेति शब्दः ॥५५॥

भ्रमदलिकुलतुल्यालोलधम्मिल्लभारास्मितमुखकमलोद्यद्दिव्यलावण्यपूरा ।
अभिनवनववेषा वारयोषा नटन्ती परभृतकलकण्ठी देवि मोदन्तनोतु ॥५६॥
डमरुडिण्डिमझर्झरझल्लरी मृदुरवार्द्रघटार्द्रघटादयः ।
झटितिझङ्कृतिभिर्जगम्बिके बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते ॥५७॥

विपञ्चीषु सप्तस्वरान् वादयन्त्य-
स्तव द्वारि गायन्ति गन्धर्वकन्याः ।
क्षणं सावधानेन चित्तेन मातः-
समाकर्णय त्वं मया प्रार्थिताऽसि ॥५८॥

अतिशयकमनीयैर्नर्त्तनैर्नर्त्तकीनां-
झटिति च रमयित्वा चेत एवं त्वदीयम् ।
स्वयमहमपि चित्रैर्नृत्यवादित्रगीतै-
र्भगवति भवदीयं मानसं रञ्जयामि ॥५९॥

तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादयः ।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्त्तुमीश्वरः ॥६०॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलन्ददाति ।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि ॥६१॥
रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम् ।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानीपदपङ्कजाभ्याम् ॥६२॥

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा-
कनककमलमालां कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ॥
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते-
हृदयेकमलमध्ये देवि हर्षन्तनोतु ॥६३॥

अथ मणिमयमञ्चकाभिरामे द्युतिमतिपुष्पवितानराजमाने ।
प्रसरदगुरुधूपितेऽस्मिन् भगवति वासगृहेऽस्तु ते निवासः ॥६४॥
एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रैलोक्याभयवरदौ निधाय पादौ ।
विस्तीर्णे मृदुलतरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्के कनकमये निषीद मातः ॥६५॥
तव देवि सरोजचिह्नयोः पदयोर्निर्जितपद्मरागयोः ।
अतिरक्ततरैरलक्तकैः पुनरुक्तां रचयामि रक्तताम् ॥६६॥
अथ मातरुशीरवासितं निजताम्बूलरसेन राजितम् ।
तपनीयमये हि पात्रके मुखगण्डूषजलं विधीयताम् ॥६७॥
क्षणमथ जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुतरतूलिकया विराजमाने ।
अतिमहति मुदा निजेच्छया त्वं सुखशयनं कुरु मां हृदि स्मरन्ती ॥६८॥
मुक्ताकुदेन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटङ्कयुक्ता-
मक्षस्रक्पुष्तहस्तामभयवरकरां चन्द्रचूडां त्रिनेत्राम् ।

नानालङ्कारयुक्तां सुरमुकुटलसद्द्योतितस्वर्णपीठां,
सानन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवनजननीं चेतसा चिन्तयामि ॥६९॥

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा-
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलां मेऽपराधान् क्षमस्व ।
न्यूनं यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दम्मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्यं निवासः ॥

पूजामिमां पठेत् प्राज्ञः पूजाकर्तुमनीश्वरः ।
पूजाफलमवाप्नोति वाञ्छितार्थांश्च विन्दति ।
प्रत्यहं भक्तियुक्तो यो देविपूजामिमां पठेत् ।
वाग्वादिन्याः प्रसादेन वत्सरात्स कविर्भवेत् ॥

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

(८)

आतुर-सूतकाद्यवस्थायां किं कर्तव्यता—

आतुरी सौतिकी चैव त्रासी दौर्बोधिकी तथा ।
साधना भाविनी चेति पञ्चधा भिद्यते पुनः ॥ १ ॥
यदि लङ्घनपर्यन्तो व्याधिरात्मनि दृश्यते ।
तदा पूजा न कर्तव्या स्थण्डिले प्रतिमासु च ॥ २ ॥
न स्नानं दन्तकाष्ठं वा कुर्याद्धोममथापि वा ।
रविमण्डलमालोक्य प्रतिमामथ वा पुनः ॥ ३ ॥
मूलमन्त्रं सकृज्जप्त्वा पुष्पं साक्षतमुत्क्षिपेत् ।
अन्ते व्याधिभिरत्युग्रैः क्लान्तैश्चैवोपवासकैः ॥ ४ ॥

न दोषोऽस्त्विति सम्प्रार्थ्य पुनः पूर्ववदाचरेत् ।
(इति सम्प्रार्थ्य जपहोमादिकं कुर्यात् ॥)
यस्तु रोगवशान्मोहवशाद् दोष उपागतः ।
जपेन क्षालनीयः स्याद् दानेन हवनेन च ॥ ५ ॥
ध्यानेनापि मुनिश्रेष्ठ ! ज्ञात्वा कर्म बलाबलम् ।

(इति नारद पञ्चरात्रवचनात् ।) तथा :—

अथ सूतकिनः पूजां वदाम्यागमबोधिताम् ।
स्नात्वा नित्यं च निर्वर्त्य मानस्या क्रियया तु वै ॥ १ ॥
बाह्यपूजाक्रमेणैव स्थानयोगेन पूजयेत् ।
यदि कामी न चेत्कामी नित्यं पूर्ववदाचरेत् ॥ २ ॥
त्रासिनो वक्ष्यते पूजा यथैवागमबोधिता ।
लब्धं वा यदि वा लब्धमर्घपात्रादिसाधनम् ॥ ३ ॥
पूजोदकेन कर्तव्या तच्चेत्तोयं न विद्यते ।
तदा सम्पूजयेद्देवं भावना-कुसुमादिभिः ॥ ४ ॥
दौर्बोधिकीं प्रवक्ष्यामि पूजामागमबोधिताम् ।
मूर्खस्त्रीबालवृद्धाश्च दुर्बोधा इति भाविताः ॥ ५ ॥
रत्नमण्डपधर्मादिचतुष्कमुरगाम्बुजम् ।
मूलमूर्तिः षडङ्गानि तेषां पूजा विधीयते ॥ ६ ॥
अन्येषामपि सर्वेषां प्रोक्ता सङ्क्षेपकर्मणि ।
सर्वेषामेव वस्तूनां अलाभे भावनैव हि ॥ ७ ॥
निर्मलेनोदकेनाऽथ पूर्णतेत्याह नारदः ।

(९)

पूजायास्त्रैधा लक्षणम्

तथा पुनस्त्रिधा पूजा उत्तमाधममध्यमा ॥ ८ ॥
पत्रपुष्पाम्बुनिष्पाद्या पूजा चाधमसंज्ञिका ।
विदिताखिलवेदार्थैर्ब्रह्मविद्भिरकल्मषैः ॥ ९ ॥
क्रियमाणा तु या पूजा सात्त्विकी सा विमुक्तिदा ।
राजर्षिभिस्तपोनिष्ठैर्भगवत्तत्त्ववेदिभिः ॥ १० ॥
या पूजा क्रियते सम्यग् राजसी सा सुखप्रदा ।
स्त्रीबालवृद्धमूर्खाद्यैर्भक्तैरक्षुद्रमानसैः ॥ ११ ॥
या पूजा क्रियते नित्यं तामसी सा प्रकीर्तिता । इति ।

(१०)

आराधने समर्थासमर्थविधिः

उत्तरतन्त्रे :—

आराधनासमर्थश्चेद् दद्यादर्चनसाधनम् ।
यो दातुं नैव शक्नोति कुर्यादर्चनदर्शनम् ॥ १ ॥
नैकं तु यस्य विद्येत सोऽधो यात्येव नान्यथा ।
यस्तु भक्त्या प्रयत्नेन स्वयं सम्पाद्य चाखिलम् ॥ २ ॥
साधनं चार्चयेद् विद्वान् स समग्रफलं लभेत् ॥ इति ॥

कुम्भसम्भव :— स्वस्थः समर्थः कुर्वीत चोत्तमैरेव साधनैः ।
मध्यमो मध्यमेनैव न्यूनैर्न्यूनस्तपोधने ॥
आपन्नश्चेत्समर्थोऽपि न्यूनैरेव समाचरेत् ।
पूजाकर्मविशेषेण देशकालानुसारतः ॥ इति ॥

तथा मेरुतन्त्रे :— अथ सूतकिनो नित्यं वैदिकन्तु स्मृतीरितम् ।
कृत्वा तान्त्रिकपूजादि मनसैव समाचरेत् ॥

(११)

समर्थस्य विस्ताराकरणे दोषः

भविष्यपुराणे :— विभवे सति यो मोहान्न कुर्याद्विधिविस्तरम् ।
न तत्फलमवाप्नोति प्रलोभाक्रान्तमानसः ॥

(१२)

कामनाभेदेन पूजास्थानम्

शिवयामले :—

शिवपितृवनमेकलिङ्गवृक्षोद्भवजलसङ्गमचत्वरे सुदेशे ।
अपि शिवगदितं विमुच्य शस्तं निजगृह एव तु पूजनं मुमुक्षोः ॥
अरण्ये स्वल्पकामानां सिद्ध्यर्थे पूजनं हितम् ।
निष्कामानां मुमुक्षूणां गृहे शस्तं सदार्चनम् ॥

(१३)

देशकालविशेषे मानसपूजाविधानम्

प्रवासे पथि दुर्गे वा स्थानाप्राप्तौ जलेऽपि ।
कारागारनिबद्धो वा प्रायोवेशगतोऽपि वा ॥ १ ॥
मनोभये समुत्पन्ने सिंहव्याघ्रसमाकुले ।
परचक्रागमे चैव कुर्यान्मानसपूजनम् ॥ २ ॥
मनसा हृदयस्यान्तर्ध्यात्वा योगाख्यपीठकम् ।
तत्रैव पृथिवीमध्ये पूजां तत्र समाचरेत् ॥ ३ ॥

मैत्रप्रसादनं स्नानं दन्तधावनकर्म वै ।
अन्यच्च सर्वं मनसा ध्यात्वा कुर्याच्च पूजनम् ॥ ४ ॥

यथा पुष्पादिभिः पूजा बहिर्देशे विधीयते ।
तथा हृद्यपि कर्त्तव्याः सर्वाश्च प्रतिपत्तयः ॥ ५ ॥
(प्रायोवेशगतो – गृहीतानशनव्रतः) ।

अन्यच्च सर्वमिति मैत्रप्रसादनं दन्तधावनव्यतिरिक्तमित्यर्थः । मैत्रादीनां मानसाम्भवात् । 'यः शोचनिरतो विप्रः स वै मैत्र उदाहृतः' ।

(१४)

दिने प्रतियामं कर्तव्यताविभागः

ब्राह्मान्मुहूर्तादारम्य प्रागंशं विप्र वासरात् ।
जपध्यानार्चनास्तोत्रैः कायवाङ्मनसा युतैः ॥ १ ॥

अभिगच्छेज्जगद्योनिं तच्चाभिगमनं स्मृतम् ।
ततः पुष्पफलादीनामुत्थायार्चनमाचरेत् ॥ २ ॥

भगवद्यागनिष्पत्तिकरणं प्रहरं परम् ।
ततोऽप्यङ्गेन यागेन पूजयेत् परमेश्वरम् ॥ ३ ॥

साधकः प्रहरं विप्र इज्याकलो हि स स्मृतः ।
श्रवणं चिन्तनं व्याख्या ततः पाठसमन्विता ॥ ४ ॥

स्वाध्यायकालं तद्विद्धि कालं तं मुनिसत्तम ।
दिनावसाने सम्प्राप्ते पूजां कृत्वा समभ्यसेत् ॥ ५ ॥
योगी निशावसानेऽथ विश्रामैरन्तरैः कृतम् ।

(१५)

मन्त्रस्नानम्

जलस्नानाशक्तानां मन्त्रस्नानविधिमाह—नारदपञ्चरात्रे—

अथ मान्त्रं शुभं श्रृणु ।
तोयाभावे तु यत्कार्यं दुर्गे काले तु शीतले ॥
गमने क्षिप्रसिद्ध्यर्थं गुरुकार्येष्वतन्द्रितः ।
प्राप्तापद्यथ विपेन्द्र निशाभागे तथा मुने ॥
प्रक्षाल्य पादावाचम्य प्रोद्धृतेन तु वारिणा ।
स्थानं दश दिशः प्राग्वत् संशोध्योपविशेत्ततः ॥
अस्त्रं हस्ततले न्यस्य क्रमान्न्यासांस्ततस्तु वै ।
मूलमन्त्रादितः कुर्यात् सर्वमन्त्रगणेन वै ॥
केवलादुदकस्नानात् संस्कारपरिवर्जितात् ।
प्रभासादिषु तीर्थेषु यत्फलं स्नातकस्य तु ॥
ज्ञेयं दशगुणं स्नानान्मन्त्रस्नानस्य नारद ।

(ध्यानस्नानम्)

ध्यानस्नानमथो वक्ष्ये द्वाभ्यामपि परं च यत् ॥
खस्थितं पुण्डरीकाक्षं मन्त्रमूर्तिप्रभुं स्मरेत् ।
तत्पादोदकजां धारां निपतन्तीं स्वमूर्धनि ॥
चिन्तयेत् सूक्ष्मरन्ध्रेण प्रविशन्तीं स्वकां तनुम् ।

तया संक्षालयेत् सर्वमन्तर्देहगतं मलम् ॥
तत्क्षणाद्विरजा मन्त्री जायते स्फुटिकोपमः ।
इदं स्नानं वरं मन्त्रात् स्नानं शतगुणं स्मृतम् ॥
तस्मादेकतमं स्नानं कार्यं श्रद्धापरेण तु ।
स्नानपूर्वाः क्रिया सर्वा यतः सभ्यास्तु नारद ॥
(पुण्डरीकाक्षमित्युपलक्षणम्)

। दीक्षां विनानर्हत्वम् ।

विनोपनयनं यद्वत् द्विजानां सर्वकार्मसु ।
न योग्यता तथात्रास्ति विना दीक्षां भृगुद्वह ॥
अप्राप्य सद्गुरोर्दीक्षामज्ञात्वा गुरुपद्धतिम् ।
स्वबुद्धया तु कृतं कर्म विधिना च समन्वितम् ॥
तथापि साधकं शीघ्रं नाशयत्येव सर्वदा ।
सेवितारं यथा हन्ति चापक्वन्तु रसायनम् ॥
इति त्रिपुरारहस्ये—

विना दीक्षां न मुक्तिः स्यादित्याज्ञा पारमेश्वरी ।
मुक्ति सौधस्य सोपानं प्रथमं दीक्षणं भवेत् ॥
दीयते शिव सायुज्यं क्षीयते पाशवन्धनम् ।
अतो दीक्षेति कथिता लभ्यते पुण्यसंचयैः ॥
इति परमानन्द तन्त्रे—

(१६)

। प्राणायाम-मातृकादिन्यासहीना मन्त्राः ।

प्राणायामैर्विना यद्यत्कृतं कर्म निरर्थकम् ।
अतो यत्नेन कर्तव्याः प्राणायामः शुभार्थिभिः ।१।

इति दक्षिणामूर्तिकल्पे

जपार्थं सर्वमन्त्राणां विन्यासेन लिपेर्विना ।
कृते तन्निष्फलं विन्द्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत् ।२।

इति कपिलपञ्चरात्रे—

ऋषिच्छन्दोदेवतानां विन्यासेन विना यदा ।
जप्यते साधितोऽप्येष तत्र तुच्छफलं भवेत् ।३।

इति गौतमीये—

ध्यानं जपार्थना होमः सिद्धमन्त्रकृता कृता अपि ।
अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलं त्वमी ।४।
विधिदृष्टं तु यत्कर्म करोत्यविधिना नरः ।
फलं न किञ्चिदाप्नोति क्लेशमात्रं हि तस्य तत् ।५।

इति उत्तरतन्त्रे—

न्याससहितामन्त्राः

वैशम्पायनसंहितायाम्—

आदावृष्यादि विन्यस्य कराङ्गन्यसनं ततः ।
ततो मन्त्राक्षरन्यासः पदन्यासस्ततः परम् ।।४।।
जपतर्पण-होमार्चाः सिद्धमन्त्रकृता अपि ।
अङ्गन्यासादिभिर्हीना न दास्यन्ति फलान्यमी ।।

न्यासानशेषान् न्यासतः स्वदेहे त्रैलोक्यमेतद्वशमेति पुंसः।
पापानि सद्यः प्रशमं प्रयान्ति त्रस्यन्ति रक्षांसि सपन्नगानि॥

श्रीविद्यार्णवे—६, श्वासे

आगमोक्तेन मार्गेण न्यासान् नित्यं करोति यः।
देवताभावमाप्नोति मन्त्रसिद्धिः प्रजायते॥
यो न्यासकवचच्छन्नो मन्त्रं जपति तं प्रिये।
दृष्ट्वा विघ्नाः पलायन्ते सिंहं दृष्ट्वा यथा गजः॥
नाध्यातो नार्चितो मन्त्रः सुसिद्धोऽपि प्रसिद्धयति।
नाजप्तः सिद्धिदानेच्छुर्नाहुतः फलदो भवेत्॥
पूजा ध्यानं जपं होमं तस्मात् कर्मचतुष्टयम्।
प्रत्यहं साधकः कुर्यात् स्वयञ्चेत् सिद्धिमिच्छति।
जपः श्रान्तः शिवं ध्यायेद् ध्यानश्रान्तः पुनर्जपेत्।
जपध्यानसमायुक्तः शीघ्रं सिद्धयति मन्त्रवित्॥
अकृत्वा न्यासजालं यो मूढात्मा कुरुते जपम्।
विघ्नैः स बाध्यते नूनं व्याघ्रैर्मृगशिशुर्यथा।
न्यासानां प्रचुरत्वे हि फलानामपि भूरिता।
उक्तन्यासो नहि त्याज्यो ह्यधिकन्तु समाचरेत्॥

इति न्यास विधानम्

(१७)

। त्रैपुर-सिद्धान्तः ।

भूतानि, तन्मात्राणि, ज्ञानकर्मेन्द्रियाणि, अहङ्कारबुद्धिमनांसि, गुणसाम्यरूपा प्रकृतिः, शरीरकञ्चुकितशिवो जीवः, (परमशिवगताः स्वतन्त्रता-नित्यता-नित्यतृप्ततासर्वकर्तृकता-सर्वज्ञता धर्मा एव संकुचितास्सन्तो जीवे) नियति-काल-राग-कलाविद्या-शब्दवाच्या भवन्ति । माया (जगत्परमशिवयोर्भेदबुद्धिः) शुद्धविद्या (तयोरभेदबुद्धिः) जगदिदन्तया पश्यन् परमशिव ईश्वरः, तदहन्तया पश्यन् सदाशिवः, शक्ति परमशिवस्य जगत्सिसृक्षा, तद्वान् शिवः, षट्त्रिंशत्तत्त्वानि, स्वविमर्शः पुरुषार्थः, वर्णसमुदायरूपाः मन्त्रा नित्याः, (मूलविद्यासमसत्ताका व्यावहारिकनित्याः) मन्त्राणामचिन्त्यशक्तित्वेन स्वगुरुपरम्परोपदेशैरगम्यधर्मरूपेण सम्प्रदायेन गुरुशास्त्रदेवतासु विश्वासेन सर्वासिद्धयः, आचार्योक्तरीत्या गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभावयन् मनःपवनयोरेकयत्ननिरोद्धव्यत्वज्ञानाच्च प्रत्यगात्मवेदनम्, भावनादार्ढ्यान्निग्रहानुग्रहसिद्धिः । दर्शनान्तरानिन्दनेन स्वोपास्यनिष्ठया मन्त्रार्थानुसन्धानेन कामक्रोधनिन्दापरिवर्जनेन च सिद्धयो भवन्ति ।

वृत्तिभिर्वेद्यं सर्वं हविः, इन्द्रियाणि स्रुचः, संकोचेन स्वात्मस्थितास्सर्वज्ञत्वसर्वकर्तृत्वादयः परमशिवशक्तय एव ज्वालाः, स्वात्मशिव एव पावकः, स्वयमेव होता, निर्गुणब्रह्मापरोक्ष्यं फलम्, स्वपारमार्थिकस्वरूपलाभान्न परमिति सारः । इति श्रीविद्यारत्नाकरे ।

(१८)

साधक धर्माः

[1]श्लेष्माअतक-करञ्ज अक्ष-निम्ब-अश्वत्थ-कदम्ब-विल्व-वटोदुम्बर-तिन्तिणीकुलवृक्षच्छेदनवर्जनम्, स्त्रीवृन्दक्षीरकलशसिद्धलिङ्गीविविध-क्रीडाकुलकुमारी-कुल-सहकाराशोकतरु-पितृवनमत्तवाराङ्गना-रक्तांशुका—मत्तेभान् दृष्ट्वा वन्देत्। कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दशी दर्श-पूर्णमास-संक्रमण-पर्वसु नैमित्तिकी वरिवस्या कर्तव्या। गुरुपरमगुर्वादीन् आदरेण पश्येत्; शरीरस्यार्थस्यासूनाञ्च गुर्वर्थं धारणम्, तद्वचसि युक्तायुक्ताविचारम्, सर्वत्र शास्त्रव्यवस्थापालनम्, परनिन्दात्मस्तुत्योश्च वर्जनम्, सर्वप्रयत्नेन परदेवताराधनद्वारा ब्रह्मभावाभिलाषः, इत्थं विदित्वाऽनुतिष्ठन् कृतकृत्यो जीवन्मुक्तो भवेत्।

श्रीविद्योपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रतिसम्भाषमाणो न गच्छेत्। एते क्रत्वर्थनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः। अनिशमात्मनं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता। शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नान्तरम् स एव जीवन्मुक्तः सुखी विहरेदिति ॥

इति श्रीविद्यारत्नाकरे,

---

१. श्लेष्मातककरञ्जाक्षनिम्बाश्वत्थकदम्बकाः।
विल्वो बटोदम्वरो च तिन्त्रिणीच दशस्मृता ॥

(१९)

श्रीललिताचतुष्षष्ट्युपचारमानस-पूजनम्

हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते ।
चतुष्षष्ट्युपचारांस्ते भक्त्या मातः समर्पये ॥ १ ॥
कामेशोत्सङ्गनिलये पाद्यं गृह्णीष्व सादरम् ।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये ॥ २ ॥
स्नानशालां प्रविश्याऽथ तत्रत्यमणिपीठके ।
उपविश्य सुखेन त्वं देहोद्वर्त्तनमाचर ॥ ३ ॥
उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः ।
अभिषिञ्चामि पश्चात् त्वां सौवर्णकलशोदकैः ॥ ४ ॥
धौतवस्त्रप्रोञ्छनं चारक्तक्षौमाम्बरं तथा ।
कुचोत्तरीयमरुणमर्पयामि महेश्वरि ॥ ५ ॥
ततः प्रविश्य चालेपमण्डपं श्रीमहेश्वरि ।
उपविश्य च सौवर्ण-पीठे गन्धान् विलेपय ॥ ६ ॥
कालागरुजधूपैश्च धूपये केशपाशकम् ।
अर्पयामि च मल्यादिसर्वर्तुकुसुमस्रजः ॥ ७ ॥
भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके ।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दयया स्थापयाऽम्बिके ॥ ८ ॥
शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम् ।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलङ्कुरु दयानिधे ॥ ९ ॥
भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं तथा ।
वालीयुगलमप्यम्ब भक्त्या ते विनिवेदये ॥ १० ॥

मणिकुण्डलमप्यम्ब नासाभरणमेव च ।
ताटङ्कयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये ॥ ११ ॥
आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपदकानि च ।
महापदकमुक्तावल्येकावल्यादिभूषणम् ॥ १२ ॥
छन्नवीरं गृहाणाऽम्ब केयूरयुगलं तथा ।
वलयावलिमङ्गुल्याभरणं ललिताम्बिके ॥ १३ ॥
ओड्याणमथ कट्यां ते कटिसूत्रञ्च सुन्दरि ।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम् ॥ १४ ॥
अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चाङ्गुलीयकम् ।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथाङ्कुशम् ॥ १५ ॥
अन्यस्मिन्वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम् ।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि ॥ १६ ॥
अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे ।
आरोहावृतिदेवीभिश्चक्रं परशिवे मुदा ॥ १७ ॥
समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि ।
तत्र कामेशवामाङ्कपर्यङ्कोपनिवेशिनीम् ॥ १८ ॥
अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे ।
शुद्धेन गाङ्गतोयेन पुनराचमनं कुरु ॥ १९ ॥
कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय ।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपङ्कजाम् ॥ २० ॥

भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् कदा।
मङ्गलारार्तिकं छत्रं चामरं दर्पणं तथा ॥ २१ ॥
तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्च तेऽर्पये।
श्रीकामेश्वरि ! तप्तहाटककृतैः स्थालीसहस्रैर्भृतं,
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम्।
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रार्पितं,
माषापूपकपूरिकादिसहितं नैवेद्यमम्बार्पये ॥ २२ ॥
साग्रविंशतिपद्योक्त चतुष्षष्ट्युपचारतः।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु ॥ २३ ॥

इति महायागक्रमोक्तं मानसपूजनम्।

श्रीषोडशानन्दनाथ (करपात्र स्वामि—)
सङ्कलिता श्रीविद्या वरिवस्या समाप्ता।
श्रीकामेश्वराङ्कनिलया श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यतु।

卐

॥ श्रीः ॥

कुण्डली-जागरणम्

जागो जगदाधार मैया। जागो जगदाधार।

साधो मन के तार मैया। साधो मन के तार॥

जप तप जोग कछु नहीं जानूँ। सुषुम्ना सूक्ष्म विचार॥

कुल कुण्डलिनो कुण्डली शिवके। सार्धं त्रिवलयाकार॥

विद्युल्लेखा विसतन्तु सम। सुप्त भुजङ्गी प्रकार॥

दिव्य त्रिकोणे कोटि तड़ित् शशि। आभा भानु हजार॥

मूल मही बं शं षं सं मां। गणपति मूलाधार॥

बं भं मं यं रं लं ब्रह्मा। स्वाधिष्ठान विचार॥

रं मणिपूरे विष्णु माया। अग्नि स्वरूपाकार॥

डं ढं णं तं थं दं धं नं। पं फं दल विस्तार॥

कं खं गं घं ङं चं छं जं। झं ञं टं ठं स्फार॥

द्वादस दल शिव शक्ति विराजे। अनहत नाद अपार॥

चित्त गगन में चिति शक्ति का। स्पन्दन बारम्बार॥

हंस सोऽहं मन्त्र स्वरूपो। विद्या मय झङ्कार॥

अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं। षोडश पत्राकार॥

ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः। व्योम विशुद्धि विचार॥

हं क्षं हंसोः सकलं तूँ साधे। विविध सिद्धि के द्वार॥

मन्त्र यन्त्र सत्र तन्त्र तुम्ही हो। आगम निगम विचार ॥
अर्धमात्र रहो अन्तर आत्मा। सकल तत्त्व संसार ॥
शुभ ज्योतिर्मय हंस युगल रत। पङ्कज पत्र हजार ॥
गुप्ताक्षर मञ्जुल मणिमण्डप। श्रीगुरु श्वेत शृगार ॥
परमात्मा गुरुनाथ परम शिव। अभय वरद सन्धार ॥
रक्त शुक्ल प्रभासित सुषमा। महिमा अपरम्पार ॥
शिव वामाङ्के शक्ति विराजे। रक्त बिन्दु बौछार ॥
शिव शक्ति पद पङ्कज बरषे। स्नेह सुधा की धार ॥
अभिषेके षट् चक्र विकासे। शिवमय जय जय कार ॥
अन्तर् मुख आनन्द अश्रुभर। पुलकित करुण पुकार ॥
दत्तात्रेया नन्दनाथ का। नमो नमो शत बार ॥
जागो जगदाधार मैया। साधो मन के तार ॥

वर्णानि						मासाः		मासाः		मासाः		मासाः		मासाः	
अ ङ ञ ण न म श क्ष क च ट त प य ष ख छ ठ थ फ र स ग ज ड द ब ल ह घ झ ढ ध भ व ळ						आ ॠ ऐ अ ऊ ए अः उ ऌ अं ई ॡ औ इ ऋ ओ		इ ऋ [illegible] आ ॠ [illegible] अ ऊ ए [illegible] उ ॡ अं इ ॡ औ		ई ऌ औ इ ॠ ओ आ ॠ ऐ अ ऊ ए अः उ ॡ अं		उ ऌ अं ई ॡ औ इ ऋ ओ आ ॠ ऐ अ ऊ ए अः		अ ऊ ए अः उ ऌ अं ई ऌ औ इ ऋ ओ आ ॠ ऐ	
संख्या	तत्त्व दिनम्	नक्षत्रम्	योगः	करणम्	वासरः	दिन नित्याः पक्षः	घटिकोदयः	नित्याः पक्षः	घटिकोदयः	नित्याः पक्षः	घटिकोदयः	नित्याः पक्षः	घटिकोदयः	नित्याः पक्षः	घटिकोदयः
१	अं शिव	ऌ	अ	ऋ	अं प्रकाशा	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती शुक्ल	ए	ओं सर्वमङ्गला शुक्ल	च	ऐं विजया कृष्ण	त	ऊं महावज्रेश्वरी कृष्ण	य
२	कं शक्ति	ॡ	आ	ॠ	लृं विमर्शा	आं भगमालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	औं ज्वालामालिनी	त	एं नीलपताका	य	उं वह्निवासिनी	अ
३	खं सदाशिव	ए	इ	ऌ	कं आनन्दा	इं नित्यक्लिन्ना	च	लृं कुलसुन्दरी	त	अं चित्रा	य	लॄं नित्या	अ	ईं भेरुण्डा	ए
४	गं ईश्वर	ऐ	ई	ॡ	चं ज्ञाना	ईं भेरुण्डा	त	लॄं नित्या	य	अं चित्रा कृष्ण	अ	लृं कुलसुन्दरी	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च
५	घं शुद्धविद्या	ओ	उ	ए	टं सत्या	उं वह्निवासिनी	य	एं नीलपताका	अ	औं ज्वालामालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	आं भगमालिनी	त
६	ङं माया	औ	ऊ	ऐ	तं पूर्णा	ऊं महावज्रेश्वरी	अ	ऐं विजया	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऋं शिवदूती	त	अं कामेश्वरी	य
७	चं कला	अं	ऋ	ओ	पं स्वभावा	ऋं शिवदूती	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऐं विजया	त	ऊं महावज्रेश्वरी	य	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ
८	छं अविद्या	अः	ॠ	औ	यं प्रतिभा	ॠं त्वरिता	च	औं ज्वालामालिनी	त	एं नीलपताका	य	उं वह्निवासिनी	अ	आं भगमालिनी	ए
९	जं राग	क	ऌ	अं	पं सुभगा	लृं कुलसुन्दरी	त	अं चित्रा	य	लॄं नित्या	अ	ईं भेरुण्डा	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च
१०	झं काल	ख	ॡ	अः	अं प्रकाशा	लॄं नृत्या	य	अं चित्रा कृष्ण	अ	लृं कुलसुन्दरी	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	ईं भेरुण्डा	त
११	ञं नियति	ग	ए	क	लृं विमर्शा	एं नीलपताका	अ	औं ज्वालामालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	आं भगमालिनी	त	उं वह्निवासिनी	य
१२	टं पुरुष	घ	ऐ	ख	कं आनन्दा	ऐं विजया	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऋं शिवदूती	त	अं कामेश्वरी	य	ऊं महावज्रेश्वरी	अ
१३	ठं प्रकृति	ङ	ओ	ऋ	चं ज्ञाना	ओं सर्वमङ्गला	च	ऐं विजया	त	ऊं महावज्रेश्वरी	य	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती	ए
१४	डं अहंकार	च	औ	ॠ	टं सत्या	औं ज्वालामालिनी	त	एं नीलपताका	य	उं वह्निवासिनी	अ	आं भगमालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च
१५	ढं बुद्धि	छ	अं	ऌ	तं पूर्णा	अं चित्रा	य	लॄं नित्या	अ	ईं भेरुण्डा	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	लृं कुलसुन्दरी	त
१६	णं मनस्	ज	अः	ॡ	पं स्वभावा	अं चित्रा कृष्ण	अ	लृं कुलसुन्दरी	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	ईं भेरुण्डा	त	लॄं नृत्या	य
१७	तं श्रोत्र	झ	क	ए	यं प्रतिभा	औं ज्वालामालिनी	ए	ॠं त्वरित	च	आं भगमालिनी	त	उं वह्निवासिनी	य	एं नीलपताका	अ
१८	थं त्वक्	ञ	ख	ऐ	पं सुभगा	ओं सर्वमङ्गला	च	ऋं शिवदूती	त	अं कामेश्वरी	य	ऊं महावज्रेश्वरी	अ	ऐं विजया	ए
१९	दं चक्षु	ट	घ	ओ	अं प्रकाशा	ऐं विजया	त	ऊं महावज्रेश्वरी	य	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती	ए	ओं सर्वमङ्गला	च
२०	धं जिह्वा	ठ	ग	औ	लृं विमर्शा	एं नीलपताका	य	उं वह्निवासिनी	अ	आं भगमालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	औं ज्वालामालिनी	त
२१	नं घ्राण	ड	ङ	अं	कं आनन्दा	लॄं नित्या	अ	ईं भेरुण्डा	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	लृं कुलसुन्दरी	त	अं चित्रा	य
२२	पं वाक्	ढ	च	अः	चं ज्ञाना	लृं कुलसुन्दरी	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	ईं भेरुण्डा	त	लॄं नित्या	य	अं चित्रा कृष्ण	अ
२३	फं पाणि	ण	छ	क	टं सत्या	ॠं त्वरिता	च	आं भगमालिनी	त	उं वह्निवासिनी	य	एं नीलपताका	अ	औं ज्वालामालिनी	ए
२४	बं पाद	त	ज	ख	तं पूर्णा	ऋं शिवदूती	त	अं कामेश्वरी	य	ऊं महावज्रेश्वरी	अ	ऐं विजया	ए	ओं सर्वमङ्गला	च
२५	भं पायु	थ	झ	ऋ	पं स्वभावा	ऊं महावज्रेश्वरी	य	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऐं विजया	त
२६	मं उपस्थ	द	ञ	ॠ	यं प्रतिभा	उं वह्निवासिनी	अ	आं भगमालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	औं ज्वालामालिनी	त	एं नीलपताका	य
२७	यं शब्द	ध	ट	ऌ	पं सुभगा	ईं भेरुण्डा	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च	लृं कुलसुन्दरी	त	अं चित्रा	य	लॄं नित्या	अ
२८	रं स्पर्श	न	ठ	ॡ	अं प्रकाशा	इं नित्यक्लिन्ना	च	ईं भेरुण्डा	त	लॄं नित्या	य	अं चित्रा कृष्ण	अ	लृं कुलसुन्दरी	ए
२९	लं रूप	प	ड	ए	लृं विमर्शा	आं भगमालिनी	त	उं वह्निवासिनी	य	एं नीलपताका	अ	औं ज्वालामालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च
३०	वं रस	फ	ढ	ऐ	कं आनन्दा	अं कामेश्वरी	य	ऊं महावज्रेश्वरी	अ	ऐं विजया	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऋं शिवदूती	त
३१	शं गन्ध	ब	ण	ओ	चं ज्ञाना	अं कामेश्वरी शुक्ल	अ	ऋं शिवदूती	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऐं विजया	त	ऊं महावज्रेश्वरी	य
३२	षं आकाश	भ	त	औ	टं सत्या	आं भगमालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	औं ज्वालामालिनी	त	एं नीलपताका	य	उं वह्निवासिनी	अ
३३	सं वायु	म	थ	अं	तं पूर्णा	इं नित्यक्लिन्ना	च	लृं कुलसुन्दरी	त	अं चित्रा	य	लॄं नित्या	अ	ईं भेरुण्डा	ए
३४	हं वह्नि	य	द	अः	पं स्वभावा	ईं भेरुण्डा	त	लॄं नित्या	य	अं चित्रा कृष्ण	अ	लृं कुलसुन्दरी	ए	इं नित्यक्लिन्ना	च
३५	ळं सलिल	र	ध	क	यं प्रतिभा	उं वह्निवासिनी	य	एं नीलपताका	अ	औं ज्वालामालिनी	ए	ॠं त्वरिता	च	आं भगमालिनी	त
३६	क्षं भूमि	ल	त	ख	पं सुभगा	ऊं महावज्रेश्वरी	अ	ऐं विजया	ए	ओं सर्वमङ्गला	च	ऋं शिवदूती	त	अं कामेश्वरी	य

ऋतवः

अ आ	मासयोः	आं श्रीकरी
इ ई	,,	इं मोहिनी
उ ऊ	,,	ऊँ कामिनी
ऋ ॠ	,,	ॠं विमला
ऌ ॡ	,,	लृं हारिणी
ए ऐ	,,	ऐं भ्रामिणी
ओ औ	,,	औं गौरी
अं अः	,,	अः लक्ष्मीकुमारिका

मासारम्भवासराः

मासारम्भ	र०	सो०	मं०	बुध	बृ०	शुक्र	शनि
र०	अ [illegible]	आ ऌ अः	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ
सो०	ऋ [illegible]	अ ॠ अं	आ ऌ अः	इ ऌ	ऌ ए	उ ऐ	ऊ ओ
मं०	ऊ ओ	ॠ औ	आ ऌ अः	आ ॡ अ	इ ॡ	ई ऐ	उ ऐ
बु०	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ	ॠ अं	आ ऌ अः	इ ऌ	ई ए
बृ०	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ	अ ॠ अं	आ ऌ अः	इ ॡ
शु०	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	ऊ ओ	ऋ औ	अ ऌ अं	आ ऌ अः
श०	आ ऌ अः	इ ॡ	ई ए	उ ऐ	उ ऐ	ऊ ओ	अ ॠ अं

वर्षारम्भवासराः

वासराः	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
वर्णानि	ग	अ	घ	क	ङ	ख	च
	ञ	छ	ट	ज	ठ	झ	ड
	थ	ढ	द	ण	ध	त	न
	भ	प	म	फ	य	ब	र
	ष	ळक्ष	स	व	ह	श	ल

पर्वाणि

१ पुष्पिणी — वर्ष--मासाक्षरयोर्योगात्
२ मोहिनी — वर्ष–दिनाक्षरयोर्योगात्
३ जयिनी — वर्ष–उदययोर्योगात्
४ कुमारी — मास–दिनयोर्योगात्
५ विमला — मासोदययोर्योगात्
६ श्रीकरी — दिनोदययोर्योगात्
७ सूर्यग्रहणं — वर्ष–मास-दिन-वारोदययोगात्
८ चन्द्रग्रहणं — मास-वार-नित्योदययोगात्
९ श्रीरात्रिः — वार-दिन-नित्योदययोगात्
१० नित्यानेलनभ् — तिथि-नित्या-दिननित्ययोर्योगात्
११ वारोदयः — वारोदययोगात्

रवौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	२	३	४	५	६	७
८	९	१०	११	१२	१३	१४
१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
३६						

सोमे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	१	२	३	४	५	६
७	८	९	१०	११	१२	१३
१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
३५	३६					

भौमे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
३४	३५	३६				

बुधे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं०	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	१	२	३	४
५	६	७	८	९	१०	११
१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
३३	३४	३५	३६			

गुरौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	१	२	३
४	५	६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
३२	३३	३४	३५	३६	०	०

शुक्रे मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं०	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	१	२
३	४	५	६	७	८	९
१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
३१	३२	३३	३४	३५	३६	

शनौ मासारम्भश्चेत्

र.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
०	०	०	०	०	०	१
२	३	४	५	६	७	८
९	१०	११	१२	१३	१४	१५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

मास नामानि

अं अमृता
आं मानदा
इं पूषा
ईं तुष्टि
उं पुष्टि
ऊं रति
ऋं धृति
ॠं शशिनी
लृं चन्द्रिका
लॄं कान्ति
एं ज्योत्स्ना
ऐं श्री
ओं प्रीति
औं अङ्गदा
अं पूर्णा
अः पूर्णामृता
प्रतिवर्षं १६ मासा

शङ्करसम्प्रदाय

श्रीविद्या साधना के अन्तर्गत श्रीयन्त्र अर्चन की पद्धतियां वि[illegible] सम्प्रदायवालों ने प्रकाशित की है। 'श्रीविद्यावरिवस्या' शङ्कर सम्प्रदायानुस[illegible] दक्षिण मार्ग दिव्यभाव पर आधारित है। इसमें आगम क्रियाकलापों में निगम सिद्धान्तों का भी सम्मिश्रण है। अनुकल्प से तान्त्रिक विधि सम्पन्न हो जाती है और वेद विरुद्ध भी नहीं। इसमें अनवच्छिन्न सम्प्रदाय 'गुरुपरम्परा' का ही विशेष महत्व है। 'सम्प्रदायो ही नान्योऽस्तिलोके श्रीशङ्कराद्वहिः' के अनुसार शङ्कर सम्प्रदाय ही अनवच्छिन्न रूप से विद्यमान है, आगम सिद्धान्तानुसार साधना की सफलता सम्प्रदायाधीन है। अतः श्रीस्वामीजी महाराज ने आचार्य शङ्कर समर्थित त्रैपुरसिद्धान्त के अनुसार ही पद्धतियों का प्रणयन किया। जिसमें समयाचार का प्राधान्य है।

॥ श्रीः ॥

श्री स्वामी करपात्रीजी महाराज

श्री स्वामीजी महाराज ने वेदान्त, भक्ति एवं अष्टाङ्गयोग आदि साधन पद्धतियों द्वारा परतत्व का साक्षात्कार कर लेने पर भी केवल लोककल्याण की भावना से श्रीविद्योपासना पद्धति का अवलम्बन किया एवं पूर्ण विधि विधान से श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती राजराजेश्वरी ललितामहात्रिपुरसुन्दरी का दिव्यभाव से उपासना क्रम अनुष्ठित करते हुए उत्तर भारत में विलुप्तप्रायः श्रीविद्यासम्प्रदाय को अपने तपोबल से पुनः प्रतिष्ठापित किया। और श्रीविद्यारत्नाकर श्रीविद्यावरिवस्या जैसे ग्रन्थरत्नों द्वारा श्रीविद्यासाहित्यनिधि को समृद्ध एवं अलङ्कृत किया। श्रीस्वामीजी द्वारा रचित श्रीविद्यामन्त्रभाष्य का अवलोकन करने पर उनका तन्त्रशास्त्र का गहन अध्ययन, प्रौढ़पाण्डित्य; तत्त्वज्ञता तथा रहस्यज्ञता सुस्पष्ट परिलक्षित होती है।

श्रीविद्यासाधनापीठ के मुख्य उद्देश्य

- श्रीविद्या से सम्बन्धित दुर्लभ साहित्य का प्रकाशन।
- श्रीविद्या साधकों का पथ प्रदर्शन।
- मन्त्र चैतन्य तथा कुण्डलिनी जागरण का क्रियात्मक बोध।
- श्रीयन्त्रार्चन पद्धति का प्रशिक्षण।
- तन्त्रशास्त्र विषयक अनुसन्धान।

(विशेष) दीक्षित अधिकारी साधकों का निःस्वार्थ
रूप में प्रशिक्षणादि होता है।
पीठ द्वारा किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता है।

श्रीविद्यासाधनापीठ

श्रीकाशी मुमुक्षु भवन सभा
बी. १/८६, अस्सी, वाराणसी